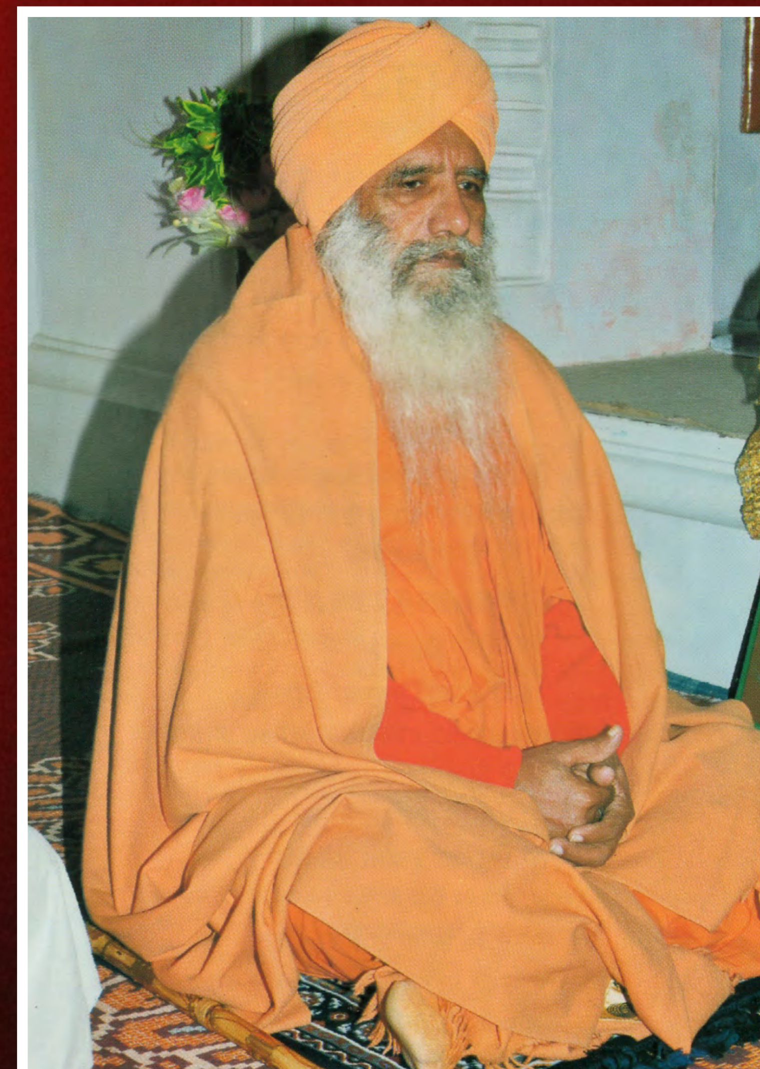
निर्मल भेष भास्कर

(निर्मल भेष का संक्षिप्त इतिहास)



निर्मल आश्रम-ऋषिकेश

निर्मल भेष भास्कर • ज्ञानी बलवंत सिंह कोठा-गुरु



संत ज़ैल सिंह जी 'शास्त्री'

अमृतसर (पंजाब)

ੴसतिगुर प्रसादि।।

निरमल भेख अपार तासु बिनु अवर ना कोई।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अंग 1409)

मारिआ सिक्का जगति विचि नानक निर्मल पंथु चलाइआ।।
(भाई गुरदास जी)

निर्मल भेष भास्कर

(निर्मल भेष का संक्षिप्त इतिहास)

निर्मल भेष को श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के आशीर्वाद, दस बख्शीशें, सिक्ख पंथ, सिक्ख मिसलों के संकटकाल में गुरूद्वारों की सेवा-संभाल, गुरूमत प्रचार, श्री निर्मल पंचायती अखाड़े की सृजना, अखाड़े के सभी पूजनीय श्री महंतों के संक्षिप्त जीवन, धर्म प्रचार, विद्वान संतों द्वारा गुरूवाणी टीकाएँ, गुरूवाणी कोष, गुरू इतिहास संबंधी साहित्यिक रचनाएँ एवं निर्मल आश्रम ऋषिकेश की परोपकारी सामाजिक सेवाओं का विवरण।

मूल लेखक (पंजाबी संस्करण)
ज्ञानी बलवंत सिंह 'कोठा-गुरू'

अनुवादक (हिंदी संस्करण)
संत ज़ैल सिंह 'शास्त्री'

प्रकाशक :
निर्मल आश्रम-ऋषिकेश

निर्मल भेष भास्कर

- मूल लेखक (पंजाबी संस्करण) :
  ज्ञानी बलवंत सिंह 'कोठा-गुरू'
  गाँव व पो.आ. कोठा-गुरू
  जिला बठिंडा - 151206
  मो: (+91) 9915357802, 9915763487
  फोन: 01651-258222, 259111
  ईमेल: beeraparsingh@gmail.com
- पूर्व प्रकाशक (पंजाबी संस्करण) :
  श्रीमान् महंत बलवंत सिंह जी
  सुकदेव कुटी, कनखल (हरिद्वार)
- वर्तमान प्रकाशक (हिंदी संस्करण) :
  संत जोध सिंह
  निर्मल आश्रम (प्रकाशन विभाग)
  निर्मल मार्ग, ऋषिकेश-249201
  जनपद-देहरादून, (उत्तराखण्ड)
  फोन : (+91) 9837837000
- अनुवादक (हिंदी संस्करण) :
  संत ज़ैल सिंह 'शास्त्री'
- संपादक:
  संत जोध सिंह, निर्मल आश्रम ऋषिकेश
- प्रथम संस्करण (हिंदी) :
  जून 2021 – 500 प्रतियाँ

- भेटा: नि:शुल्क
- **मुद्रक : पारस ऑफसेट प्राईवेट लिमिटेड, कुंडली (हरियाणा)**
- मुख्य चित्र:
  निर्मल भेष भूषण, विद्या मार्तण्ड, वेदान्ताचार्या
  श्रीमान पंडित ज्ञान देव सिंह जी महाराज
  श्री महंत साहिब, पंचायती अखाड़ा निर्मला
  कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

अति-श्रद्धा सहित

समर्पण



ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मलीन संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज

आप निर्मल पंथ के एक विशिष्ठ संत, शिरोमणि पंडित, विरक्त शिरोमणि, तत्वेता, अध्यात्मवाद व आत्मज्ञान में निष्ठावान, गुरूवाणी के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता एवं सुप्रसिद्ध कथा वाचक थे।

ੴ सतिगुर प्रसादि।।

निवेदन

सन् 1999 ई० जबकि समूह सिक्ख पंथ द्वारा 'खालसा सृजना दिवस' मनाया जा रहा था तो सभी निर्मले संत इस समागम में शामिल होने के लिए श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की छतर-छाया तले, पाँच प्यारों की अगुवाई एवं 'श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला' कनखल, हरिद्वार के श्री महंत साहिब स्वामी ज्ञान देव सिंह जी की आज्ञानुसार एक विशाल नगर कीर्तन के रूप में बैसाखी के शुभ दिवस पर श्री आनन्दपुर साहिब पहुँचे। वहाँ पर संत ज्ञानी बलवंत सिंह जी 'कोठा-गुरू' ने मुझे 'निर्मल पंथ बोध' नामक ग्रंथ की एक प्रति प्रेमपूर्वक भेंट की। अपने स्वभावानुसार मैंने उसका संपूर्ण अध्ययन किया। तत्पश्चात् विचार आया कि आज के व्यस्त जीवन में इतना दीर्घ ग्रंथ पढ़ने का समय किसी के पास भी नहीं है। इस विचार से आदरणीय ज्ञानी जी से इस ग्रंथ का संक्षेप रूप तैयार करने की विनती की जिसको उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। कुछ ही समय में उन्होंने दो छोटे ग्रंथ तैयार किये- (1) 'निर्मल भेख दी गौरव गाथा' (2) 'निर्मल भेख भास्कर' जिनका विमोचन पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में 29-30 अक्तूबर 2009 को हुए सेमीनार के समय हुआ। इनकी विषय वस्तु को पढ़कर अनुभव किया गया कि इनमें से 'निर्मल भेख भास्कर' (जोकि एक लघु ग्रंथ है) का हिन्दी अनुवाद भी होना चाहिए ताकि हिन्दी भाषी जिज्ञासु प्रेमीजन इससे आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकें और श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा स्थापित निर्मल सम्प्रदाय के महापुरुषों की सेवाओं का संपूर्ण जगत में प्रचार-प्रसार हो सके।

ज्ञानी बलवंत सिंह जी 'कोठा-गुरू' ने इस सुझाव को भी प्रसन्नता पूर्वक प्रवान कर लिया अतः इस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करने की सेवा संत ज़ैल सिंह जी 'शास्त्री' अमृतसर वालों को दे दी गई।

प्रस्तुत ग्रंथ से जानकारी प्राप्त होती है कि कैसे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी निर्मल सम्प्रदाय के संतों-महापुरुषों ने गुरूद्वारों की सेवा को निष्काम भाव से निभाया है। निर्मले संतों की विद्वत्ता के कारण ही समाज में सर्वधर्म-निष्ठा, गुरू-भक्ति, गुरूमत का प्रचार-प्रसार दृढ़ होता रहा। इन्होंने गुरूवाणी की टीकाएँ, इतिहास एवं कोश लिखे, अमृत संचार किया और मानव समाज को आध्यात्मिक कार्य करने की प्रेरणा दी ताकि इस महान सेवा से प्रेरित होकर जनसाधारण भी अपना जीवन निर्मल बना सके। इस सम्प्रदाय के उपकारों को सिख पंथ कभी नहीं भुला सकता।

निवेदकः

संत जोध सिंह

निर्मल आश्रम, ऋषिकेश

प्राक्कथन

दशम गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की आज्ञानुसार निर्मल पंथ के संतों ने विद्या, धर्म, नाम-वाणी एवं सिक्खी का उल्लेखनीय प्रचार किया है। सिक्ख पंथ के संकट काल में (सन् 1712 से 1759 ई० तक) गुरुद्वारों की निशान-देही, सेवा- सम्भाल एवं गुरू सिक्खी के प्रचार की सेवा केवल निर्मले महापुरुष ही करते रहे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप, पोथियाँ लिखते रहे और गुरूवाणी पढ़ने के इच्छुकों को निःशुल्क बाँटते रहे। गाँवों में जन साधारण को गुरु नानक देव जी के सिद्धांतों का उपदेश करते रहे। उनका लक्ष्य बच्चों को गुरूमुखी, गुरूवाणी पढ़ाना एवं रोगियों को निःशुल्क औषधियाँ देना रहा।

भारत की आज़ादी का संग्राम आरम्भ करने वाले भी निर्मले महापुरुष ही थे। निर्मले संतों द्वारा 18वीं एवं 19वीं सदी में सिख पंथ के लिए की गई कठिन सेवा और कुर्बानी भुलाई नहीं जा सकती। गुरूवाणी के टीके, कोश, गुरूमत सिद्धांत निरूपण, दसों गुरूओं के जीवन एवं सिक्ख इतिहास संबंधी साहित्य प्रायः निर्मले संतों ने ही लिखा है।

निर्मल पंथ के इस प्रकार के महान परोपकारों को सुन-पढ़ कर सन् 1976 ई० में गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर में 'गुरु नानक देव अध्ययन विभाग' के मुखी प्रो० प्रीतम सिंह जी ने, 'निर्मल संप्रदाय' के विषय पर 28, 29, 30 मार्च 1976 को एक सैमीनार आयोजित किया। प्रो० साहिब ने दास को भी उस सैमीनार में सेवा करने का अवसर प्रदान किया।

इस सैमीनार के लगभग 33 वर्ष पश्चात्, निर्मल आश्रम ऋषिकेश के महंत श्रीमान् संत बाबा राम सिंह जी एवं श्रीमान् संत जोध सिंह जी ने पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के तत्काली कुलपति महोदय डा० जसपाल सिंह जी की आज्ञा एवं सहयोग से 'निर्मल संप्रदाय' संबंधी एक सैमीनार दिनांक 29, 30 अक्तूबर 2009 को आयोजित किया।

इस सैमीनार की संपूर्णता के पश्चात श्रीमान् महंत बलवंत सिंह जी, सचिव (सेक्रेटरी) श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला ने दास को कहा कि निर्मले संतों-महापुरुषों की निष्काम व कठिन सेवा को लिखकर साधारण पाठकों, प्रचारकों एवं विद्या प्रेमी जिज्ञासुओं तक पहुँचाना चाहिए। उनकी आज्ञा से यह लघु ग्रंथ 'निर्मल भेष भास्कर' लिखा गया

जिसकी 2000 प्रतियाँ छपवाकर लेखकों, वक्ताओं, श्रोताओं एवं सभी विद्वानों में वितरित कर दी गईं। अतः इस लघु ग्रंथ द्वारा निर्मल संप्रदाय के साधुओं द्वारा की गई विभिन्न सेवाओं के बारे में सभी जिज्ञासुओं की जानकारी में वृद्धि हुई।

इस सैमीनार की सफलतापूर्वक सम्पन्नता होने पश्चात पाठकों के अनेक प्रशंसा-पत्र आये। तत्पश्चात संत बाबा जोध सिंह ने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की शाखा देहरादून में एक और सैमीनार दिनांक 11, 12 मार्च 2010 को करवाया। इस सैमीनार का विषय 'निर्मल सम्प्रदाय की गुरूवाणी व्याख्याकारी' रखा गया था। दास ने 'निर्मल पंथ के विद्वानों द्वारा लिखा सर्वपखी साहित्य' पर अपना लेख प्रस्तुत किया। इसी समय 'निर्मल भेष भास्कर' (पंजाबी) का विमोचन किया गया। श्रीमान् संत जोध सिंह जी ने सुझाव दिया कि इस अमूल्य ग्रंथ को हिन्दी भाषा में भी छपवा लेना चाहिए। अतः श्रीमान् संत ज़ैल सिंह जी 'शास्त्री' अमृतसर वालों ने हिन्दी अनुवाद किया। आवश्यकतानुसार कुछ अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी सम्मिलित कर दी गईं। संत ज़ैल सिंह 'शास्त्री' जी ने अत्यंत सुंदर अनुवाद किया। 'निर्मल भेष भास्कर' के हिन्दी अनुवाद को संत जोध सिंह जी महाराज ने 'निर्मल आश्रम (प्रकाशन विभाग), ऋषिकेश' की ओर से प्रकाशित करवा कर दास को ऋणी बनाया है। मैं संत ज़ैल सिंह जी 'शास्त्री' एवं संत जोध सिंह जी निर्मल आश्रम, ऋषिकेश वालों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

बलवंत सिंह 'कोठा-गुरु'

दो शब्द

निर्मल सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी हैं, जो कि भाई भागीरथ जी के प्रसंग से सिद्ध भी हो जाता है। समय समय पर सभी गुरुजनों ने निर्मल संप्रदाय रूपी पौधे को सींचा और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने गेरुये (भगवें) वस्त्र पहनाकर इसे सुसंगठित किया। इस प्रकार दूरदर्शी गुरु साहिब जी ने सिक्ख परंपरा में आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए संन्यस्त होने की परंपरा आरम्भ की एवं समाज में जाति-पाति का भेद-भाव समाप्त करने की शुरुआत कर दी।

पुरातन समय से वेद-विद्या ग्रहण करने का अधिकार केवल ब्राह्मण जाति या साधु-संन्यासियों को ही था। गुरू जी ने ब्रह्म विद्या ग्रहण करने का अधिकार सभी जाति के प्राणियों को दे दिया। इसी के साथ निर्मले विद्वान संतों को विद्या पढ़नी-पढ़ानी, नाम सिमरन करना-करवाना, गुरूधामों की सेवा करनी-करवानी, अमृतपान करना-करवाना व संसारी जीवों को गुरूवाणी के माध्यम से प्रचार करने की आज्ञा प्रदान की। फलस्वरुप निर्मले संतों ने गाँव-गाँव, घर-घर जाकर गुरूवाणी का प्रचार किया। इस प्रकार दशम पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के सच्चखंड गमन के उपरांत सिक्ख पंथ पर आए संकटकाल में जब ज़ालम हुकमरान, सिक्खों के सिरों का मूल्य लगाते थे, उस कठिन समय में भी निर्मले संत सेवा-सिमरन, सत्संग, गुरूवाणी प्रचार एवं गुरू स्थानों की सेवा-संभाल करते रहे। परंतु निर्मले संतों द्वारा किए गए गुरूमत-गुरूवाणी के प्रचार-प्रसार की सेवा की विशेष जानकारी जन साधारण को नहीं हुई। जब हम सिक्ख इतिहास को विस्तारपूर्वक ध्यान से पढ़ते हैं तब ज्ञात होता है कि निर्मले संतों ने सिक्ख इतिहास एवं गुरूवाणी प्रचार की कितनी महान सेवा की है जिसको प्रकाश में लाना अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर निर्मल भेष के विद्वानों ने समय-समय पर अनेक ग्रंथों की रचना करके सिक्ख पंथ की अकथनीय सेवा की है।

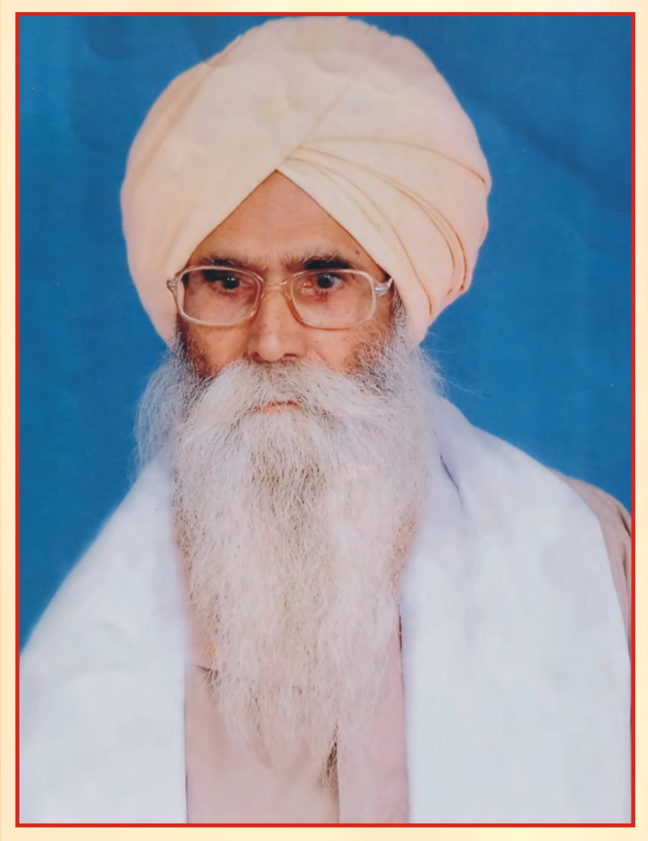
वर्तमान में परमश्रद्धेय ज्ञानी बलवंत सिंह जी 'कोठा-गुरु' ने निर्मल संप्रदाय के इतिहास को एक विशाल ग्रंथ 'निर्मल पंथ बोध' लिखकर प्रकाशित करवाया। यह ग्रंथ अति विस्तृत होने के कारण पाठकों के व्यस्त जीवन में इसे पढ़ने के लिए इतना समय निकालना संभव नहीं था। अतः तब श्रद्धेय संत बाबा जोध सिंह जी ने ज्ञानी बलवंत सिंह कोठा-गुरू जी

से आग्रह किया कि इस ग्रंथ को संक्षिप्त रूप में छपवाएँ ताकि जनसाधारण इससे लाभ उठा सके। थोड़े ही समय में आदरणीय ज्ञानी बलवंत सिंह 'कोठा-गुरू' जी ने 'निर्मल पंथ बोध' का संक्षेप रुप 'निर्मल पंथ दी गौरवगाथा' एवं 'निर्मल भेष भास्कर' गुरूमुखी में छपवाया जिनका विमोचन पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में वर्ष 2009 ई० में आयोजित एक सैमीनार में किया गया। इन दोनों ग्रंथों को प्राप्त करके सभी उपस्थित विद्‌दवान और संत महापुरुष अति प्रसन्न हुए।

कुछ समय पश्चात 'निर्मल भेष भास्कर' को गुरुमुखी से हिन्दी अनुवाद करने की सेवा मुझ दास को प्राप्त हुई। इसलिए मैं संत बाबा जोध सिंह जी, निर्मल आश्रम ऋषिकेश एवं श्रीमान् संत ज्ञानी बलवंत सिंह जी 'कोठा-गुरू' का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

पाठक गणों से प्रार्थना है कि अशुद्धियों को सुधार कर पढ़ते हुए दास को आशीष प्रदान करें।

संत ज़ैल सिंह 'शास्त्री'



संत ज्ञानी बलवंत सिंह जी 'कोठा-गुरू'

अल्लाही फुरमान

अपने पांच होनहार तथा विद्या प्रेमी सिक्खों को संस्कृत विद्या प्राप्त करने के लिए काशी (बनारस) भेजते समय श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का फुरमान।

ੴ सतिगुर प्रसादि।।

मारिआ सिक्का जगति विचि नानक निर्मल पंथु चलाइआ।। (भाई गुरदास जी)



सन् 1686 ई०: में श्री पांवटा साहिब से श्री गुरु गोबिंद सिंह जी अपने पाँच विद्या प्रेमी सिक्खों भाई कर्म सिंह जी, भाई गंडा सिंह जी, भाई वीर सिंह जी, भाई राम सिंह जी एवं भाई सैणा सिंह जी को साधु भेष पहनाकर संस्कृत भाषा में सनातन शास्त्र विद्याध्यन के लिए काशी भेजते हुए।

सद्गुरू जी ने फुरमाया, "आपको संस्कृत माध्यम में सनातन ग्रंथों का अध्ययन करने के लिये काशी भेजा जा रहा है। गेरुए वस्त्र धारण करके संन्यासी स्वरूप में, वेदों-शास्त्रों की समस्त विद्या प्राप्त करो। जिस ब्रह्म विद्या को साधारण व्यक्ति प्रायः बारह वर्षों में प्राप्त करते हैं, वही विद्या आप लोग केवल एक वर्ष में ही प्राप्त कर लोगे। आप भारत देश के प्रकाण्ड विद्वान बनोगे। ब्रह्म विद्या के माध्यम से गुरूवाणी एवं गुरू इतिहास का प्रचार-प्रसार करना। 'जिस प्रकार आप लोगों की निर्मल बुद्धि है, इसी प्रकार निर्मल बन कर रहना।'

तत्पश्चात पाँचों सिक्खों ने सद्गुरू जी से काशी (बनारस) जाने की आज्ञा प्राप्त की। इन पाँचों आज्ञाकारी प्रेमियों ने पंडित सदानंद जी जोकि उस समय काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान थे, से व्याकरण, वेद, उपनिषद, वेदांग, न्याय, वेदांत, इतिहास, मिथिहास आदि की समस्त विद्या ग्रहण करके सन् 1699 ई० में श्री आनंदपुर साहिब (पंजाब) पहुँचकर श्री गुरू जी के चरणों में नतमस्तक हुए। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज ने अति प्रेम से फुरमाया कि आज से आप हमारे 'निर्मले संत' हुए। आपकी सेवा गुरूमत सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना एवं गुरूवाणी विद्या अध्ययन करना-करवाना है।

ज्ञानी बलवंत सिंह 'कोठा-गुरू'

निर्मल पंथ

श्री गुरू अर्जुन देव जी की उपस्थिति में 'मथरा भट्ट' गुरू यश करते हुए कहते हैं :-

निर्मल भेख अपार तासु बिनु अवरु ना कोई।। अथवा

निर्मल पंथ अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण महान है। ब्रह्म विद्या का प्रदाता है। निर्मल भेष के गौरव को कोई भी प्राणी पूर्ण रूप में नहीं कह सकता। इस जैसा और कोई भेष नहीं है जो नाम-बाणी, कथा-कीर्तन, नाम-जप का अभ्यासी, नित्यनेमी तथा शुभ आचरण निभाते हुए आत्मपद की प्राप्ती करने वाला हो। 'गुरू प्रताप सूरज' ग्रंथ में महाकवी भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं:-

जोग भोग सो दोनो रीत। दई 'निर्मल पंथ' को चीत।

सतिनामु को सुमरिन करनो। एही योग एक लिव को वरनो।

ज्ञानी बलवंत सिंह 'कोठा-गुरु'

निर्मले संत

निर्मले संत इस प्रकार के सिक्ख मिशनरी (प्रचारक) थे जोकि केशधारी रहकर विद्या पढ़ने-पढ़ाने, अमृतपान करने-करवाने पर अधिक ध्यान देकर अपना विशेष स्थान बनाते गए। दूसरे शब्दों में इन्होंने केवल सिक्खी का ही प्रचार नहीं किया बल्कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के खालसा पंथ (गुरूसिक्खी) के आदर्शों का प्रचार-प्रसार भी किया और साथ ही पुरातन शास्त्र प्रणाली के अनुसार गुरूमत सिद्धांतों की उत्कृष्टता (बड़प्पन) दर्शाकर विद्वत्त समाज में अपनी सर्वश्रेष्ठ जगह बनाई। इस तरह का मान-सम्मान शायद किसी अन्य सिक्ख संप्रदाय को प्राप्त नहीं है। निर्मले संतों ने गुरूमत साहित्य को समृद्ध किया और साथ ही भारतीय दर्शन-साहित्य में भी अपना नाम रोशन किया। श्री गुरू नानक देव जी के बताए सिद्धान्तों को प्रतिष्ठा (गौरव) दिलवाना इनका ही काम था। उस समय दस गुरूओं को भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध ऋषियों-मुनियों से श्रेष्ठ एवं श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी को 'पंचम वेद' सिद्ध करना ही आखिरी पौड़ी (सोपान) समझा जाता था। निर्मले संतों ने तर्क विद्या के आधार पर यह सब कार्य किये और इनकी विद्वता का प्रभाव अन्य मतों के विद्वानों ने भी स्वीकार किया।

प्रो. पिआरा सिंह 'पदम'

निर्मल भेष

निर्मले संतों के गेरुए या सफेद वस्त्रों को देखकर किसी प्रकार की निंदा करनी मुनासिब नहीं है क्योंकि श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने सिक्ख धर्म का प्रचार केवल पंजाब तक ही सीमित नहीं रखना था बल्कि अपने सिक्खों को अतीत भेष पहनने की छूट देकर देश के प्रत्येक क्षेत्र में जाकर गुरू घर का प्रचार करने के लिए भेजना था। श्री गुरु जी ने आनंदपुर छोड़ने उपरांत मालवा देश से गुजरते हुए श्री दमदमा साहिब से नांदेड़ तक पंडित कर्म सिंह जी, बाबा दरगाहा सिंह जी आदि निर्मले संतों को अपने साथ ही रखा, जिनसे गुरू जी नित्यप्रति सनातन ग्रंथों का व्याख्यान श्रवण किया करते थे।

शमशेर सिंह 'अशोक'

विषय सूची

1 निर्मल संप्रदाय का परिचय

मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथ चलाइआ।। (भा०गु० 1/45)

निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई।। (पृ० 1409)

उत्तरी भारत की सम्प्रदायों में निर्मल सम्प्रदाय का विशेष स्थान है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी हैं। सिक्ख इतिहास में वर्णन आया है कि भाद्रपद सुदी 13 संवत् 1564 को श्री गुरु नानक देव जी काली वेईं (नदी) में स्नान करते समय डुबकी लगाकर सच्चखंड में पहुँच गए। अकाल पुरुष के द्वार पर 'सो दरु केहा सो घर केहा जित बहि सरब समाले' वाला शब्द उच्चारण करके स्तुति की। उस समय अकाल पुरुष ने मूल मंत्र बख्श कर सद्गुरु जी को आज्ञा दी कि 'तप्त' (दुखी) हो रहे संसार को 'नाम' जपाओ, सिमरन में लगाओ। सद्गुरु जी ने वाहिगुरु के 'नाम' का 'सत' (सत्य) के आधार पर राज्य कायम किया।

'नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै।।' (पृ० 966)

'सत्य' एवं 'नाम' ब्रह्माण्ड की रचना से भी पहले थे, अब भी हैं और सदैव रहेंगे। गुरूवाणी का फुरमान है-

'सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ।।' (पृ० 1248)

इस सत्य के राज्य का सिक्का (मोहर) निर्मल पंथ है।

भाई गुरदास जी का कथन है-

'मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथ चलाइआ।।' (भा०गु० 1/45)

संसारी राजाओं के सिक्के बंद होते रहते हैं और बदलते रहते हैं या नए चलते हैं। श्री गुरु नानक देव जी के सत्य के राज्य का सिक्का 'निर्मल पंथ' सदा स्थिर रहेगा, न बदलेगा, न मिटेगा। इस भेष की मर्यादा अनुसार चलने वालों का जीवन लोक-परलोक में सफल होता रहेगा।

सद्गुरु जी अकाल पुरूष के दरबार से नाम की बख्शीश प्राप्त करके वेईं नदी में से प्रगट हुए सद्गुरु जी का अनन्य सिक्ख **भाई भागीरथ** श्रद्धापूर्वक तीन दिन तक सद्गुरु जी

के दर्शन के लिए एकाग्रचित्त नदी के किनारे खड़ा रहा। सद्गुरु जी ने भाई भागीरथ की श्रद्धा और भक्ति देखकर प्रसन्नतापूर्वक उसको मूलमंत्र एवं निर्मल भेष बख्श कर कृतार्थ किया। इस प्रकार प्रथम निर्मला संत भाई भागीरथ हुआ। भाई भागीरथ जी ने सद्गुरु जी की स्तुति में एक वार (कविता) भी लिखी है, जिस में से कुछ पंक्तियाँ नीचे लिखते हैं-

बाबा बेंई नाइ कै सच्चखंड में पहुचा जाई।
बेंई विचों निकले रंग मजीठी बसन धराई।
बैठे कबर सथान में दरशन कऊ ऊलटी लोकाई।
वाहिगुरू सतिनामु दै, चारि बेद कउ सारि बताई।
खंड ब्रहमंडी सैल कर भव निध तारी खलक सबाई।
निरमल पंथु चलाइआ एक विवेक भगति द्रिड़ाई।
साधन कठिन छडाइ कै गुर सिक्खी दी रीति चलाई।
कलिजुग नानक कला दिखाई। (वार पउड़ी 33 वीं भाई भागीरथ)

इस प्रकार निर्मल भेष को सद्गुरु नानक देव जी ने प्रारंभ किया। यह निर्मल भेष दशम पातशाह के समय तक विधिवत् दस गुरुओं की आज्ञा के अनुसार देश-विदेश में धर्म का प्रचार करता रहा।

निर्मल शब्द का अर्थ भाई काहन सिंह नाभा ने 'महान कोश' में इस प्रकार किया है-

निर्मल अर्थात मैल रहित, प्रकाश, उजाला, रोशन, कलंक रहित, श्रेष्ठाचारी, निरवैर, अविद्या रहित, निर्मल धर्म, खालसा धर्म, सिक्ख धर्म, निर्मल पंथ, सिक्ख सम्प्रदाय, 'अहिनिश नवतन निरमला मैल न कबहू होई।।' सिक्ख धर्म धारण करने वाला गुरु नानक का सिक्ख 'साध संग होए निरमला नानक प्रभ के रंग', 'सबद रते से निरमले।'

गुरु नानक देव जी की दसवीं ज्योत गुरु गोबिन्द सिंह जी सर्व कला समर्थ अवतार थे। उन्होंने हिंदू धर्म की रक्षा व भारतीय संस्कृति एवं सभ्याचार की रक्षा का उपदेश दिया। आप इस कार्य की सफलता के लिए मन, वाणी, कर्म के द्वारा दृढ़ हो गए। भारतीयों में जो कायरता रूपी नपुंसकता फैल चुकी थी, उसे समाप्त करने का निर्णय करके जन-साधारण में विश्वास, स्वाभिमान, दृढ़ता, आत्मबल भरना आरम्भ किया। भारतीयों में स्वाभिमान उत्पन्न करने के लिए श्री गुरु अर्जुन देव जी एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपना बलिदान दिया था। इसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पौंटा साहिब में शास्त्र एवं शस्त्र का एकीकरण किया। आप स्वयं ओजपूर्ण वाणी का उच्चारण करते थे। आप जी

के दरबार में ब्रजभाषा, हिंदी, पंजाबी, फारसी एवं अरबी के विद्वान, आलम-फाजिल उपस्थित रहते थे परन्तु आप पुरातन भारतीय दर्शन, साहित्य, काव्य, इतिहास के अध्ययन के लिए संस्कृत पढ़ना अति आवश्यक समझते थे।

गुरु महाराज जी के दरबार में पण्डित रघुनाथ जी संस्कृत के ग्रंथों की कथा किया करते थे। एक समय सद्‌गुरु जी ने पंडित जी से कहा कि वह सिक्खों को भी संस्कृत पढ़ाया करें परंतु पंडित जी ने सिक्खों को संस्कृत विद्या पढ़ाने से इन्कार कर दिया कि सिक्ख तो नीच जाति (शूद्रों) में से हैं। वे ना तो ब्राह्मण हैं और न ही क्षत्रिय। इसलिए सिक्ख देवभाषा (वेद) वाणी पढ़ने के अधिकारी नहीं हैं।

सद्‌गुरु जी ने पंडित रघुनाथ का यह निरर्थक तर्क सुनकर फुरमाया- "पंडित जी, जिन्हें आप शूद्र कहते हो, इन्हीं सिक्खों के चरणों में बैठकर बड़े-बड़े ब्राह्मण वेद, शास्त्रादि 14 विद्या पढ़ा करेंगे। यह सिक्ख, ब्राह्मणों के विद्या गुरू होंगे।"

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं-

बोले गुर सुनि द्विज की बानी। हे द्विज महां मूढ अभिमानी।।
जो विद्या पढि तूं गरबै हैं। मम सिक्खन को शूदर केहैं।।
इन ही मेरे सिक्खन तै लखि। विद्या बेद पढेंगे द्विज दख।।
निगमागम लौ चौदऐं विद्या। मैं निज पंथै दई प्रसिध्धया।।
जिन को तूं शूदर बतरैहैं। विद्या गुरु द्विज्जन इह थैहें।। (पंथ प्रकाश पृ० 2787)

<u>पाँच संतों को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजना</u>

थोड़े समय के पश्चात् सन् 1686 ई० में सद्‌गुरु जी ने एक विशेष समागम का आयोजन किया, जिस में विभिन्न स्थानों की संगत एकत्रित हुई। 'आसा दी वार' के कीर्तन के पश्चात् सद्‌गुरु जी ने सत्-उपदेश देते हुए विद्या की महानता की व्याख्या की तथा सब को विद्या प्राप्त करने का उपदेश दिया। साथ ही गुरूबाणी एवं भाषा के पाँच प्रसिद्ध विद्वानों को आवाज़ देकर खड़े होने का आदेश दिया। यह पाँचों विद्वान-संत कर्म सिंह जी, संत राम सिंह जी, संत गंडा सिंह जी, संत वीर सिंह जी, संत सैणा सिंह जी सद्गिुरु जी की आज्ञा अनुसार हाथ जोड़कर खड़े हो गए। सद्‌गुरू जी ने संगत में से इनका चुनाव इसलिए किया क्योंकि इन संतों को विद्या से प्रेम (अनुराग) था, बुद्धि सूक्ष्म थी, ग्रंथों के अति गूढ़ विषयों, पदार्थों को समझने की सामर्थ्य इनके पास थी। भाषा में ये पहले ही विद्वान थे, नवयुवक थे, मधुर स्वभाव था एवं आचरण भी श्रेष्ठ था। सद्‌गुरु जी के आज्ञाकारी थे। सद्‌गुरू जी की आवाज़ सुनकर पाँचों विद्वान संत सद्‌गुरू जी के चरणों में नमस्कार करके खड़े हो गए। दीवान स्थान पूरी तरह से भरा हुआ था। संगत शाँत होकर हुक्म सुनने के लिये उत्सुक हो रही थी।

सद्‌गुरु जी ने फुरमाया, "तुम लोगों को संस्कृत पढ़ने के लिये काशी भेजा जा रहा है। कषाय वस्त्र धारण करके संन्यासी स्वरूप में, वेद-शास्त्रों की संस्कृत में समस्त विद्या प्राप्त करो। आज ही सारी तैयारी करके कल अमृत वेले यात्रा प्रारम्भ कर दो, विचलित नहीं होना, सद्‌गुरु सदा अंग-संग (साथ) हैं। जो विद्या साधारण व्यक्ति प्रायः 12 वर्षों में प्राप्त करते हैं, वह विद्या तुम 12 महीनों में ही प्राप्त कर लोगे। हमारे इस वरदान से तुम देश के प्रकाण्ड विद्वान बनोगे। आगे इस विद्या का पंथ में प्रचार करना। जिस प्रकार तुम लोगों की निर्मल बुद्धि है, इसी प्रकार निर्मल बनकर रहना, जाओ।" पाँचों विद्वान संतों के मस्तक सद्‌गुरु जी के पावन चरणों में झुक गए। दूसरे दिन भगवें वस्त्र धारण करके, गातियाँ लगाकर, चिप्पीयाँ लेकर पाँचों संत काशी जी जाने के लिए गुरु जी के चरणों में हाज़िर हो गये। सद्‌गुरु जी उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए और अनेक आशीर्वाद देकर काशी जी जाने की आज्ञा करते हुए इस प्रकार फुरमाया-

जाउ ! मेरे लाल पाल कर है अकाल थारी,
सारी सुख संपदा मैं वारी सिर थारे पै।
काम क्रोध लोभ त्याग साग पात खाइ बह,
बट हूं की छाया अथ सुंने घर ढारे पै।
ब्रह्मचारी रीति जोई होई विप्रीत सोई,
सोई अब प्रगटी यो देश इस सारे पै।
वरण तुमारे अब आश्रम संन्यास भयो,
लयो है अरुज पद ऊच चंद तारे पै।

इस प्रकार सद्‌गुरु जी का आशीर्वाद प्राप्त करके, नमस्कार और परिक्रमा करके ये पाँचों संत काशी जी को चल पड़े। काशी जी पहुँच कर जतने (नाम के) ब्राह्मण के वट वृक्ष के नीचे आसन लगाए और घास-फूँस की छप्पर बनाकर रहने लगे। यह स्थान 'चेतन मठ' के नाम से जाना जाता है तथा निर्मल पंथ का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है।

कुछ समय में ही उन बुद्धिमान संन्यासी संतों ने पंडित सदानन्द जी के पास पढ़ने का प्रबंध कर लिया। पंडित सदानन्द जी काशी के प्रसिद्ध आचार्य थे। सत्वगुणी, कोमल, विनम्र स्वभाव था, विद्यार्थियों से प्रेम करने वाले थे। जिस प्रकार आचार्य योग्य थे, उसी प्रकार पाँचों विद्यार्थी भी विद्या प्रेमी थे, जो अमूल्य समय को विद्या अध्ययन में व्यतीत करते थे। हास्य-विलास, नृत्य-गीत आदि में समय व्यर्थ करना घातक समझते थे। किसी भी प्रकार के सुख-स्वाद से दूर रहते थे। एकाग्र मन से केवल एक ही लक्ष्य प्रमुख समझते थे कि अधिक से अधिक विद्या अध्ययन किया जाए।

काशी में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि नए आए पाँचों पंजाबी संत कोई चमत्कारी व्यक्ति हैं। जो विद्या कई वर्षों में पढ़ी जाती है, वह उन्होंने बहुत ही कम समय में प्राप्त कर ली है। इसका कारण था- सद्गुरु जी का वरदान, आचार्य के पढ़ाने का ढंग, पढ़ने का निरंतर अभ्यास, धर्म प्रचार की लग्न, पंथ में संस्कृत विद्या को प्रवृत्त करने का उत्साह। इसलिए यह पाँचों संत व्याकरण, वेद, वेदांग, शास्त्र, दर्शन, न्याय, स्मृति और पुराण आदि सब प्रकार की विद्या के प्रकाण्ड पंडित बन गए। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं-

पहुंचे कांशी पुरी उदारे। चेतन मठ मैं रहे विचारे।

साध निरमले तहि बिदताए। विदया पढी अधिक मन लाए।

श्री आनंदपुर साहिब वैकुण्ठ धाम बना हुआ था। संगत का आना-जाना, सद्गुरु जी के दर्शन, उपदेश, कथा-कीर्तन, कवियों की नई-नई कविताएँ और कवि दरबार, अमृतधारी सिंहों (सिक्खों) के युद्ध संबंधी अभ्यास, पौंटा साहिब की तरह श्री आनंदपुर साहिब भी विद्या का संगम बना हुआ था। एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव एवं श्रद्धा दर्शनीय थी।

पौंटा साहिब में सन् 1686 ई० में पाँच संतों- भाई कर्म सिंह, भाई राम सिंह, भाई गण्डा सिंह, भाई वीर सिंह एवं भाई सैणा सिंह जी का चयन हुआ था। सद्गुरु जी महाराज ने इन्हें सोच-समझकर संगत में से चुना था। ये व्यक्ति विवेक बुद्धि वाले थे, भाषा एवं गुरूबाणी के विद्वान थे, जिनको अध्ययन- अध्यापन से प्रेम था।

विद्या में अनुराग होने के कारण संस्कृत (वेद, वेदांत, व्याकरण, दर्शन, उपनिषदादि, पुराण, रामायण, महाभारत) पढ़ने के लिए काशी जी भेजा था। इन पाँचों का पुरुषार्थ भी 'पाँच प्यारों' जैसा महान है, जो सद्गुरु जी का हुक्म मानकर जंगलों, पहाड़ों, नदियों में से होते हुए काशी जी पहुँचे और गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास सहन करते हुए बड़ी लगन से विद्या प्राप्त करते रहे। इन पाँचों संतों को भी सद्गुरु जी ने 'पाँच प्यारों' की तरह अत्यंत सत्कार दिया। पौंटा साहिब के इस चयन

से 13 वर्ष बाद सन् 1699 ई० में श्री आनंदपुर, तख्त केशगढ़ साहिब में 'पाँच प्यारों' का चयन करके खालसा पंथ का सृजन किया गया। एक ओर संतों को शास्त्र विद्या तो दूसरी ओर पाँच प्यारों को शस्त्र विद्या प्रदान की। धर्म के उपदेशकों को शास्त्र में निपुण किया और धर्म के रक्षकों को शस्त्र में प्रवीण किया।

कलगीधर पिता के अनेक प्रकार के चरित्र, आनंदपुर का वैभव, विद्वानों की गोष्ठियाँ, कवि दरबारों के समाचार सुनकर पाँचों संतों के मन भी गुरु जी के दर्शनार्थ व्याकुल हो गए। विद्या में पूर्णता प्राप्त कर चुके थे इसलिए सद्गुरु जी के चरणों में पहुँचने का निर्णय किया। विद्या दाता पंडित सदानन्द जी को सारी बात बताकर पंजाब जाने के लिए आज्ञा माँगी। पंडित जी ने सहर्ष आज्ञा प्रदान कर दी। संतों के 13 वर्ष के निवास से चेतन मठ 'निर्मलों का आश्रम' प्रसिद्ध हो चुका था। इस कारण यहाँ का प्रबन्ध संत कर्म सिंह जी के शिष्य संत जै राम जी को सौंपकर विद्या दाता को नमस्कार तथा परिक्रमा करके सद्गुरु के आगे अरदास करके पंजाब को चल पड़े। काफी समय में धीरे-धीरे चलकर अमृत वेला में श्री आनंदपुर साहिब पहुँच गए।

सद्गुरु जी का दरबार लगा हुआ है। अपार संगत सद्-उपदेश श्रवण कर रही है। 'पाँच प्यारे' मंच के नज़दीक सतगुरु जी के चरणों में सुशोभित हैं। शूरवीर, शस्त्रधारी सिंह (सिक्ख), 'वीर आसन' में बैठे हैं।

पाँचों संत भगवीं गातियाँ लगाए, खढाऊ पहने, हाथ में चिप्पी और ग्रंथ लेकर गुरु कलगीधर पिता के दरबार में हाज़िर हुए। दातुन, पुष्प-पत्र भेंटकर चरणों में साष्टांग प्रणाम किया।

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ।।

डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ।।

पुनः उठकर, हाथ जोड़कर करबद्ध होकर एक स्वर संस्कृत में स्तुति करने लगे।

कुछ दिन उपरांत पाँचों निर्मले संतों ने गुरु जी के चरणों में प्रार्थना करके अमृतपान करने की इच्छा प्रकट की। गुरु जी सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए। 'पाँच प्यारों' द्वारा अमृतपान करवाया गया। इस समय कुछ संतों को भाई दया सिंह जी 'प्यारे' ने, कुछ संतों को भाई धर्म सिंह जी 'प्यारे' ने, आचरण व मर्यादा का उपदेश और गुरुमंत्र दिया। इस कारण निर्मल पंथ की सब वंशावलियाँ दोनों प्यारों (भाई दया सिंह जी और भाई धर्म सिंह जी) के साथ जाकर मिलती हैं।

भाई राम कोइर जी वाली साखी में कथन किया गया है, जिसे भाई संतोख सिंह जी ने 'गुरूप्रताप सूरज' में अंकित किया हैः

इह विध पाँचो सिंघ को, खण्डे पाहुल दीन।
पंच कोश उर गयान दे, निरमल पन्थ सु कीन। (गु०प्र०सू० रुत 1, अंसु 19।।)

पंडित गुलाब सिंह जी ने 'मोक्ष पन्थ प्रकाश' में गुरु जी की तरफ से निर्मल पंथ को शास्त्र और खालसे को शस्त्र धारण करने का इस प्रकार वर्णन किया हैः

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, पूरण हरी अवतार।
रचयो पन्थ भव मैं प्रगट, दो बिधि को विस्तार।
एकन के कर खड़ग दै, भुज बल बहु विस्तार।
पालन भूमि को करयो, दुष्टन मूल उखार।
औरन की पिख विमल मति, दीनों परम विवेक।
निरमल भाखै जगत तिह, हेरै ब्रह्म सु एक।

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी 'पन्थ प्रकाश' में लिखते हैंः

पढि निगमागम गुरु ढिग आए। गुरहि सुनाइ अधिक बर पाए।।
खुशी होइ गुरु अैस उचारी।। सार विद्या जग जुग भारी।।
शस्त्र एक शास्त्र दूजी। ऊभे जाति जग मानी पूजी।।
दुषट मूढ शस्त्रों कर दब है। शास्त्र तै कोविद बस फब है।।
अम्बीरी वजीरी फकीरी। दान दहीरी सभि तदबीरी।।
तरगस गीरि राज गहीरी। हमरे पन्थ वीच सभि थीरी।।
इतयादिक बर सतिगुरु दीए। जो सुनि सिक्ख सबै खुशी थीए।। (पन्थ प्रकाश, पृ० 2786)

आगे ज्ञानी ज्ञान सिंह जी और व्याख्या करते हैं :-

सिक्ख द्वै बिधि सबि तिन के थीए। एक गृहस्थी त्यागी बीए।
ग्रेही केबल सिक्ख बिदताए। त्यागी सिक्ख निरमले गाए।
साध निरमले वही अपारे। बिदते तबि ते जगत मझारे।
दसों गुरु की खिजमत मैहैं। रहे सदा गुरु पन्थ मधैहैं।
पै प्रविरती अधिक न धारी। रहैं निवरती संत उदारी।। (पन्थ प्रकाश, पृ० 2785)

'गुरुप्रताप सूरज' में भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं -

जोग भोग सु दोनों रीत। दई निरमल पन्थ को चीत।
सतिनामु को सुमरन करनो। एही योग इक लिव को वरनो।
लरन रिपन सो करयो काज। एही भोग को दीए समाज।
इतिआदिक निरमल यस को। बन्दहि सतिगुर पाए परस को।
गुर महिमा सिमरन सतिनामु। हौमै तिआगे मन बिस्रामु।।
दया छिमा सुच संयम धीरज। धरम पराइण साच सबीरज।
गुर सिखी निरमल संतोख। सदा गुरु के रहै भरोस। (रास 8, अंसु 35)

अर्थ स्पष्ट है कि श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी पूर्ण अवतार थे, जिन्होंने पंथ की रचना करके उसे दो रूपों में संगठित किया। एक जत्था (समूह) शस्त्रों द्वारा धर्म की रक्षा करने के लिए दुष्टों के साथ संग्राम करने के लिए नियुक्त किया। दूसरे जत्थे में विवेक बुद्धि वाले संत, शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में लगाए जो सद्गुरु जी की आज्ञा अनुसार नाम-वाणी, विद्या का प्रचार करने के लिए देशों-प्रदेशों में चले गए और संसार में 'निर्मल पंथ' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

वास्तव में श्री गुरु नानक देव जी के समय से लेकर दशम गुरु जी के समय पर्यन्त गुरसिक्खी की सम्प्रदाय का नाम 'निर्मल पंथ' ही प्रसिद्ध था। 'खालसा', 'सहजधारी', 'सहलंग' आदि उपशाखाएँ थीं। सद्गुरुओं के समय में देशों-विदेशों की संगत को दो भागों में बाँटा गया था। जो संगत सद्गुरु जी के सीधी अधीन थी, उसे 'खालसा' कहा जाता था। मसंदों के अधीन संगत को 'सहलंग' कहा जाता था। समुच्चय पंथ का नाम 'निर्मल पंथ' था।

माल के कागजों में 'खालसा' उस संपत्ति (ज़मीन) को कहते हैं, जो सीधी सम्राट तथा केंद्रीय सरकार की हो और जिस संपत्ति पर किसी विसवेदार, जमींदार, मनसबदार और किसी भी अन्य व्यक्ति का कोई अधिकार न हो। 'खालसा' शब्द छठे पातशाह के समय में भी प्रचलित था। छठे सद्गुरु जी और नौवें सद्गुरु जी के हुक्मनामों में जिक्र आया है-

(1) **पूरब दी संगति गुरु का खालसा हइ** (छठवीं पातशाही हुक्मनामा 9 पृ० 15)

(2) **पटण दी संगति श्री गुरु जी दा खालसा है।** (पातशाही नौवीं हुक्मनामा 23, पृ० 27)

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मसंद परंपरा को समाप्त करके गुरसिक्खी को सीधा अपने साथ जोड़ लिया। उस समय सारी संगत को खालसे की उपाधि से विभूषित किया गया।

भाई गुरदास जी ने इस बारे में लिखा है-

'संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला।'

भावार्थ सद्गुरु जी ने मसंदों की बिचोलगी (मध्यस्थत्ता) समाप्त करके सारी संगत को खालसा बनाकर, अपने साथ सीधा सम्पर्क जोड़ लिया।

इसके विपरीत जैसे ऊपर बताया है, कि गुरु की सिक्खी का नाम 'निर्मल पंथ' है। निर्मल का अर्थ है- मल, अविद्या, अज्ञान से रहित, श्रेष्ठ, सदाचारी, पावन आत्मा, पवित्र मन-वाणी वाला व्यक्ति। दशम सद्गुरु जी ने भी खालसे की यही परिभाषा बताई है-

जागति जोति जपै निस बासर एक बिना मन नैक न आनै।।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मढ़ही मट भूल न मानै।।
तीरथ दान दइया तप संजम एक बिना नहि एक पछानै।।
पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै।।

सद्गुरु जी के कथन अनुसार 'खालसा' शब्द और 'निर्मल' शब्द में भाषा भेद के अतिरिक्त अन्य कोई अंतर नहीं है। दोनों शब्द ही समानार्थक हैं। 'खालसा' अरबी भाषा का शब्द है, जो आगे चलकर फ़ारसी में प्रवेश कर गया है और 'निर्मल' संस्कृत का शब्द है। दशम गुरू जी के समय में देश की राजकीय भाषा फ़ारसी थी। गुरु जी स्वयं फ़ारसी के महान विद्वान थे इसलिए समस्त सिक्खी को 'खालसा' की उपाधि से सम्मानित किया गया। निर्मले संत सद्गुरु जी के आशीर्वाद से संस्कृत भाषा, साहित्य, दर्शन, भारतीय इतिहास, मिथिहास और गुरूमत-गुरूवाणी के विद्वान रहे हैं। इसी कारण वह पुरातन सम्प्रदायी नाम 'निर्मल पंथ' से ही प्रसिद्ध रहे हैं। 'खालसा' निर्मल पंथ की उपशाखा था, जो दशम गुरु के समय में ही विशालता ग्रहण कर गया था। इस विचार की प्रौढ़ता स० शमशेर सिंह जी 'अशोक' इन शब्दों के साथ करते हैं-

"सिक्ख धर्म में इस प्रकार चाहे आरंभ में 'खालसा पंथ' ही 'निर्मल सम्प्रदाय' था परंतु तत्पश्चात् उदासी, संन्यासी, त्यागी और फकीरों जैसे आचार-व्यवहार द्वारा गुरूमत के प्रचार को मुख्य रखकर दशम पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने बहुत ही दूर दृष्टि से इस प्रक्रिया को बदल दिया। 'निर्मले सिंह' खालसा पंथ का ही अंग बना दिए। उन सिक्खों को गुरु साहिब जी ने अपने रस्म-रिवाज के अनुसार कषाय, मजीठी, गेरुए अथवा सफेद वस्त्र पहनने की छूट दी।" (निर्मल संप्रदाय, पृ० 149)

❑

2 दस बखशीशें

गुरु कलगीधर पिता जी ने निर्मले महापुरुषों के आचार, तपस्या, सिमरन, जप-तप, विद्या, विवेक, सब्र-संतोष, धीरज और त्याग को देखकर समय-समय पर खुश होकर कई बार आशीर्वाद और वरदान बख्शे हैं जिनमें सद्गुरु जी द्वारा दिए गए दस आशीर्वाद प्रसिद्ध हैं। इनको निर्मल भेष में दस बखशीशें कहा जाता है। इन दस बख्शीशों में कई बख्शीशों का 'सरब लोह प्रकाश' ग्रंथ में विस्तारपूर्वक वर्णन आया है।

पहली बख्शीश-

पाँचों निर्मले विद्वान महापुरुषों का सत्वगुणी शील स्वभाव, विवेक बुद्धि, ज्ञान, विनम्रता देखकर सद्गुरु जी ने कृपा द्वारा अनेक वरदान देते हुए यह बख्शीश दी-

काहू से न राखे राग, द्वेख हूं न काहूं संग,
लोक कुल लाज खट खटो जिन ना को है।
निंम्रता सो भरे रिदे निपुंनता धरे ररे,
राम क्रिशन हरे पारब्रह्म बोध जा को है।
निगम प्रवाह नितय जिन के निहाल सिंघ,
गिरा गुरु ग्रंथ की मैं जा को प्रेम बाको है।
निताप्रति निरोपाधि अहं ब्रह्म बोध जा के,
द्वैत मल कटी निरमले नाम या को है।

निर्मल पंथ दो रूपों में प्रसिद्ध रहेगा। भक्ति मार्ग द्वारा अंतःज्ञान की खड्ग प्राप्त करके काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग-द्वेष, असुरी संपदा का नाश करेगा एवं किसी के साथ भी राग-द्वेष नहीं करेगा। सारी मानवता को नम्रतापूर्वक नाम-वाणी के साथ जोड़ेगा। सर्व प्राणी मात्र को अपनी ही आत्मा मानेगा और मनन करवाएगा। ज्ञान रूपी खड्ग से झूठ के कचरे को साफ करेगा।

दूसरी बख्शीश-

एक बार दशम गुरु जी ने भगवें वस्त्र पहनकर साधु का रूप धारण करके श्री

आनंदपुर साहिब में चल रहे सभी लंगरों की परीक्षा ली थी। लग्न से हो रही सेवा से प्रभावित होकर दूसरे दिन अपने भगवें वस्त्र निर्मले संतों को बख्श दिए थे।

तीसरी बख्शीश-

एक बार कलगीधर स्वामी जी ने कड़ाह-प्रसाद की देग के कड़ाहे निकाल कर संगत को लूटने की आज्ञा दी। संगत लूटने लग गई। कुछ सिंह आराम से शान्त, एकाग्रचित्त बैठे रहे। गुरु जी ने प्रसन्नतापूर्वक फुरमाया, **'निर्मले संतों ने सिक्खी (पंथ) में संतोष का बीज रख लिया है।'**

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं:

इहु संतोखी सिक्ख हमारे। सत्वगुणी गयानी सविचारे।।
बीज सबर संतोखहि केरा। परखयो हम इन रखयो बधेरा।।
निरमल उर इहु भए निरमले। हरि गुर भगति ब्रिकत पिरमिले।।
पन्थ निरमला इहु मम चालै। पूजनीय सभि हेत बिसालै।। (पंथ प्रकाश, पन्ना 2790)

चौथी बख्शीश-

एक दिन दशम पातशाह ने आनंदपुर साहिब के सभी सिक्खों के डेरों की प्रातः (अमृतवेला) में गुप्त पड़ताल की। उनमें से कुछ सेवादार तो सो रहे हैं और कुछ बातें कर रहे हैं। केवल एक डेरे में ही गुरु सिक्ख सिमरन, नितनेम, वाणी पढ़ते हुए देखे गये। तत्पश्चात् गुरु जी ने दीवान में फुरमाया, **'आज हमने आलस से रहित केवल निर्मले संतों को देखा है, जो सावधान होकर नितनेम करने में लगे हुए थे।'**

पाँचवीं बख्शीश-

एक दिन श्री आनंदपुर साहिब में तमाशा दिखाने वाले नट आए। सभी लोग तमाशा देखने गए। गुरु जी ने छानबीन की, तो पता चला कि 17 निर्मले संत अपने अध्ययन-अध्यापन तथा सिमरन में लगे हुए देखे गए। सद्गुरु जी ने फुरमाया, **'जगत रूपी तमाशे को असत्य मानने वाले केवल निर्मले संत हैं, जिनके मन एकाग्र हैं। इसलिए निर्मले संतों के कारण पंथ की सदा शोभा बनेगी।'**

छठी बख्शीश-

एक बार सद्गुरु दशम पिता के सेवादार निर्मले संत भाई चंदन सिंह का सामान किसी ने चुरा लिया परंतु वह चोर जल्दी ही पकड़ा गया और उस चोर को सद्गुरु जी के पास ले

जाया गया। गुरु जी ने चंदन सिंह को बुला कर पूछा, "चोर को क्या सज़ा दी जाए?" चंदन सिंह ने निवेदन किया कि, "सच्चे पातशाह चोर ज़रुरतमंद होगा, इसलिए इस ने चोरी की है। इस को पूछकर और भी ज़रुरतें पूरी कर दी जाएँ ताकि आगे से यह चोरी न करे।"

गुरु जी ने प्रसन्न होकर फुरमाया, **'भाई चंदन सिंह, तुम तो ब्रह्मज्ञानी निर्मले संत हो। तुम्हारे शुभ गुण निर्मल पंथ के चिह्न बनेंगे।'**

सातवीं बख्शीश-

एक दिन कुछ सिक्ख निर्मले संत भाई संत सिंह को पकड़कर गुरु जी की हज़ूरी में ले आए और गुरु जी से शिकायत की गई कि इसने कच्छ, कृपाण आदि ककार त्याग दिए हैं। गुरु जी ने संत सिंह से कारण पूछा। उत्तर में संत सिंह ने कहा, "महाराज! आपके सद्-उपदेश को धारण करके मैं पाँचों कोशों से स्वयं को अलग अनुभव करता हूँ, मैं असंग हूँ। आप की बताई मर्यादा तो देह अभिमानी कर्मकाण्डियों के लिए है। अगर आप का सिक्ख बनकर स्थूल कर्मकाण्ड के बंधन ही न टूटे तो यमराज के बंधंनों से जीव कैसे मुक्त होगा?" गुरु जी ने हँसते हुए सिक्खों से कहा, **'तुम लोगों ने तो निर्मले संत की शिकायत कर दी। ब्रह्मज्ञानी के ऊपर किसी प्रकार के कर्मकाण्ड (विधि-निषेध) का बंधन नहीं है।'**

आठवीं बख्शीश-

मालवे का भ्रमण करते समय गाँव दीने से मुक्तसर को जाते हुए सद्गुरु जी गाँव सरावां, बहिबल (जिला फरीदकोट) में एक रात्रि के लिए ठहरे। उस इलाके में अकाल पड़ा हुआ था। सद्गुरु जी ने फुरमाया, "एक साथ सभी का लंगर बनाने की बजाय गाँव वाले दो-दो सिंहों को अपने घर ले जाकर लंगर छका (खिला) लाएँ।" इसी प्रकार किया गया। अंतर्यामी सद्गुरु जी लंगर छक कर आने वाले सभी सिंहों से पूछने लगे कि तुम लोग क्या-क्या छक कर आए हो? किसी ने कहा हलवा, किसी ने पराँठे, किसी ने कहा खिचड़ी-दूध, किसी ने दलिया, किसी ने बाजरे की, किसी ने चने की मिस्सी रोटी बताई।

जब भाई मैलागर सिंह, भाई गज्जा सिंह से पूछा तो उन्होंने प्रसन्न मुख से कहा, "हम लोगों ने तो अति स्वादिष्ट उत्तम भोजन खाया है।" परंतु गाँव के लोग बोले, "जिस सिक्ख के घर ये भोजन करने गए थे, उसके घर में तो खाने के लिए कुछ भी नहीं है। ये झूठ बोल रहे हैं।" जब सद्गुरु जी ने गाँव वाले प्रेमी से पूछा तो उसका गला भर आया। चरणों में गिर पड़ा और बोला, "सच्चे पातशाह! मेरे घर में छकाने के लिए कुछ भी नहीं है। इन संतोषवान सिक्खों के आगे पानी में भिगोकर जंड की फलियाँ और सूखी पीलकें (एक

प्रकार का जंगली फल) रख दी थीं, वे यही सब कुछ प्रेम से छककर अरदास करके वापस आ गए हैं।"

सद्गुरु जी अति प्रसन्न हुए! श्री मुखवाक् से तीन बार धन्य सिक्खी! धन्य सिक्खी! धन्य सिक्खी! कहा। साथ ही यह भी कहा कि, "जो सब तरह के पदार्थ होते हुए भी विहंगमों (विरक्त) संतों सिक्खों को न खिलाए और जो सिक्ख-साधु-गरीब सिक्खों से स्वादिष्ट पदार्थों की माँग करें, दोनों को धिक्कार है। सच्चा सिक्ख वह है जो वित्त अनुसार गुरु सिक्खों की सेवा करे। जिस प्रकार इस गाँव वाले प्रेमी ने की है। संतोषवान सिक्ख वह है जो रुखे-सूखे भोजन को अमृत की तरह आनंदपूर्वक ग्रहण करे जैसे भाई मैलागर सिंह और भाई गज्जा सिंह ने किया है, वह कार्य महान है।" सूरज प्रकाश में लिखा है:

गुरु करयो सिक्खी धन्य धन्य। देख भाउ को भए प्रसन्न।
अैस सिक्ख वी बीच पन्थ सुंहाए। सती दे संतोखी खाए।

नौवीं बख्शीश-

एक बार गुरु की काशी 'तलवंडी साबो' दीवान में बैठे हुए सद्गुरु जी ने अपने आनंद (मौज) में फुरमाया, "संगत में से जिस प्रेमी की जो इच्छा है सो माँग ले।" माँगने वालों की भीड़ लग गई और शोर हो गया। कोई पुत्र माँग रहा है, कोई दूध माँग रहा है, कोई धन माँग रहा है, कोई सुंदर कोठियों की याचना कर रहा है। माँगें माँगने की हर एक को जल्दी है। उस समय कुछ सिक्ख शांतचित्त निश्चिंत बैठे थे। इनके मन में किसी प्रकार की कोई कामना नहीं थी। सद्गुरु जी ने सारी संगत की कामनाएँ पूर्ण करके, शांतचित्त सिक्खों को भी पूछा, "आप लोग भी अपनी इच्छा प्रकट करो। सारी संगत माँगें माँग रही है।" इस मंडली ने हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक कहा, "सच्चे पातशाह! आप जी ने हम लोगों को सब कुछ प्रदान किया है। हम पर आपकी कृपा है। नाम-वाणी, ब्रह्मविद्या आप जी ने बख्शी हुई है। इसलिए हम लोगों को सांसारिक पदार्थों की कोई कामना नहीं है।"

सद्गुरु जी ने प्रसन्नमुख फुरमाया, "संसारी पदार्थों का त्याग केवल संत ही कर सकते हैं। ब्रह्मविद्या का आंनद भी केवल निर्मले संत ही ले सकते हैं।" पंडित निहाल सिंह जी ने कितना सुंदर लिखा है:

श्री गुरु लगायो एक दिन मै दीवान अैसो,
सब को बुलाइ कहयो माँगो जो रिदे भले।

काहूं धन, काहूं धाम, काहूं अश्व, अभिराम काहू,
कहयो भूखन जराऊ जो सजे गले।
काहूं शस्त्र, काहूं बस्त्र, संत खुशी मृगराज,
सब को दवायो जो जो भायो प्रेम मै ढले।
सुपन जयो जानि के पदारथ न मांगे जिनों,
नाम धन मांगयो तां को कहयो ये निर्मले।

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं:

सुपन समान जग जान जिने नाम मांगिओ,
खुशी हूए बोले गुर एही मेरे निरमले।

पंडित तारा सिंह जी नरोत्तम ने लिखा है, "इस समय सद्गुरु जी ने सिक्खों के तीन भेद बना दिए। सिंह, सिक्ख और निरमले।"

भाई संतोख सिंह जी ने भी 'गुरु प्रताप सूरज' में अंकित किया है:

गुर का दल शेर का झल्ल। को घाले को पैथे मल्ल।
को जूझे को सिमरे नाम। को सेवे सतसंग महान।22।
लूटह जूझह सिंघ कहीजे। सिमरहि नाम सु सिख्ख लखीजे।
सत संग सेवे चित लाइ। तां ते निरमल नाम सदाइ।।23।

दसवीं बख्शीश-

जब दशम सद्गुरु जी ने श्री हजूर साहिब (नंदेड़) में ज्योति-ज्योत समाने का संकल्प लिया तो राज भाग की इच्छा वाले शस्त्रधारी खालसे को बाबा बंदा सिंह जी की जत्थेदारी (नेतृत्व) में दुष्टों का संहार करने के लिए पंजाब की ओर भेज दिया। उस समय भाई करम सिंह जी, भाई राम सिंह जी, भाई गण्डा सिंह जी, भाई चंदन सिंह जी, भाई संत सिंह जी, भाई दरगाहा सिंह जी, भाई मान सिंह जी, भाई गज्जा सिंह जी, भाई मैलागर सिंह जी, भाई केसरा सिंह जी, भाई वीर सिंह जी, भाई सैणा सिंह जी, भाई सोभा सिंह जी आदि 25 नाम अभ्यासी विद्वान निर्मले संतों को सद्गुरु जी ने फुरमाया, "सिंघो! अब ईश्वरीय आदेश के अनुसार हम ज्योति-ज्योत समा जाएँगे। आप सारे संत, देश के कोने-कोने में चले जाओ। नाम-वाणी, कथा-कीर्तन का प्रवाह चलाओ। गुरु नानक की सिक्खी का गाँव-गाँव, घर-घर संदेश पहुँचाओ। सिंघ (सिंह) धर्म की रक्षा करेंगे, तुम लोग धर्म का प्रचार करो। अमृत

प्रचार, विद्या का प्रसार करो, गुरु नानक जी सदा अंग-संग रहेंगे। जाओ! गुरु की खुशियाँ प्राप्त करो।"

स० शमशेर सिंह जी 'अशोक' कितने ही सुंदर शब्दों में व्यक्त करते हैं-

"निर्मले साधुओं के भगवें अथवा सफेद भेष को देखकर किसी तरह की नुक्ताचीनी करनी उचित नहीं लगती और उनका यह भेष नियमानुसार निंदनीय नहीं माना जा सकता। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिक्ख धर्म का प्रचार केवल पंजाब तक ही सीमित नहीं करना था। इसलिए निर्मले साधुओं को अतीत भेष धारण करने की छूट देकर उन्होंने सिंहों को बनारस से वापस आते ही देश के विभिन्न इलाकों में भेजा और फिर आनंदपुर छोड़कर मालवे के इलाके में जाते समय दमदमे से नंदेड़ तक उन्हें अपने साथ रखा। पंडित करम सिंह जी, दरगाहा सिंह आदि निर्मले साधु जिनसे आप प्रतिदिन पुरातन ग्रंथों की कथा श्रवण करते थे, नंदेड़ तक आपके साथ रहे।" (निर्मल संप्रदाय, पृ० 149)

❑

3 श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला की स्थापना

निर्मले संत विद्वान नम्रताशील, विचारवान, विवेकवान और बुद्धिशील होते हैं। सभी को समदृष्टि से देखते हुए सिक्ख पंथ और हिंदू धर्म के ग्रंथों, तीर्थों और महापुरुषों का सत्कार करते हैं। ये संत किसी प्रकार के मादक (नशीले) और तामसी पदार्थों का प्रयोग नहीं करते। पवित्र जीवन, सिमरन वाले तथा परोपकारी होते हैं। इसलिए गुरुवाणी में निर्मले संतों को 'अपार' कहा गया है। यह महापुरुष निश्चय ही 'अपार' होते हैं।

कुम्भ पर्वों पर धर्म प्रचार, सत्संग, विश्राम और भोजन की व्यवस्था के लिए निर्मले संतों ने 'अखाड़ा' स्थापित करने का विचार तो सन् 1743 ई० में ही बना लिया था, परंतु इस विषय पर पहली सामूहिकता (एकत्रता) सन् 1759 ई० में की गई। इसके बाद कई बार विचार-विमर्श होता रहा। अंतः द्वादशी दिन शुक्रवार सन् 1862 ई० के शुभ अवसर पर पटियाला में 'धर्म-ध्वजा' के स्थान पर 'पंचायती अखाड़ा निर्मला' (श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा) विधिवत् रूप से स्थापित किया गया।

इस समय जहाँ निर्मल भेष के बड़े-बड़े विद्वान, महंत, संत, विरक्त, जपी, तपस्वी सभी महापुरूष एकत्रित हुए, वहीं पंजाब के राजाओं-महाराजाओं ने भी प्रसन्नतापूर्वक धन-राशि और गाँव दान किए। महाराजा नरिंद्र सिंह जी पटियाला ने 82,000/- रुपये नकद और भैणी तथा झण्डी दो गाँव दान में दिए। महाराजा भरपूर सिंह जी नाभा नरेश ने 16,000/- रुपये नकद और 'हरीका' गाँव दान में दिया। महाराजा सरुप सिंह जी जींदपति ने 20,000/- रुपये नकद व बलमगड़ और मण्डलावाला-दो गाँव अखाड़े को दान में दिए। इसी प्रकार अन्य राजाओं, रईसों, सरदारों ने भी इस कार्य के लिए दिल खोलकर दान किया। विरक्त शिरोमणि, तपोनिधि, ब्रह्मज्ञानी संत बाबा महिताब सिंह जी को पहला 'श्री महंत' नियुक्त किया गया।

श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला (श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा) का केंद्रीय स्थान कनखल (हरिद्वार) में निश्चित किया गया। इस कार्य के लिए महाराजा नरिंद्र सिंह जी पटियाला पति ने देवनदी गंगा के किनारे पर महाराजा करम सिंह वाली हवेली दान में दी। साथ में 'धर्म-ध्वजा'

पटियाला वाला स्थान भी अखाड़े की ब्रांच के लिए दे दिया। (इस लेख में हम आगे 'पंचायती अखाड़ा निर्मला' का नाम 'श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा' कनखल (हरिद्वार) लिखेंगे।)

'श्री महंत' की पदवी आजीवन बनाई गई और उनके अधीन चार मुखिया महंत, कुठारी, पुजारी और कारोबारी इत्यादिक अनेक प्रबंधक नियत किए गए। तीनों सरकारों (पटियाला, नाभा, जींद) द्वारा अखाड़े का लिखित रूप में विधान उर्दू भाषा में लिखा गया, जिसका नाम 'मसौदा दुसतूर-ल-अमल' है, जिसे हम यहाँ अंकित कर रहे हैंः-

मसौदा दुस्तूर-ल-अमल (उर्दू में) सरकारी मोहर

महात्मा भाई महिताब सिंह जी ने सरकार से इस तरह बयान किया कि साधु, संन्यासी, वैरागी और उदासी श्री गंगा जी और प्रयाग वगैरह पर बमौके मेलेहाय अपने अखाड़ों में जुदा-जुदा भंडारा करते हैं चूँकि इस भंडारे करने का पुण्य और धर्म बहुत है, अगर सरकार से उस धर्म की मर्यादा कायम हो जाए तो बहुत मुनासिब (उचित) है। चुनाँचे सरकार को यह हिदायत भाई साहब के पक्ष से बहुत बहुत पसंद आई। लिहाजा सरकार से वास्ते मुसरफ इस धर्म मर्यादा को दो दिह जमा 4100 रुपये साल तमाम आज रुइ सनद अलहिदा मिति सावण सुदी 12 साल 1919 माफवा मरकुऊल-कलम किए गए और चूँकि कायमी इस मर्यादा की बानजर होने कार सवाब और धर्म अर्थ के सरकार को आज तहदिल मंजूर है। लिहाजा जायने सरकार से 82,000/- रुपये यकलखत बतौर पेशगी बअंदाजे आमदनी 20 साल मुवाजियाति मजकूर इलावा आज आमदनी देहांत मजकूद दिया जाकर बाइतिफाक वा सलाह चाचा साहब राजा स्वरूप सिंह साहब बहादुर वालिये जिंद वा बरादर अजीज राजा भरपूर सिंह साहब बहादुर वालिये नाभा यह दरतुरुल अमल, वास्ते अमल दरामद आइंदा, इस धर्म मर्यादा के बाइंदराज दफयाति मुफसला जैल मुकर्रर किया गया, ताकि बमूजब इसके अमल बरामद होता रहे। इसके खिलाफ अमल में न आवे।

दफा 1 :- भाई साहब महात्मा भाई महिताब सिंह जी मालिक अखाड़े के हैं। उनके पीछे से इनका जानशीन मालिक होगा।

दफा 2 :- जो 82,000/- रुपये बतौर पेशगी फ़ीस साल बानज़र इजराय कारोबार धर्म अर्थ अखाड़े धर्म ध्वजा सिक्खान वा साधान निर्मला पंथ गुरु खालसा जी दिये गए हैं, चाहिए कि हर चाहार महन्तान-मुकररा आज आमदनी सूद वातजारत वगैरह व्यापार उसके यानि कारोबार मुतल्लका, अखाड़ा मौसूफ बातामीर मकानात जारी रखें और जमा असल से सर्फ न करें।

दफा 3 :- बंदाबस्त वा निगाह दासत खजाना अखाड़ा जुम्मे हर एक पर अखाड़े के रहेगा और भाई साहब को कुंजी खजाने की जिसके पास रखनी मंजूर होगी, उसके पास रहेगी।

दफा 4 :- जनाब भाई साहब महात्मा भाई महिताब सिंह जी को अख्तियार हासिल है कि अपनी मर्जी और सलाह से अदला-बदली महंतों की करते रहें।

दफा 5 :- जो सिक्ख-साधु अखाड़े में हों पहले उनसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के ऊपर हाथ रखवाया जाए कि रुपया अपने पास न रखें। जो जिसके पास हो खजाने में दाखिल कर देवे।

दफा 6 :- जो कोई सिक्ख अच्छा और लायक हो, भाई साहब उसको ओहदा महंती और दूसरे कारोबार अखाड़े पर मुकर्रर करें। जो कोई रहतनामे (अखाड़े की रहत मर्यादा से) बर्खिलाफ हो वास्ते मौकूफी और सजाए उसकी के भाई साहब को अख्तियार है।

दफा 7 :- भाई साहब मौसूफ अपनी जिंदगी में जिसको अपनी जगह कायम करना चाहें बासलाह वा तजवीज़ तीनों सरकारों को मुकर्रर करें।

दफा 8 :- बशरते कि बाद में भाई साहब के उनका जाननशीन चलन और चला रवैये से अच्छा नहीं होगा तो वास्ते मौकूफी उसको और कायम करने बजाय, तीनों सरकारों को अख्तियार हासिल है।

दफा 9 :- दरबाब बंदोबस्त वा इजराय कारोबार अखाड़े मज़कर बामूजब दस्तूर अखाड़ा पंचायती के, अमल दरआमद होता रहे। मिती सावण सुदी 12 बारह, साल 1919 मुताबिक दश सफर सन् 1278 हिजरी गुरुवार।

मोहर निशानी
(कुलवन्त राय दीवान)

देश में धर्म प्रचार के लिए 'रम्मत अखाड़ा' भी कायम किया गया। श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा स्थापना दिवस से लेकर आज तक धर्म प्रचार करता आ रहा है। कुम्भ पर्वों पर हजारों श्रद्धालु श्री निर्मल पंचायती अखाड़े की छावनी में भोजन, भजन और विश्राम करते हैं। सत्संग द्वारा अपने जीवन को सफल बनाते हैं। अखाड़े की प्रवेश शाही का दृश्य देखने योग्य होता है। स्नान की शाहियाँ भी षड्-दर्शन साधु-समाज से अधिक प्रभावशाली होती हैं। प्रथम श्री महंत से लेकर अब तक दस 'श्री महंत' इस पदवी पर विभूषित हो चुके हैं, जिनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है-

पहले श्री महंत बाबा महिताब सिंह जी :- गाँव लेहल बड़ी, जिला संगरुर, गुरु का नाम धर्म सिंह, जन्म सन् 1821 ई०। सन् 1862 से 1871 ई० तक 9 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 50 वर्ष।

दूसरे श्री महंत पंडित राम सिंह जी कुबेरीए :- जन्म 1818 ई० गाँव चीमा, जिला संगरुर, गुरु पंडित मान सिंह कुबेरीए, सन् 1871 ई० से सन् 1896 ई० तक 25 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 78 वर्ष।

पंडित राम सिंह जी कुबेर वालियां ने क्रमवार पंडित तारा सिंह जी 'नरोत्तम' और पंडित दीवान सिंह 'ठीकरीवाला' को नायब श्री महंत बनाया था। पंडित तारा सिंह जी 'नरोत्तम' का जन्म सन् 1822 ई० गाँव कारवा, जिला गुरदासपुर, गुरु गुलाब सिंह जी। सन् 1875 ई० से सन् 1891 ई० तक 16 वर्ष नायब श्री महंत रहे। कुल आयु 69 वर्ष थी। पंडित दीवान सिंह जी का जन्म 1833 ई० गाँव ठीकरी वाला, गुरु हीरा सिंह। सन् 1891 ई० से 1896 ई० तक पाँच वर्ष उप श्री महंत रहे। कुल आयु 63 वर्ष थी।

तीसरे श्री महंत पंडित उधव सिंह जी न्यायिक :- जन्म सन् 1841 ई० गाँव कल्ला, जिला अमृतसर, गुरु गुलाब सिंह, सन् 1896 ई० से सन् 1905 ई० तक 9 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 68 वर्ष थी।

चौथे श्री महंत पंडित साधु सिंह जी पटियाले वाले :- जन्म सन् 1845 ई०, गाँव सरलीयां कलां, जिला अमृतसर, गुरु गुलाब सिंह जी गिड़वड़ी वाले, सन् 1905 ई० से सन् 1908 ई० तक 3 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 63 वर्ष थी।

पाँचवें श्री महंत पंडित राम सिंह जी हरीके वाले :- जन्म सन् 1861 ई० गाँव हरीके कलां, जिला मुक्तसर, गुरु मसतान सिंह, सन् 1908 ई० से सन् 1927 ई० 19 वर्ष तक श्री महंत रहे। कुल आयु 66 वर्ष थी।

पंडित राम सिंह जी हरीके वालों के समय में पंडित मोहर सिंह जी पटियाले वाले उप श्री महंत रहे, जिनका जन्म सन् 1863 ई०, सन् 1920 से सन् 1927 तक 8 वर्ष उप श्री महंत रहे। कुल आयु 64 वर्ष थी।

छठे श्री महंत पंडित दया सिंह जी उगोवाले :- जन्म 1868 ई० गाँव हीरो खुरद, जिला पटियाला, गुरु मलूक सिंह। सन् 1927 ई० से सन् 1931 ई० तक 4 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 61 वर्ष।

सातवें श्री महंत पंडित जीवन सिंह जी काशी वाले :- जन्म सन् 1876 ई०, गाँव गोंदवाल, जिला सरगोधा (पाकिस्तान), गुरु मख्खन सिंह। सन् 1931 ई० से सन् 1934 ई० तक 3 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 58 वर्ष थी।

आठवें श्री महंत पंडित सुच्चा सिंह जी पिण्डीघेब वाले :- जन्म सन् 1886 ई० गाँव भिण्डर कलां, जिला मोगा। पिता स० नत्था सिंह, माता महताब कौर, गुरु भगत सिंह। सन् 1935 ई० से सन् 1986 ई० तक 51 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 100 वर्ष।

नौवे श्री महंत पंडित बलबीर सिंह जी शास्त्री पटना वाले :- जन्म सन् 1925 ई०, गाँव और जिला मुक्तसर, पिता स० काला सिंह, माता प्रताप कौर, गुरु हरदेव सिंह, सन् 1986 से सन् 1993 ई० तक 7 वर्ष श्री महंत रहे। कुल आयु 68 वर्ष थी।

दसवें श्री महंत पंडित ज्ञानदेव सिंह जी (वर्तमान) :- जन्म सन् 1940 ई० गाँव बहिलोलपुर, जिला मेरठ (यू०पी०), पिता स० दरिआव सिंह, माता गंगा देवी, गुरु स्वामी लाल सिंह, सन् 1993 ई० से श्री महंत की पदवी पर विभूषित हैं।

आपके समय में श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, निर्मल भेष, षड्-दर्शन साधु-समाज में विशेष सत्कार प्राप्त कर रहा है। निर्मल पंथ के लिए यह गौरव की बात है कि श्री निर्मल पंचायती अखाड़े के वर्तमान 'श्री महंत' पूर्व महापुरुषों की तरह तप-तेज, प्रताप वाले, तपोनिधि, जितेंद्रिय, विरक्त शिरोमणि महापुरुष हैं, जिनका भारतीय षड्-दर्शन साधु समाज में परम सत्कार है और सर्वोपरि स्थान है। आप की अध्यक्षता में निर्मल पंथ का भविष्य उज्ज्वल है।

निर्मल संतों के बारे में ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं:-

दसम गुरु के वकत में हुते निरमले जोइ।
रहिते बने बिरकत बहु, मिले पंथ मैं सोइ।।
सतो गुनी क्रिया थै रखते। हरि गुरु भगती का रस चखते।।
शास्त्र सति थे पढते सुनते। चरना ज्ञान ब्रह्मातम धुनते।।
भजन मांहि थे निसदिन रहिते। सतिगुर तिनै निरमले कहिते।।
बीच सभा सो जबै आवते। आए निरमले सभि बतावते।।
ब्रह्म ज्ञान बिन चरचा औरैं। गुरु भी तबि न चलाते गौरैं।।
और काम नहिं तिनै बताते। विद्या पढन पढ़ान रखाते।। (पन्थ प्रकाश, पृ० 2799)

सचखंड हजूर साहिब (नांदेड़) में ज्योति ज्योत समाने से पहले गुरु कलगीधर स्वामी ने निर्मले संतों को तीर्थों, शहरों, गाँवों में डेरे (आश्रम) स्थापित करने और देश-विदेश में भ्रमण करके नाम, वाणी, सिक्खी का प्रचार, अमृत संचार द्वारा सर्व प्राणी मात्र को श्री गुरु नानक देव जी के चरणों से जोड़ने की आज्ञा की। गुरु जी का संदेश सुनकर 25 निर्मले संतों की संत-मंडली सद्गुरु जी की स्तुति करके, नमस्कार अरदास करके गुरु जी की आज्ञा अनुसार अलग-अलग इलाकों और तीर्थों पर चली गई। संत करम सिंह जी काशी चले गए, संत दरगाह सिंह जी कनखल (हरिद्वार) चले गए, संत मान सिंह जी कुरुक्षेत्र चले गए, संत प्रकाश सिंह जी खडूर साहिब पहुँच गए, संत कोइर सिंह जी श्री अमृतसर चले गए। इस प्रकार सद्गुरु जी की आज्ञा अनुसार सभी संत नाम-वाणी, सिक्खी और अमृत का प्रचार करने के लिए संपूर्ण देश में फैल गए।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज 1708 ई० में ज्योति ज्योत समा गए। भाई दया सिंह, भाई संतोख सिंह आदि काफी सिक्ख सचखंड श्री हजूर साहिब (नांदेड़) में गुरु जी के स्थान की सेवा-संभाल करते हुए कथा-कीर्तन और लंगर का प्रवाह चलाते रहे। निर्मले संत सारे देश में गुरूवाणी, गुरुमत, सिक्खी का प्रचार और अमृत संचार करते रहे। गुरुमुखी पढ़ाने, गुरूवाणी की पोथियाँ लिखने, सद्गुरुओं के उपकारों की चर्चा करने, बच्चों के सिरों पर केश रखवाने, पंथ के संघर्ष में सिक्ख बच्चों को शामिल करने की सेवा करते रहे।

❑

4 निर्मल पंथ की रहत (आचार-व्यवहार) मर्यादा

इतिहास में लिखा है एक दिन भाई दरबारा सिंह जी ने भाई राम कोइर जी से प्रश्न किया "अगर गुरु के सिक्ख संसार से उपराम होकर साधु बनना चाहते हों तो किस सम्प्रदाय का भेष धारण करें, जिससे गुरु के गुरुसिक्खों की सिक्खी मर्यादा भी कायम रहे।"

आगे से उत्तर में भाई रामकोइर जी ने फुरमाया कि, "गुरु के सिक्खों को निर्मल सम्प्रदाय के साधु बनना चाहिए। निर्मल पंथ दस सद्गुरुओं को ईश्वर की ज्योत मानता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को अपना इष्ट मानता है। पाँच प्यारों से अमृतपान करना ज़रुरी मानता है। अमृतपान के बिना निर्मला संत बन ही नहीं सकता। गुरु के गुरुद्वारों, तीर्थों, बुंग्यों, शहीदगंजों, अंगीठयों, समाधों, तख्तों, गुरुमतों, हुक्मनामों का पूर्ण सत्कार करता है। गुरूवाणी, कथा-कीर्तन का प्रचार करता है। जन-साधारण को गुरू साहिबान और गुरूघर से परिचित करवाकर गुरू के साथ जोड़ता है।"

मास, मदिरा (शराब, अफ़ीम, भांग, तम्बाकू) आदि मादक पदार्थों और परस्त्री का निषेध करता है। अन्य मतों की तरह निर्मल पंथ में अज्ञान और अंधविश्वास नहीं है। उदासियों, संन्यासियों, बैरागियों, नाथों, जोगियों और जैनियों की तरह आम जनता से अलग बनकर नहीं रहता है। सिर-मुँह मुण्डन करना, बड़ी-बड़ी जटाएँ रखना, शरीर पर भस्म मलना, लिंग-कान आदि का छेदन करना निर्मल पंथ में नहीं है। निर्मले संत स्वाभाविक रूप से रहते हैं। सुंदर वस्त्र पहनते हैं। भगवें अथवा सफेद दस्तारें और अन्य वस्त्र भी भगवें अथवा सफेद ही पहनते हैं।

❑

5 निर्मले महापुरूषों की सर्वपक्षी सेवा

निर्मले महापुरुषों ने सद्गुरु जी के आदर्श अनुसार सेवा को मुख्य रखा है। मानवता की भलाई के लिए परोपकार कर रहे हैं। जन-साधारण का आत्मिक और सांसारिक नेतृत्व करके सन्मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं। रुढ़िवादी न रहकर आवश्यकतानुसार सब प्रकार की सेवा करते हैं।

मण्डलियों द्वारा गाँव-गाँव धर्म प्रचार करते हैं। छोटे-बड़े गाँवों में डेरे (आश्रम) स्थापित करके ज्ञान का दीपक जगाते हैं। गाँव के बच्चों को गुरुमत की शिक्षा देते हैं।

गुरूमुखी विद्या पढ़ाकर गुरूवाणी के पाठी और ज्ञानी बना रहे हैं। चिकित्सा द्वारा सभी रोगों का ईलाज भी करते हैं और आयुर्वेद भी पढ़ाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी और अन्य ग्रंथ लिखकर डेरों, धर्मशालाओं में स्थापित करते हैं। बड़े-बड़े तीर्थों, मेलों पर कथा-कीर्तन और शास्त्रार्थ करके गुरूमत-गुरूवाणी को सर्वोपरि प्रसिद्ध करने में लगे हैं। विद्यालय चलाकर विद्यादान करते हैं।

बड़े-बड़े ग्रंथों की रचना करके गुरुमत सिद्धांत का निरुपण करना, गुरूवाणी के टीके, कोश, साहित्य, दर्शन, छन्द शास्त्र, इतिहास के सैंकड़ों ग्रंथों की रचना करके, कई श्रद्धाहीनों की तरफ से गुरुमत के खण्डन में लिखे ग्रंथों का खंडन करके, गुरुमत सिद्धांतों का प्रमाण सहित मण्डन करना, ग्रंथ रचना के अतिरिक्त पत्रकारी में बहुत बड़ा योगदान दिया है। अखबारों द्वारा उल्लेखनीय प्रचार किया है। पंथ संबंधी प्रत्येक कार्य में आगे होकर अपना योगदान देते रहे हैं। देश की आज़ादी की लहर को आरंभ करने वाले निर्मले संत ही हैं। गुरुद्वारा सुधार लहर और स्वतंत्रता आंदोलन में भी सब से आगे रहे हैं। निर्मल भेष की देश सेवा, धर्म प्रचार, विद्या प्रचार उल्लेखनीय है। इन महापुरुषों के सर्वपखी निष्काम परोपकारों का संक्षेप सार पाठकों को दृष्टिगोचर करवा रहे हैं।

कथा व्याख्या

निर्मल भेष में बड़े-बड़े विद्वान, कथाकार, व्याख्याकार, महापुरुष हुए हैं जिन्होंने कथा व्याख्यान से हजारों जीवों को सन्मार्ग पर लगाया। गुरूवाणी, गुरूसिक्खी से जोड़कर

लोक-परलोक सफल किए। चाहे कथा व्याख्या का निर्मल भेष के सभी महापुरुषों को धुर (ईश्वर) से ही वरदान प्राप्त है परंतु कुछ ऐसे आलौकिक, चमत्कारी महापुरुष भी हुए हैं जिनकी प्रवचन शैली, पद-पदार्थों का वर्णन, प्रमाण-दृष्टांत तथा शब्दावली अपूर्व थी। उनके कथन में रस और मधुरता थी। प्रवचन यथार्थता और अपने सिद्धांत को सिद्ध करने की शक्ति थी।

पंडित हरी सिंह जी कथा वाचक, पंडित दीवान सिंह जी ठीकरी वाले, पंडित नारायण सिंह जी विरक्त ऋषिकेश, पंडित फौजा सिंह जी मण्डेली वाले, पंडित काला सिंह जी मण्डलेश्वर, पंडित आनंद सिंह जी मण्डली वाले, ज्ञानी सरोवर सिंह जी, श्री महंत पंडित राम सिंह जी हरीके, महंत हाकम सिंह जी, डेरा बाबा मिश्रा सिंह जी अमृतसर, पंडित नरोत्तम सिंह जी निर्मल क्षेत्र अमृतसर, संत बाबा निक्का सिंह जी 'विरक्त', पंडित कल्याण सिंह जी, पंडित हरदेव सिंह जी विरक्त कुटिया कनखल, प्रसिद्ध इतिहासकार ज्ञानी ज्ञान सिंह जी आदि प्रसिद्ध हुए हैं जिनका प्रभाव अभी तक श्रोताओं के मन पर अंकित है।

पंडित हरी सिंह जी (पंजाब सिंध क्षेत्र) प्रसिद्ध वक्ता थे, संत मण्डली सहित नेपाल की यात्रा पर गए जिस मंडली में पंडित ईशर सिंह जी दौधर वाले जैसे विरक्त, वीतराग महापुरुष शामिल थे। एक दिन नेपाल सम्राट ने षड्-दर्शन साधु समाज को राजमहल में बुलाया। बहुत बड़ी सभा लगी और बड़े-बड़े वीतराग महात्मा उसमें पधारे। उस समय नेपाल नरेश ने उपदेश श्रवण करने की इच्छा प्रकट की। संत सतनाम सिंह जी के कहने पर पंडित हरी सिंह जी ने प्रवचन किया, प्रवचन रूपी अमृतवाणी सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए। गुरूवाणी, वेद, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों के प्रमाणों द्वारा अमृतपान करके आप का भक्त बन गया। दस हज़ार रुपये भेंट किए जिनकी तरफ पंडित जी ने बिल्कुल ध्यान न दिया। उस समय आप ने राजधानी काठमांडू में गुरुद्वारा साहिब स्थापित करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया।

श्री महंत पंडित राम सिंह जी हरीके वाले भी महान व्याख्यान वाचस्पति थे। सम्वत् 1977 बि० (1920 ई०) को उज्जैन कुंभ पर्व पर आप जी का प्रवचन सुनकर महाराजा ग्वालियर अत्यंत प्रभावित हुआ। नम्रतापूर्वक निमंत्रण देकर गणेश चतुर्थी को ग्वालियर बुलाया और फूलबाग में आपको ठहराया गया। षड्-दर्शन साधु समाज भारी संख्या में जुटा था। गणेश चतुर्थी के पर्व पर आप को महल में बुलाया गया। षड्-दर्शन साधु समाज भी

उपस्थित हुआ परंतु श्री महंत जी को महाराजा ने अपने दरबार में उच्च आसन पर बिठाया। महाराजा ने गणेश जी की प्रतिमा के आगे स्वयं कीर्तन किया।

श्री महंत जी महाराज का विद्वतापूर्ण व्याख्यान हुआ जिसे सुनकर महाराजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। साथ ही एक दिन फिर प्रवचन सुनाने का निवेदन किया। श्री महंत जी ने योग्य समय जानकर श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी महाराज का ग्वालियर के किले में कारावास वाला प्रसंग सुनाया। महाराजा सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि फूलबाग में गुरुद्वारे की स्थापना कर दी। श्री महंत जी की और संत मण्डली की सत्कार सहित पूजा करके विदा किया। एक हजार रुपये वार्षिक पूजा निश्चित की।

पंडित नारायण सिंह जी की कथा श्रवण करने के लिए हजारों व्यक्ति पहले ही सभा में आकर बैठ जाते थे। जो भी कथा-उपदेश सुनता था, नाम-वाणी, गुरुसिक्खी से जुड़ जाता था। स्वामी लाल सिंह जी (प्रसिद्ध निर्मल स्वामी) जब वेदांत पर प्रवचन करते थे तब हजारों व्यक्तियों के मन एकाग्रचित्त हो जाते थे।

पंडित संत बाबा निक्का सिंह जी 'विरक्त' निर्मल आश्रम ऋषिकेश श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मुखवाकों (हुक्मनामों) की कथा किया करते थे जिसको सुनकर श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते थे।

पंडित अर्जुन सिंह जी 'मुनि' शास्त्री व्याकरणाचार्य हरिद्वार, पंडित हकीकत सिंह जी अरविंद रतोवाल, श्रीमान् 108 श्री महंत पंडित बलबीर जी शास्त्री वेदान्ताचार्य कनखल, पंडित बलबीर सिंह जी 'वियोगी' संतपुरा दिल्ली, महंत बुड्ढा सिंह जी निर्मल आश्रम ऋषिकेश, महंत बिशन सिंह जी 'क्रीट' हरिद्वार, ज्ञानी जगत सिंह जी अंबाला, पंडित गुरदीप सिंह जी 'केसरी' वाराणसी, संत बाबा मलकीत सिंह जी बंगिया वाले प्रधान निर्मल दुवाबा, महन्त साधु सिंह जी चकविंहडल प्रधान सर्वभारतीय निर्मल महामण्डल आदि अनेक महापुरुष महान व्याख्याता वाचस्पति हुए हैं।

राग कीर्तन

साहित्य और संगीत विद्वत्ता के चिह्न माने जाते हैं। निर्मले महापुरुष साहित्य और संगीत में भी निपुण थे। संगीत, राग और कीर्तन में अकथनीय योग्यता रखने वाले कई महापुरुष हुए हैं जिन्होंने राग और कीर्तन द्वारा नाम-वाणी की सारे देश में अमृत वर्षा की है। महापुरुषों की राग-कीर्तन द्वारा की गई सेवा स्वर्णिम अक्षरों में अंकित करने योग्य है।

श्रीमान् संत बाबा मिश्रा सिंह जी (अमृतसर) प्रसिद्ध रागी और कीर्तनीए हुए हैं। आप जी कई वर्ष श्री हरिमंदिर साहिब अमृतसर में बिलावल की चौकी भरते रहे हैं। आप केवल रागी ही नहीं थे अपितु नाम-वाणी के अभ्यासी, उच्च जीवन वाले ब्रह्मज्ञानी भी थे इसलिए आप के कीर्तन में रस और मधुरता थी। शहर और इलाके की संगत, डेरों (आश्रमों) के महापुरुष आप का कीर्तन श्रवण करने के लिए पहले ही श्री हरिमंदिर साहिब में पहुँच जाते थे। आप जी का (आश्रम) डेरा कीर्तन की टकसाल (पाठशाला) के रूप में प्रसिद्ध है। इस स्थान से अनेक लोगों ने राग तथा कीर्तन की शिक्षा प्राप्त की। इस डेरे में संत कपूर सिंह जी (जन्म गाँव कैरों जिला अमृतसर) महान रागी हुए हैं जो श्री हरिमंदिर साहिब में कीर्तन की चौकी किया करते थे। यहाँ से सेवा निवृत्त होने के बाद महाराजा भूपिंदर सिंह जी पटियाला के राज दरबार में रागी की पदवी पर सेवा करते रहे हैं। आप जी ने राग विद्या के विषय में एक ग्रंथ भी लिखा है। भाई मखन सिंह, भाई जवाहर सिंह, भाई लाभ सिंह (तीनों प्रज्ञाचक्षु) संत कपूर सिंह जी के शिष्य थे। भाई मखन सिंह जी ने 50 वर्ष श्री हरिमंदिर साहिब श्री अमृतसर में 'आसा की वार' का कीर्तन किया। कोई कितनी भी पूजा भेंट देता था परंतु आप श्री हरिमंदिर साहिब जी के कीर्तन का नियम नहीं तोड़ते थे। ताऊस बजाने में आप अत्यंत प्रवीण थे।

गाँव दौधर जिला मोगा में महंत वीर सिंह जी राग के महान विद्वान और गुरुमुखी के लेखक भी थे। छोटे-छोटे नेत्रहीन बच्चों को पढ़ाना, वाणी कण्ठस्थ करवाना, राग सिखाना, केशी स्नान करवाना, वस्त्र धोना, सैंकड़ों नेत्रहीन बच्चों को राग विद्या की शिक्षा देकर गुणों से विभूषित करते थे। सब के लिए लंगर, रिहायश, वस्त्र अनेक प्रकार के वाद्य डेरे (आश्रम) की ओर से देते थे। महंत मंगल सिंह जी भी इसी परंपरा को निभाते रहे हैं। नेत्रहीन रोगियों के लिए दौधर तीर्थ बन गया। नेत्रहीन रागी चाहे देश के किसी भी कोने में हों परंतु दौधर के नाम को अवश्य जानते होंगे। प्रत्येक रागी विद्यार्थी के मन में दौधर की यात्रा करने की कामना होती है।

बीसवीं सदी के अवतार श्रीमान् पूज्य संत अतर सिंह जी मसतूआणे वालों ने कीर्तन की अमृत वर्षा से, नाम-वाणी, अमृत प्रचार, सदुपदेश की आलौकिक लहर आरंभ की। जहाँ भी आप पहुँचते, वहीं कीर्तन श्रवण करने के लिए हजारों व्यक्ति चले आते थे। अमृतपान करके, गुरूवाणी के साथ जुड़कर जन्म सफल करते थे। आप जी के दर्शन, कीर्तन का प्रभाव अवर्णनीय है।

महंत गज्जा सिंह जी गुरुद्वारा गुरुसर (मराझ वाले) अपने समय के आलौकिक संगीतकार हुए हैं। आप संगीत के आचार्य थे, संगीत की दुनिया के प्रधान पुरुष थे। देश के संगीतकार, नृत्यकार और रागी आप जी को अपना गुरु मानते थे। महाराजा भूपिंदर सिंह पटियाला-पति और प्रसिद्ध विद्वान भाई काहन सिंह जी नाभा आप जी के शागिर्द (शिष्य) थे। आप जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के 31 रागों को शुद्ध रूप में संभालने के लिए सुर-लिपियाँ तैयार की थीं परंतु यह महान कोश प्रकाशित न हो सका। भाई काहन सिंह जी नाभा ने महान कोश में राग, संगीत की जो जानकारी दी है वह सब महंत गज्जा सिंह जी की ही देन है। प्रसिद्ध नृतकियाँ-गोहरजां कलकत्ता वाली, रामप्यारी बनारस वाली, यमुना काबुल वाली आप जी के पास नंगे पाँव आती थीं। आप जैसे महान पुरुष तो सदियों बाद ही पैदा होते हैं। संत श्रवण सिंह जी गंधर्वराज जी राग कीर्तन के महान विद्वान थे। आप जी ने 'संगीत स्वर सिमरन' सात भागों में सभी राग और रागनियों को बहुत ही विस्तार से वर्णन किया है। देशों-विदेशों में आप जी के अनेक शिक्षार्थी हैं जो राग कीर्तन द्वारा गुरुमत का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

मण्डलियाँ

निर्मल भेष के महापुरुषों ने विद्या, गुरूवाणी, धर्म-प्रचार के लिए मण्डलियों का निर्माण किया है जो तपस्वी, तेजस्वी, त्यागी, वीतराग विद्वान महापुरुषों का चलता-फिरता समूह (धर्म प्रचार जत्था) होता है। मंडली के मुखिया को 'मंडलेश्वर' या 'महामंडलेश्वर' कहा जाता है। बहुत सारे निर्मले महापुरुष स्वामी ज्वाला दास जी दादा वालों की मंडली में रहकर पढ़ते थे परंतु स्वामी ज्वाला दास जी, श्रीमान् पंडित फौजा सिंह जी (निर्मले) की मंडली में पढ़ते थे। पंडित फौजा सिंह जी की मंडली प्राचीन थी। इसके अलावा पंडित काला सिंह जी, पंडित हरी सिंह जी कथा वाले, पंडित नारायण सिंह जी विरक्त कुटिया कनखल, पंडित बाबा प्रेम सिंह जी झाड़ी ऋषिकेश वाले, पंडित ईशर सिंह जी दौधर वाले, पंडित देवा सिंह जी देवपुरा हरिद्वार वाले, पंडित शमीर सिंह जी बलौंगी वाले और पंडित गुरबख्श सिंह जी नागोके आदि की मंडलियाँ प्रसिद्ध रही हैं।

शास्त्रार्थ

निर्मल पंथ को विद्या का वरदान श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने प्रदान किया है। इस कारण निर्मले महापुरुष संस्कृत और गुरूवाणी के महान विद्वान होते हैं। धर्म, कर्मकाण्ड,

राजनीति, साहित्य, काव्य, वेदांत, न्याय आदि सभी विद्याओं में प्रवीण होते हैं। इस कारण अगर किसी विपक्षी ने शास्त्रार्थ किया तो विजय श्री सदा निर्मल संतों को मिली है। कई शास्त्रार्थ इतिहास प्रसिद्ध हैं।

1. एक बार काशी जी में दिग्विजयी विद्वान पंडित आया। काशी के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। काशी के सभी विद्वान इकट्ठे हुए। विचार-विमर्श किया गया कि आगंतुक पंडित के साथ शास्त्रार्थ कौन करे? प्रत्येक विद्वान शास्त्रार्थ करने से संकोच कर रहा था। उस समय श्रीमान् पंडित सद्दा सिंह जी ने उठकर कहा कि आगंतुक पंडित से कहो "मैं शास्त्रार्थ करुँगा।" समय अनुसार शास्त्रार्थ आरंभ हुआ। अपने-अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिए प्रमाण तथा दृष्टांत चलते रहे। अंत में दिग्विजयी पंडित निरुत्तर हो गया। विजय श्रीमान् पंडित सद्दा सिंह जी की हुई। काशी में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

दूसरे दिन काशी के सभी पंडित एकत्रित हुए और एक विशेष समागम किया गया जिसमें पंडित सद्दा सिंह जी की बहुत प्रशंसा की गई। कहा गया, "आप जी ने काशी का मान-सम्मान बचा लिया। इसलिए काशी के सभी वर्गों के विद्वान एकत्रित होकर आपको सम्मान के रूप में किसी उपाधि से विभूषित करना चाहते हैं। क्या आप स्वयं बता सकते हैं कि आप को किस उपाधि से विभूषित किया जाए?" पंडित सद्दा सिंह जी ने खड़े होकर नम्रतापूर्वक विनती की, "अगर आप प्रसन्न हो तो केवल 'दण्डी' की उपाधि मुझे दी जाए।" इसलिए आप जी को यही उपाधि दी गई। पंडित सद्दा सिंह जी 'दण्डी' काशी के प्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। आप जी ने वेदांत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अद्वैत सिद्धि' का 'सुगम सार चन्द्रिका' नामक टीका किया है जिससे अनेक विद्वान लाभ उठाते हैं।

2. पहली बार श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) कुम्भ पर्व पर श्री गुरु नानक देव जी की वाणी और धर्म का प्रचार करने के लिए पहुँचा था। कुछ अन्य मतानुयायियों की प्रेरणा से पुजारी ब्राह्मणों ने श्री निर्मल पंचायती अखाड़े को स्नान और पूजा से रोक दिया। बारह (12) ज्योतिर्लिंगों में से त्र्यम्बकेश्वर भी एक ज्योतिर्लिंग है। यहाँ से गोदावरी नदी का उद्भव हुआ है। यहीं 'कुशाव्रत' सरोवर है जिसमें कुम्भ का प्रमुख स्नान होता है। कुशाव्रत का स्नान और त्र्यम्बकेश्वर की पूजा बस यही नासिक के कुम्भ का महत्त्व है। श्री निर्मल पंचायती अखाड़े को इसी स्नान तथा पूजा से रोक दिया गया था और कहा गया, "गुरु नानक मतानुयायी निर्मले संत जातिवाद को नहीं मानते, सभी ऊँची-नीची

जाति एक साथ रहते हैं इसलिए न स्नान कर सकते हैं और न पूजा कर सकते हैं।" त्र्यम्बकेश्वर के मंदिर में बिना सिले वस्त्र (चादर) पहन कर नंगे सिर जाने का नियम है। वस्त्र भी रेशम अथवा ऊन का होना चाहिए। खद्दर का सूती कपड़ा पहनकर मंदिर में नहीं जा सकते।

श्री निर्मल पंचायती अखाड़े के मुखिया ने कहा, "हम लोग गुरु नानक पंथी साधु हैं, धर्म में पूर्ण विश्वास रखते हैं। वेद-शास्त्रों का पठन-पाठन और सत्कार करते हैं। यदि हम लोगों में श्रद्धा-प्रेम है, तभी तो इतनी दूर पूजा और स्नान आदि करने के लिए आए हैं।" उस समय चालीस-पचास (40-50) विद्वान विरक्त महापुरुष पुजारियों के साथ विचार कर रहे थे। निर्मले संतों ने कहा, "हमारे साथ शास्त्रानुसार विचार कर लो।" पुजारियों ने पूछा, "तुम्हारा कौन-सा विद्वान विचार करेगा?" संतों ने कहा, "जिसके ऊपर तुम हाथ रखोगे, वही शास्त्र चर्चा करेगा।" पीछे बैठे थे श्रीमान् पंडित दीवान सिंह जी ठीकरी वाले। पुजारियों ने सोचा पीछे बैठने वाला यह कमज़ोर-सा संत अनपढ़ होगा। पुजारियों ने इन पर हाथ रख दिया कि, "यह संत विचार कर ले।" नियत समय पर शास्त्रार्थ आरंभ हो गया। दक्षिण भारत के ब्राह्मण, विद्वान और अनेक रियासतों के राजा, महाराजा जो कुम्भ स्नान पर आए थे, शास्त्रार्थ सुनने के लिए सभा में आकर बैठ गए। पंडित दीवान सिंह जी ने संस्कृत में व्याख्यान आरंभ किया। वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, रामायण तथा महाभारत के प्रमाण तथा दृष्टांत देकर पुजारियों, ब्राह्मणों को निरुत्तर कर दिया और सिद्ध कर दिया कि-

1. सभी प्राणियों को स्नान करने का अधिकार है।

2. केवल एक चादर पहन कर नंगे सिर मंदिर में जाने से इष्ट का अपमान है जिसको सभी विद्वानों और पुजारियों ने हाथ जोड़कर स्वीकार किया। सभी ने पंडित दीवान सिंह जी और निर्मल भेष की प्रशंसा की। स्वीकार किया गया कि निर्मल भेष धर्म के तत्व को जानने वाला सत्यवादी है। सद्गुरु श्री नानक देव जी पूर्ण अवतार हैं। निर्मल भेष कुशाव्रत तीर्थ में स्नान करने का और त्र्यम्बकेश्वर के मंदिर में सूत के सिले हुए वस्त्रों, दस्तारों सहित पूजा करने का अधिकारी है। विधिरुप से लिखा गया जिसके अनुसार श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा त्र्यम्बकेश्वर के कुम्भ पर्व पर वस्त्रों सहित पूजा करता है। निर्मल भेष के अतिरिक्त और किसी को भी सिले वस्त्रों सहित मंदिर में जाने की आज्ञा नहीं है।

3. एक बार दयानन्द आर्य समाजी ने अमृतसर में आकर बड़े अहंकार से घोषणा कर दी कि 'खालसा' शब्द का कोई भी यथार्थ अर्थ नहीं है। अगर कोई सिक्ख अर्थ या व्याख्या कर दे तो मैं कल इसी स्थान पर उसके साथ विचार करने के लिए तैयार हूँ। साथ ही अहंकार से यह भी कहा, "परंतु मुझे निश्चय है कि किसी ने अर्थ करने के लिए आना ही नहीं है।"

इसी समूह में पंडित ठाकुर निहाल सिंह जी थोहा-खालसा वाले भी बैठे थे। उन्होंने सुनकर विचार किया कि दयानन्द का गर्व (अहंकार) समाप्त करना चाहिए। यह संपूर्ण सिक्ख पंथ को ललकार रहा है। आप ने संस्कृत के सौ श्लोकों में 'खालसा' शब्द की व्याख्या, अर्थ, महानता, उपमा वर्णित करके एक रात्रि में 'खालसा शतक' ग्रंथ लिख दिया। पंडित जी निश्चित समय पर दयानन्द के एकत्रित जन-समूह में पहुँच गए। कहा- "मैं आप के कथन अनुसार खालसा शब्द की व्याख्या करने के लिए आया हूँ।"

दयानन्द ने सोचा यह संत पंजाबी भाषा में एक-दो बातें कहेगा, मैं इसको एक दो बातों से निरुत्तर कर दूँगा। यह सोचकर दयानन्द व्यंग्य करता हुआ बोला, "हाँ! बताओ खालसे का क्या अर्थ है?"

बस! फिर क्या था, पंडित ठाकुर निहाल सिंह जी ने 'खालसा शतक' बोलना आरंभ कर दिया। धारा-प्रवाह संस्कृत में खालसे की व्याख्या हो रही थी। दयानन्द संस्कृत में खालसा शब्द की व्युत्पत्ति, प्रमाण, दृष्टांत, महिमा सुनकर श्रीमान् पंडित निहाल सिंह जी के चरणों में हाथ जोड़कर नतमस्तक हो गया। पंडित जी की जय-जयकार हो रही थी। दयानन्द सिर नीचे करके कहने लगा, "मुझे मालूम नहीं था कि सिक्खों में भी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित होते हैं।" पंडित निहाल सिंह जी ने दयानन्द का गर्व (अहंकार) चूर-चूर करके विजय प्राप्त की। इस प्रकार शास्त्रार्थ द्वारा 'खालसा शतक' ग्रंथ की रचना हुई।

4. पंडित ईश्वर सिंह जी 'कलियुग' शास्त्रार्थ करने में बहुत प्रसिद्ध थे। आप जी की शास्त्रार्थ करने की शक्ति, बल-बुद्धि अपूर्व थी। हाज़िरजवाबी कमाल की थी। प्रमाण तथा दृष्टांत अकाट्य होते थे। आप जी के साथ शास्त्रार्थ करने का कोई साहस नहीं करता था। षड् दर्शन साधु-समाज के विद्वान आप जी का नाम सुनकर घबराने लगते थे। आप जी की आलौकिक विद्या, दृढ़ता, स्वाभिमान, आत्मबल और शास्त्रार्थ करने में निर्भयता देखकर विपक्षियों ने आप जी को 'कलियुग' और 'भयंकराचार्य' आदि उपाधियाँ दी हुई थीं। निर्मल

भेष में भी आप जी को 'कलियुग' के उद्धारक कहकर सम्मानित किया जाता है। आप के निम्नलिखित शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं जिनमें आप की विजय और सत्कार हुआ है।

सम्वत् 1936 बि० (1879 ई०) को काशी में षड्-दर्शन साधु-समाज के साथ तीन दिन, बंबई में देवी के मंदिर के नज़दीक स्थित धर्मशाला में दो दिन, त्र्यम्बक कुम्भ पर्व पर तीन दिन, नासिक शहर में दो दिन, दरभंगा रियासत में एक दिन, डुमरा रियासत में श्रीराम नवमी और श्री कृष्ण जन्माष्टमी को अनेक बार, रियासत सूरजपुर और बखरा में विजय दशमी के समय, सम्वत् 1950 बि० (1893 ई०) को रियासत मंडी में किए गए शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं।

इसी प्रकार नाभा, पटियाला, जींद के शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं जिन में वे हमेशा विजय प्राप्त करते थे।

5. 'मोर ध्वज' शहर के राजा सैनपाल के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार ज्ञानी ज्ञान सिंह जी का 'तदबीर' (पुरुषार्थ) और 'तकदीर' (प्रारब्ध) पर कई दिन शास्त्रार्थ हुआ। अंत में विजय ज्ञानी जी की हुई। राजा सैनपाल ने सत्कार सहित पूजा करके विदा किया।

6. आगरा में राधास्वामी मत के संचालक शिवदयाल सिंह खत्री के साथ शास्त्रार्थ हुआ। यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से ऊँचे आसन पर बैठा करता था। हुक्का पीता था। सेवकों को मुख की पीक (थूक) पिलाता था। ज्ञानी जी ने ऐसा कुकर्म करने से रोका। शास्त्रों द्वारा तंबाकू की भ्रष्टता बताई। गुरूवाणी के गौरव से परिचित करवाया। गुरूवाणी एवं इतिहास की युक्तियाँ देकर निरुत्तर कर दिया। शिवदयाल सिंह ने सभी अवगुण छोड़ने का संकल्प लिया और हुक्के आदि का त्याग कर दिया। गुरूवाणी का सत्कार करने लगा। शिवदयाल सिंह के जीवन में आए परिवर्तन से शहर में ज्ञानी जी का परम सत्कार हुआ।

7. पंडित महेशरा सिंह जी शास्त्रार्थ करने में अद्वितीय योग्यता रखते थे। प्रयागराज में आप जी द्वारा किया गया शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है।

इस प्रकार निर्मले महापुरुषों ने अपने तप-तेज, आत्मिक शक्ति, विद्या-बल और शब्द से सबको नतमस्तक किया है।

गुरूमुखी का प्रचार

निर्मले महापुरुषों ने गाँव-गाँव में डेरे (आश्रम) स्थापित करके गुरूमुखी, गुरूवाणी का अकथनीय प्रचार किया। जिस समय देश में स्कूल नहीं थे, उस समय महापुरुषों के डेरे

(आश्रम) ही स्कूलों, कॉलेजों का काम करते थे। पढ़ाई केवल गुरुमुखी लिपि में ही करवाई जाती थी। गुरुमुखी लिपि का अस्तित्व बनाए रखने वाले केवल निर्मले महापुरुष ही हैं।

उस समय महापुरुष गुरुमुखी पढ़ाते भी थे और गुरुमुखी की लिखाई भी करते थे। जो मौलिक ग्रंथ लिखता है, उसको लेखक कहा जाता है। जो सुंदर लिखाई या अक्षरों में ग्रंथों की प्रति तैयार करते हैं, उनको 'लिखारी' कहा जाता था। यह लिखारी एकाग्रचित्त वाले संत ही होते थे। विद्वान, साहित्यकार और संगत लिखारियों का अत्यंत सम्मान करती थी। लिखारियों का मुख्य केन्द्र गुरुकाशी, तलवंडी साबो में था। यहाँ सुंदर लिखाई करने की शिक्षा दी जाती थी। महापुरुष केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुरूवाणी की पोथियाँ और धार्मिक ग्रंथ ही लिखते थे।

1. तपोनिधि स्वामी भगत सिंह जी पिण्डीघेब वालों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पाँच बीड़ें लिखी थीं। श्रीमान् संत विधावा सिंह जी लहिराखाना (बठिंडा) वालों ने तीन बीड़ें लिखी थीं। यह महापुरुष जपुजी, सुखमनी साहिब और अन्य वाणियों के गुटके लिख-लिखकर बाँटा करते थे।

पंजाब में जितने भी नवीन ग्रंथों की रचना होती थी, उनकी भाषा ब्रजभाषा होती थी परंतु लिपि गुरुमुखी होती थी। जैसे गुरुप्रताप सूरज, मोक्ष पंथ प्रकाश, आध्यात्मिक रामायण, हनुमान नाटक, गंगयती निदान, मेघ विनोद, पंथ प्रकाश आदि अनेक ग्रंथ हैं। पंजाब में गुरुमुखी लिपि द्वारा जितना प्रचार हनुमान नाटक और आध्यात्मिक रामायण का हुआ है, उतना तुलसी रामायण का भी नहीं हुआ।

2. गुरु की काशी तलवंडी साबो में लिखारियों की मुख्य टकसाल थी जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी और गुरुघर के अन्य ग्रंथ अनेक लिखारी लिखते थे। गुरुकाशी श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो की गुरुमुखी को 'दमदमी गुरुमुखी' कहा जाता था। दमदमी गुरुमुखी, कश्मीरी गुरुमुखी, अमृतसरी गुरुमुखी के पुरातन लिखे हुए नमूने भाई काहन सिंह जी नाभा ने अपने 'महान कोश' में अंकित किए हैं। सारी गुरुमुखी लिपियों में से दमदमी गुरुमुखी सुंदर और स्पष्ट थी। जब सन् 1825 ई० में लुधियाने में गुरुमुखी का छापाखाना (मुद्रांकणालय) लगा तो सभी गुरुमुखी लिपियों के नमूने इकट्ठे किए गए कि किसके अक्षर सरल, सुंदर और स्पष्ट हैं। लिपि वैज्ञानियों के काफ़ी विचार-विमर्श के बाद दमदमी गुरुमुखी के नमूने पर अक्षर ढालने का फैसला हुआ। ये अक्षर दमदमा साहिब के

लिखारियों के बूंगे के महंत हीरा सिंह जी के लिखे हुए थे। फांउडरी में अक्षर ढालने के समय महंत हीरा सिंह जी को लुधियाना में बुलाया गया। पाँच सौ रुपये लिखित (सिरोपाउ) और सरकार में 'कुरसी नशीनी' का अधिकार दिया गया। संत निरंकार सिंह उर्फ किशन सिंह खुश नवीसी, पेंटिग (चित्रकारी) में अपूर्व योग्यता रखते थे। आप जी गुरुमुखी लिपि के डेढ़ सौ मनमोहक अक्षरों के नमूने तैयार करके पंजाबी की छपाई में क्रांति ले आए। अंग्रेजी, गुजराती, देवनागरी, अरबी, फारसी, उर्दू, लण्डे और सिंधी की लिपियों में भी सुंदरता भर डाली। आप जी ने गुरूवाणी के भी कई टीके किए हैं।

चिकित्सा द्वारा सेवा

निर्मल भेष के महापुरुष चिकित्सा सेवा में भी पीछे नहीं रहे। प्राचीनकाल में जब गाँवों-शहरों में अस्पताल नहीं थे, उस समय गाँव के आश्रमों में यह महापुरुष रोगियों का ईलाज करते थे। दवाई मुफ्त दी जाती थी, जिससे अमीर-गरीब सभी प्राणी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते थे। आयुर्वैदिक विद्या को जीवित रखने वाले ही निर्मले महापुरुष हैं। मुस्लिम शासन के समय और अंग्रेजी शासनकाल में आयुर्वेद को नष्ट करने के यत्न किए गए परंतु महापुरुष अपने आश्रमों में आयुर्वैदिक विद्या का प्रचार भी करते रहे, ईलाज भी आयुर्वैदिक पद्धति द्वारा करते थे और नए विद्यार्थियों को आयुर्वैदिक विद्या पढ़ाते भी थे। आयुर्वेद पर नए ग्रंथ भी लिखते थे और पुरातन ग्रंथों के टीके भी करते थे। निर्मल भेष में बहुत बड़े-बड़े प्रसिद्ध चमत्कारी वैद्य हुए हैं।

1. पंडित संपूर्ण सिंह जी आनंदपुर वाले प्रसिद्ध वैद्य थे। औषधि निःशुल्क देते थे। औषधि लेने के लिए गरीब पहाड़ी लोगों की खूब भीड़ लगी रहती थी। दवाई देते समय साथ-साथ गुरु के उपकार, प्रसंग, गुरूवाणी के अर्थ सुनाकर जन-साधारण को गुरुघर के साथ भी जोड़ते थे। उदासी, संन्यासी, वैरागी, ब्राह्मण, सेवापंथी, निहंग सिंह आदि अनेक सम्प्रदायों के विद्यार्थी आयुर्वेद, गुरूवाणी, वेदांत और संस्कृत पढ़ते थे। आप पंजाब में अत्यंत प्रसिद्ध थे। राजा-महाराजा दर्शनों के लिए आते थे परंतु आप उपराम ही रहते थे।

2. महंत चंदन सिंह जी ब्रह्मकुटी काशी वाले चमत्कारी वैद्य थे। चिकित्सा में अकथनीय योग्यता रखते थे। नाड़ी परीक्षा के अपूर्व ज्ञाता थे। आप जी के 'रस सिंदूर' की चर्चा घर-घर थी। 'रस सिंदूर' की एक पुड़िया रोगी को जीवन दे देती थी। आप जी को 'रसाइणी' भी कहा जाता था। सब जगह से निराश रोगी यहाँ स्वस्थ हो जाते थे। हजारों

व्यक्तियों को आपने प्राणदान दिया। देश के प्रतिष्ठित व्यक्ति आप के चरणों में नमन करते थे। आप जी के तप-त्याग, सिमरन का प्रभाव था कि औषधि में अमृत जैसी शक्ति थी। 'चंदन औषधालय' चंदन की तरह सुगंध फैला रहा था।

3. पंडित चंदन सिंह जी की तरह आप जी के पौत्र शिष्य पंडित बसंत सिंह जी वैद्य रत्न भी चमत्कारी चिकित्सक थे। जन-साधारण में यह बात प्रसिद्ध थी कि बाबा चंदन सिंह जी के पौत्र शिष्य में पुनः बाबा चंदन सिंह जी की ज्योत प्रकट हो गई है। सौ-डेढ़ सौ व्यक्ति रोजाना मुफ्त औषधि लेकर स्वस्थ होते थे। जो एक भी पुड़िया ले लेता था, रोग मुक्त हो जाता था। आपकी तैयार की हुई औषधि अमृत के समान थी। ज्योतिष के भी आप प्रकाण्ड पंडित थे।

4. महंत हीरा सिंह जी गुरुसर खुडा वाले भी प्रसिद्ध वैद्य थे। ईलाज भी करते थे और पढ़ाते भी थे। इस डेरे में महंत गणेशा सिंह जी महान वैद्य हुए हैं जो अनेक प्रकार की औषधियाँ बनाने में प्रसिद्ध थे। रोगी आपकी औषधि को संजीवनी मानते थे। आपने आयुर्वेद में अत्यंत खोज की थी। आयुर्वेद के पुरातन ग्रंथों के टीके भी किए जिनमें से 'मेघ विनोद प्रकाश सटीक', 'गंगयती निदान सटीक', 'वियासी विनासीक सटीक' प्रसिद्ध हैं।

आयुर्वैदिक के बहुत सारे मौलिक ग्रंथ भी अंकित किए जिनमें से निर्मल वैद्य, वैदिक भंडार, बाल चिकित्सा, स्त्री चिकित्सा, जेबी वैद्य वर्णन योग्य हैं। इन ग्रंथों से आयुर्वेद के विद्यार्थी अत्यंत लाभ प्राप्त कर रहे हैं। महंत गणेशा सिंह जी निर्मल भेष के सर्व-पखी विद्वान थे।

5. महंत सेवा सिंह जी वैद्यराज चिकित्सा क्षेत्र में अद्वितीय प्रवीणता रखते थे। चिकित्सा का इतनी गहराई से अध्ययन किया कि बड़े-बड़े डॉक्टर भी मात खा जाते थे। आपने देशी और विदेशी दवाइयों के नए-नए मिश्रण तैयार किए। बाहरी देशों से डॉक्टरी के सारे कीमती औज़ार मँगवाए। यहाँ तक योग्यता थी कि जिन नेत्रहीनों (प्रज्ञाचक्षुओं) को आँखों के स्पैशलिस्ट डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, उनके असाध्य रोग आप जी की दी औषधि से दूर हो गए। आप रोगियों को दवाई भी मुफ्त देते थे और खाने के लिए खुराक (भोजन) भी देते थे।

6. पंडित तारा सिंह जी खडूर साहिब वाले नाम-रस में रंगे हुए एकाग्रचित्त होकर औषधि बाँटते रहते थे। रोगी पंक्तियाँ लगाकर इंतजार में बैठे रहते थे और अपनी बारी

का इंतजार करते थे। जो औषधि ले जाता था, हर प्रकार के रोग से मुक्त हो जाता था। आप जी के जीवन में तीन ही काम थे- नाम जपना, विद्यार्थियों को विद्या पढ़ाना और रोगियों को दवाई देना। आप जीवन भर यह परोपकार करते रहे। आप जी का क्षेत्र में अत्यंत प्रभाव था।

आपके उत्तराधिकारी पंडित सुरजीत सिंह जी भी इसी परंपरा अनुसार सेवा करते रहे हैं। इसी प्रकार पंडित साधु सिंह जी चकविंनडल वाले गुरूमत का प्रचार-प्रसार करते रहे।

7. पंडित तारा सिंह जी, महंत हरनाम सिंह जी, महंत हरी सिंह जी वैद्यराज, गली बाग वाली अमृतसर उल्लेखनीय चिकित्सक थे।

8. पंडित निहाल सिंह जी काशी में प्रसिद्ध वैद्य थे। अनेक रोगी आपजी द्वारा स्वस्थ हुए हैं।

9. संत गुरदित्त सिंह जी (संपादक निर्मल पत्र) ने चिकित्सा कोश 'लंलमभाव चंद्रोदय टीका' आदि आयुर्वेद संबंधी ग्रंथों की रचना की है।

10. महंत जै सिंह जी जंडावाला अपने समय के प्रसिद्ध वैद्य थे। रियासत फरीदकोट का राजपरिवार आपकी औषधि पर विश्वास रखता था। आप महाराजा रियासत फरीदकोट के राजदरबार में कुर्सी नशीन थे।

11. श्रीमान् संत गुलाब सिंह जी घोलीए वाले आयुर्वैदिक में प्रसिद्ध थे। दवाई मुफ्त देते थे। नाम सिमरन वाले तथा पंथ में सत्कार योग्य महापुरुष थे।

ज्योतिष विज्ञान

निर्मले संत ज्योतिष विज्ञान के भी महान विद्वान हुए हैं। इस विद्या का अति सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया करते थे। भविष्य संबंधी जो भी बताते थे, अक्षरश (शत-प्रतिशत) सत्य होता था। ज्योतिष और सामुंद्रिक (रेखा अध्ययन) ज्योतिष दोनों मिलते-जुलते हैं। इस कारण दोनों का ज्योतिष विज्ञान में एक साथ वर्णन कर रहे हैं।

1. संत ठाकुर सिंह जी थोहा-खालसा वाले महान विद्वान हुए हैं। आप संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित, राग के धनी, ज्योतिष एवं सामुंद्रिक के विशेषज्ञ थे। हम यहाँ ठाकुर जी की सामुद्रिक द्वारा की गई भविष्यवाणी अंकित कर रहे हैं, जिससे उनके गहन अध्ययन का पता चलता है। एक बार श्रीमान् 108 संत अतर सिंह जी मस्तुआणे वाले आप जी को मिलने के लिए 'दुख भंजनी आश्रम' थोहा-खालसा में आए। इस समय श्री संत जी

महाराज प्रसिद्ध नहीं थे। गाँव कनोहे में सिमरन व तप कर रहे थे। पाँव से नंगे थे, ऊपर काली कंबली ओड़ी हुई थी। शिष्टाचार के बाद दोनों महापुरुष ज्ञान-गोष्ठी द्वारा आत्मिक आनंद लेने लगे। श्री संत जी के पाँव का तलवा ठाकुर जी देख रहे थे। पैर की रेखा को स्पष्ट रूप से पढ़ लिया। साथ में स्वाभाविक ही मुख से उच्चारण हो गयाः-

पालकीआं रथ उत्ते चलना, रेखा पई बतांदी।

ओड़ही कंबली, जुत्ती नाहीं, समझी गल्ल न जांदी।

भविष्य में ठाकुर जी का यह कथन अक्षरशः सत्य हुआ। जो सत्कार देश और पंथ में श्रीमान् 108 पूज्य संत अतर सिंह जी महाराज का था, वह जगत प्रसिद्ध है।

2. ब्रह्मकुटी काशी के महंत पंडित बसंत सिंह जी महान वैद्य और आलौकिक ज्योतिषी भी थे। विद्वानों और जनता की तरफ से आपको 'ज्योतिष सम्राट' कहकर सम्मानित किया जाता था। बिना प्रश्न के ही फल (उत्तर) बता देते थे। काशी के अपूर्व भविष्य वक्ता थे। जब 'संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी' स्थापित हुआ तब आप जी ने नियुक्त होने वाले आचार्य का नाम, तिथि, वेतन, तरक्की आदि का विवरण तारीख सहित लिखकर दे दिया था, जो बाद में सत्य हुआ। बड़े-बड़े नेताओं और विद्वानों की भीड़ ब्रह्मकुटी में 'ज्योतिष सम्राट' के चरणों में लगी रहती थी।

3. प्रसिद्ध वैद्य पंडित संपूर्ण सिंह जी आनंदपुर वाले ज्योतिष विद्या में भी प्रवीण थे।

4. पंडित मंगल सिंह जी पटियाले वाले ज्योतिष के पूर्ण विद्वान थे। आप जी ने ज्योतिष के विषय में कई ग्रंथ भी लिखे हैं जिनमें 'मुहुर्त चन्द्रिका' प्रसिद्ध ग्रंथ है।

5. संत भगवान सिंह जी फूलों वाले ज्योतिष विज्ञान के महान विद्वान थे। ज्योतिष के कारण सारे पंजाब में आपका सत्कार था। शहरी हिंदू जाति, आर्य समाजी भी बड़ा सत्कार करते थे। ज्योतिष द्वारा आप सभी की मनोकामना पूर्ण करते थे। श्रद्धालुओं को गुरुघर का सिक्ख बनाते थे। कहा करते थे "सभी मनोकामनाएँ गुरु नानक के घर से पूर्ण होती हैं।" इस तरह सभी को गुरूवाणी के साथ जोड़ते थे। आप गुरुमत के विद्वान, कथा वाचक, व्याख्यानदाता और कवि भी थे।

6. पंडित संत सिंह जी शास्त्री ज्योतिषाचार्य ज्योतिष के अपूर्व ज्ञाता थे। आप खारा बरनाला, जिला मानसा के महंत थे और विचारशील विद्वान थे।

7. साईं लोक श्री संत सुख्खा सिंह जी गली बाग वाली, अमृतसर वाले ज्योतिष के

महान विद्वान थे। आपने ज्योतिष पर एक ग्रंथ भी लिखा है। श्री संत हरी सिंह जी तख्तूपुरा (जिला फरीदकोट) वाले भी ज्योतिष विद्या में निपुण थे। आप जी ने ज्योतिष पर एक ग्रंथ लिखकर प्रकाशित किया है।

8. संत भगवान सिंह जी ज्योतिषी गाँव माहलाकलां, जिला फरीदकोट वालों ने 'सृष्टि दर्पण' ग्रंथ लिखा है।

योगाभ्यास

योगाभ्यास एक कठिन साधन है। चित्त की वृत्तियों को रोकने के लिए यह साधन होता है। मन को एकाग्र करना पड़ता है। शरीर द्वारा भी कई कठिन साधन (हठयोग) करने पड़ते हैं। संसार के व्यसनों, आकर्षणों का त्याग करना पड़ता है। योगाभ्यास से शरीर की शुद्धि, आयु की वृद्धि और रोग की निवृत्ति होती है।

निर्मल पंथ में महान योगाभ्यासी संत मोहर सिंह जी थे, जो सैंकड़ों लोगों को नित्यप्रति योगाभ्यास करवाते थे। आप ने योगाभ्यास की विद्या संत चंपा सिंह जी से सीखी थी। प्राणायाम के प्रकार, उठने-बैठने की क्रिया, समय-कुसमय के प्रकार, सांगोपांग सीखे। आपकी प्रसिद्धि योगीराज के नाम से थी।

आपके पास योगाभ्यास सीखने के लिए बहुत लोग आते थे। आप 25 संतों से योगाभ्यास करवाते थे। 4-5 संतों को सेवा के लिए रखते थे। अगले महीने पहले सेवादारों को बदलकर अभ्यास में लगा देते थे और अभ्यास वालों में से कुछ को सेवा में लगा देते थे। यह योग का अभ्यास क्रमवार चलता रहता था। अनेक संतों ने योग की क्रिया सीखी। सभी मतों के संत आकर योग विद्या सीखते थे। संत मोहर सिंह जी ने योग पर एक ग्रंथ 'योग सिखिया प्रभाकर' लिखा है जो पुरातन साध भाषा गुरुमुखी लिपि में है। संत मोहर सिंह जी 145 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हुए थे।

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान पंडित ईश्वर सिंह जी 'कलियुग' भी योग शास्त्रों का अद्वितीय ज्ञान रखते थे। 'मैसमरेज़म' के भी विशेषज्ञ थे।

❑

6 निर्मले साधुओं की साहित्यिक सेवा

निर्मले साधुओं ने साहित्य में जो योगदान दिया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम है। निर्मले साधुओं ने अनेक ग्रंथों की रचना की है। चाहे गुरूवाणी प्रचार, गुरु नानक सिद्धांत की व्याख्या करना ही मुख्य उद्देश्य रहा, फिर भी धर्म, कर्मकाण्ड, वेदांत, न्याय, इतिहास, मिथिहास, टीके, कोश-साहित्य, छंद-शास्त्र, आयुर्वेद आदि अनेक विषयों पर ग्रंथ रचना की। इन महापुरुषों का मन किसी भाषा अथवा विषय के प्रति संकीर्ण नहीं था। इसलिए हिंदी, ब्रजभाषा, संस्कृत और पंजाबी में समान रूप से लिखते रहे हैं। जिस प्रकार ऊपर बताया था, गुरुमत की व्याख्या को मुख्य रखा जिससे संपूर्ण भारत में गुरुमत का प्रचार हुआ है। दसों गुरुओं के सिद्धांतों, उपकारों को घर-घर पहुँचाया है। महान लेखकों में पंडित गुलाब सिंह जी व पंडित तारा सिंह जी नरोत्तम और प्रसिद्ध इतिहासकार-ज्ञानी ज्ञान सिंह जी, ज्ञानी बदन सिंह जी सेखवां वाले और महंत गणेशा सिंह जी के नाम प्रसिद्ध हैं। हम निर्मल भेष की महान साहित्यिक रचना का दिग्दर्शन पाठकों को करवाने का प्रयत्न करते हैं।

पंडित गुलाब सिंह जी

आप निर्मल पंथ के महान विद्वान हुए हैं। संस्कृत के आप प्रकाण्ड पंडित थे। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के उद्देश्य के अनुसार आप जी ने संस्कृत ग्रंथों की ब्रजभाषा तथा गुरुमुखी लिपि में रचना करके जन-साधारण के लिए सरल साहित्य उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। संस्कृत अनुवाद से आपकी अपूर्व पंडिताई का परिचय मिलता है। यह भी पता चलता है कि आप छंद शास्त्र, अलंकार और साहित्य के अद्वितीय ज्ञाता थे। सर्वगुण संपन्न विद्वान थे। आप जी के लिखे हुए चार ग्रंथ उपलब्ध हैं।

1. भावरसामृत	संवत 1834 बि० (1777 ई०)
2. मोक्ष पंथ प्रकाश	संवत 1835 बि० (1778 ई०)
3. अध्यात्म रामायण	संवत 1836 बि० (1779 ई०)
4. प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	संवत 1836 बि० (1779 ई०)

यह बात प्रसिद्ध है कि आप ने अन्य कई ग्रंथों का अनुवाद किया था, नए ग्रंथ भी लिखे थे, जो ईर्ष्यालुओं ने नष्ट कर दिए। ये उपरोक्त ग्रंथ किसी तरह बच गए।

मोक्ष पंथ प्रकाश-ग्रंथ

यह ग्रंथरत्न अमृतसर में लिखा गया है। यह भारतीय दर्शन शास्त्र का प्रामाणिक ग्रंथ है। उत्तर भारत (साहित्य) में ऐसा दूसरा ग्रंथ कोई नहीं है।

श्री संत निहाल सिंह जी कवींद्र ने इस ग्रंथ के बारे में रोचक ऐतिहासिक घटना लिखी है और बताया है कि 'मोक्ष पंथ प्रकाश' के लेखक श्री पंडित गुलाब सिंह जी के गुरुदेव महापुरुष ब्रह्मज्ञानी पंडित मान सिंह जी दशम गुरु जी के हजूरी सिक्ख थे जो कि सद्गुरु के चरणों में बैठकर परमार्थ संबंधी, गुरूवाणी के अर्थों संबंधी शंका निवृत्त करते रहते थे। कई बार बड़े रहस्यमय प्रश्न करते थे। दशम पिता जी भी अधिकारी समझकर विचारपूर्वक गूढ़ रहस्य खोलकर शंकाओं का समाधान करते थे।

गुरु दशम पातशाह के चरणों में बैठकर प्राप्त किया ब्रह्मज्ञान आगे अपने शिष्य श्री पंडित गुलाब सिंह जी को मौखिक रूप से प्रदान किया। कुछ समय बाद पंडित गुलाब सिंह जी ने वही ब्रह्मज्ञान का स्रोत 'श्री मोक्ष पंथ प्रकाश' के रूप में प्रकट किया। श्री संत निहाल सिंह जी कवींद्र इस वार्ता को इस प्रकार लिखते हैं कि "एक समय श्री सद्गुरु गोबिन्द सिंह जी की हजूरी में हो रहे दीवान के समय श्री भाई मान सिंह निर्मले अपने गले में कपड़ा डालकर बहुत ही विनम्रतापूर्वक प्रणाम करके श्री सद्गुरु जी के सन्मुख तत्परतापूर्वक खड़े हो गए। उस समय सद्गुरु कृपालु ने अमृत दृष्टि करके प्रेमपूर्वक पूछा, "मान सिंह कहो, क्या कहना चाहते हो?" तब मान सिंह जी बोले, "हे सद्गुरु! श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मारु राग में जो पहले महल्ले के सोलहे हैं, उनमें सत्रहवें की नौवीं पौड़ी के शुरु में जो तुक लिखी है कि 'सामवेद रिग यजुर अथरबण' इस तुक का जो वास्तविक तात्पर्य है सो कृपा करके लिखकर समझाने की बख्शीश करो जी!"

तब श्री सद्गुरु जी ने कहा, "भाई मान सिंह, तुम धन्य हो जिसने ऐसा उत्तम प्रश्न जीवों के उद्धार हेतु किया है। इससे तुम्हारा यश होगा। हे शिष्य! इस तुक (पंक्ति) में चारों वेदों के नाम वास्तव में चारों महावाक्य हैं।" ऐसा कहकर कागज़, कलम, दवात मँगवाई वार्तिक रूप में छान्दोग्य आदि के प्रमाण सहित लिखकर बख्श दिया और फरमाया कि

किसी एकांत समय हमारी रसना से इस वार्तिक का अर्थ सुन भी लेना। तब मान सिंह जी ने सत्य वचन कहा। उसके बाद वैसा ही किया। तत्त्वोपदेश हृदय में धारण किया। कालांतर में उसी वार्तिक का अर्थ श्री मान सिंह जी ने अपने सेवक गुलाब सिंह को समझाया।"

परंतु श्री पंडित गुलाब सिंह जी ने 'मोक्ष पंथ प्रकाश' का आधार अमृतवाणी 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को माना। इसलिए 'श्री मोक्ष पंथ प्रकाश' के आरंभ में कथन है कि जो अमृत वचन श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, उनका विस्तारपूर्वक व्याख्यान करते हैं। पंडित गुलाब सिंह जी लिखते हैं:-

गुरु अरजुन कलयान बखान। भ्रम भय मिटे सु ब्रह्म ज्ञान।
उतम पथ गयान जगसार। दुख मेटन सुख देन उदार।10।
ब्रह्मादिक चींटी लौं जेते। दुख में द्वैष करे सब तेते।
सदा जिहासा दुःख की करे। दुःख नाशक साधन अनुसरे।11।
सकल दुःख को कारण देह। ताको धरम अधरम विधेह।
विहित निषिध करम तिह मूल। राग द्वैष करमन को मूल।12।
भलो बुरो अधयासहि जोई। राग द्वैष को कारण सोई।
सो यहि भलो बुरो अधयास। निखिल द्वैत ते भयो प्रकाश।13।
सो सब द्वैत ब्रह्म में अैसे। सीपि विषेरुपो जग जैसे।
ताको कारण है अगयान। सो उर कलिपत सतय पछान।14।

विद्या मुकुट मणि पंडित तारा सिंह जी 'नरोत्तम'

आप गुरुमत सिद्धांत, गुरुमत दर्शन, साहित्य, इतिहास, गुरूवाणी के धुरंधर विद्वान थे। गुरुमत दर्शन, गुरूवाणी संबंधी आप ने अत्यंत दूर-दृष्टि से लिखा है। जो कुछ भी आपने लिखा है, गुरूवाणी, गुरू-इतिहास के महत्व का वर्णन करने के लिए लिखा। आप पंथ में पहले विद्वान थे, जिन्होंने 'श्री गुरूमति निर्णय सागर' जैसा दार्शनिक ग्रंथ लिखा। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' का पहला 'श्री गुरु गिरार्थ कोश' लिखा और देश के सभी गुरुद्वारों का इतिहास 'गुरु तीर्थ संग्रह' लिखा। आप गुरूवाणी के शुद्ध शास्त्रीय अर्थों के समर्थक थे। जब आपको पता चला कि एक अंग्रेज विद्वान 'ट्रंप' गुरुवाणी के अर्थ पक्षपाती व अशुद्ध कर रहा है, तब आप जी ने इसका विरोध किया। गुरूवाणी के शुद्ध अर्थ लिखने का यत्न

किया और निम्नलिखित ग्रंथ लिखेः

1.	'मोक्ष पंथ प्रकाश' का 'स्वयं प्रभा विवरण' टीका	संवत 1922 बि० (1865 ई०)
2.	सुरतरु कोश	संवत 1923 बि० (1866 ई०)
3.	श्री गुरमति निर्णय सागर	संवत 1934 बि० (1877 ई०)
4.	अकाल मूरति प्रदर्शन	संवत 1935 बि० (1878 ई०)
5.	टीका गुरभाव दीपका	संवत 1935 बि० (1878 ई०)
6.	टीका गुरभाव दीपका (जपु, रहिरास आदि)	संवत 1937 बि० (1880 ई०)
7.	भक्त वाणी का टीका	संवत 1939 बि० (1882 ई०)
8.	गुरतीर्थ संग्रह	संवत 1940 बि० (1883 ई०)
9.	श्रीराग टीका	संवत 1942 बि० (1885 ई०)
10.	गुरू गिरार्थ कोश (दो भाग)	संवत 1946 बि० (1889 ई०)

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी धुरंधर विद्वान, महान कवि और प्रसिद्ध इतिहासकार थे। आप जी ने ब्रजभाषा में प्रसिद्ध ग्रंथ 'पंथ प्रकाश महाकाव्य' लिखा है। पंजाबी वार्तिक में 'तवारीख गुरु खालसा' लिखा। नवीन पंजाबी वार्तिक लिखने में आप जी अग्रगण्य थे। यह वार्तिक बड़े स्पष्ट, शुद्ध रूप में बातरतीब (क्रमवार) लिखा है जिससे जन-समुदाय (जन-साधारण) और संगत को अत्यंत लाभ पहुँचा है। आप की लिखी वार्तिक में आधुनिक शैली के सभी लक्षण विद्यमान हैं। वार्तिक शैली सर्वगुण संपन्न है जिस में सिक्ख इतिहास को विवरण सहित लिखा गया है। प्रत्येक घटना को सोच-विचार कर लिखा गया है। गुरु नानक देव जी ने संपूर्ण भारत का देशाटन किया परंतु सद्गुरु जी के उपकारों, गुरुद्वारों का, पुराने ग्रंथों तथा जन्म साखियों में बहुत कम वर्णन आया है। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने स्वयं देश का भ्रमण करके, अनेक असहनीय कष्टों को सहन करके सद्गुरु जी के समस्त स्थानों पर पहुँचने का प्रयत्न किया और बातरतीब भौगोलिक रूप में गुरु नानक देव जी की जीवन कथा लिखी। साथ ही भारत की अनेक जातियों के रस्मों-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों का खोजपूर्ण वर्णन किया है। मुख्य बात यह है कि ज्ञानी जी अंध-विश्वासी नहीं थे। भारत में धर्म के

नाम पर हो रही अनेक कुरीतियों का डटकर खण्डन किया। अंधविश्वासों के खण्डन पर आप की कलम खूब चली है। ज्ञानी जी ब्रजभाषा के अंतिम कवि और नवीन पंजाबी वार्तिक के पहले लेखक हैं। पंजाबी में फुट नोट, टिप्पणियों की परंपरा भी आप जी ने चलाई है।

आप पहले विद्वान थे जिन्होंने देश के पुस्तकालयों में से ढूँढ-ढूँढकर गुरु-इतिहास का वर्णन एकत्रित किया। वृद्धों से पूछताछ करके खोज की। महाराजा रणजीत सिंह जी का शासन काल आप ने देखा था। इस प्रकार आप जी ने एक-एक वार्ता को युक्तियों की कसौटी पर परखकर लिखा है। गुरु नानक देव जी से लेकर 1921 ई० तक का इतिहास आप जी ने लिखा है। पहली बार सभी सिक्ख सम्प्रदायों का इतिहास कलम-बद्ध किया। चाहे ईर्ष्यालुओं ने ज्ञानी जी की रचनाओं को काट-छाटँकर मिलावटें कर दीं परंतु फिर भी वर्तमान इतिहासकारों को ज्ञानी जी के इतिहास से मार्गदर्शन मिलता है। कोई भी इतिहासकार ज्ञानी जी की रचना (लेख) पढ़े बिना इतिहास लिखने का दावा (साहस) नहीं कर सकता। इतिहास के विद्यार्थी ज्ञानी जी के हमेशा ऋणी रहेंगे।

ज्ञानी जी ने निम्नलिखित 35 ग्रंथ लिखे है। जिनमें से 26 ग्रंथ पंजाबी में और 9 ग्रंथ उर्दू में हैं। आपके द्वारा की गई साहित्यिक सेवा इस प्रकार है-

1.	श्री गुरु पंथ प्रकाश	1881 ई० को पत्थर के छापे में दिल्ली छपा
2.	तवारीख गुरु खालसा	1891 ई० में छपी (भाग पहला)
3.	शमशेर खालसा	1892 ई० में छपी (भाग दूसरा)
4.	राज खालसा	1894 ई० में छपी (भाग तीसरा)
5.	सरदार खालसा	गुम हो गया है (भाग चतुर्थ)
6.	पंथ खालसा	गुम हो गया है (भाग पाँचवां)
7.	निर्मल पंथ प्रदीपका	1891 ई० में छपा
8.	खालसा पतत पावन	1892 ई० में छपा
9.	सूरज प्रकाश	(तीन भाग)
10.	गुरधाम संग्रह	1927 ई० में छपा
11.	कथा पूर्णमासी	
12.	रिपदमन प्रकाश	1919 ई० में छपा (पाँच भाग)

13. भूपिन्दरानन्द 1917 ई० में छपा
14. तवारीख अमृतसर 1919 ई० में छपा
15. तवारीख लाहौर
16. गुरपुरब प्रकाश 1883 ई० में छपा
17. इतिहास रियासत बागड़ीयां 1917 ई० में छपा
18. अमृत प्रकाश
19. नीति प्रकाश
20. अनिक प्रकार
21. दोहावली
22. प्रश्नोत्तरी
23. भेष प्रभाकर
24. पंजाबी सीहरफी
25. निर्मल पंथ गुरु प्रणालका वृक्ष
26. एक आयुर्वैदिक ग्रंथ
27. आत्मकथा (स्वः जीवन कथा)

आप जी द्वारा उर्दू में लिखे ग्रंथों का विवरण इस प्रकार हैः-

1. तवारीख गुरु खालसा (हिस्सा पहला)
2. शमशेर खालसा (हिस्सा दूसरा)
3. राज खालसा (हिस्सा तीसरा)
4. सरदार खालसा (हिस्सा चौथा)
5. पंथ खालसा (हिस्सा पाँचवा)
6. तवारीख श्री अमृतसर
7. गुरुधाम संग्रह
8. तवारीख लाहौर
9. स्वानहि उमरी ज्ञानी ज्ञान सिंह

इस प्रकार आप संपूर्ण जीवन सद्गुरु के उपकार और सिक्ख पंथ का यश वर्णन

करते रहे। आपने सिक्ख पंथ संबंधी बहुत ही सूक्ष्मता से विवेकपूर्वक लिखा है। कविता में आप जी ने अनेक तरह के चमत्कार दिखाए हैं। आप को कविता रचना ईश्वरीय देन थी। छंद, शास्त्र, साहित्य के सर्वगुण सम्पन्न विद्वान थे। भारतीय इतिहास, साहित्य, दर्शन के अद्वितीय ज्ञाता थे।

श्रीमान् महंत गणेशा सिंह जी

श्रीमान् महंत गणेशा सिंह जी अथक लेखक, संपादक और टीकाकार थे। सर्वपक्षीय ज्ञान के मालिक थे। आप जी ने इतिहास, साहित्य, वेदांत, आयुर्वेद पर भी अनेक ग्रंथों की रचना और अनेक टीकाएँ की हैं। आप अपनी साहित्य रचना के कारण सदा अमर रहेंगे। 'भारत मत दर्पण' आप की पंजाबी साहित्य में विलक्षण पुस्तक है जिसका अध्ययन करने से पता चलता है कि आपका ज्ञान, अध्ययन कितना महान और विशाल था। इसके अतिरिक्त आपने नीचे लिखे ग्रंथों की रचना की हैः

1. भारत मत दर्पण
2. इतिहास निर्मल भेख
3. ग्रंथ साखी प्रमाण
4. निर्मल प्रबोध
5. निर्मल वैद्य
6. वैदिक भंडार
7. दरबार गाइड
8. ननकाणा साहिब गाइड
9. स्त्री चिकित्सा
10. खालसा विवाह पद्धति
11. संध्या विधि
12. जेबी वैद्य
13. अध्यात्म प्रकाश सटीक
14. सटीक पंज ग्रंथी
15. सुखमनी साहिब स्टीक
16. जपुजी सटीक
17. मेघ विनोद प्रकाश सटीक
18. गंगयती निदान सटीक
19. रहिरास सटीक
20. व्याधि विनाशक टीका
21. बाल चिकित्सा
22. स्वर दर्पण
23. सलोक सहसकृति समेत गाथा सटीक

महिमाशाही संप्रदाय का साहित्य

इस सम्प्रदाय के महापुरुषों ने जहाँ नाम-वाणी, कथा-कीर्तन, सेवा-सिमरन, धर्म-प्रचार, विद्या-प्रचार में अकथनीय योगदान दिया है, वहीं बहुत सारी कविताओं, वाणी

की रचना भी की है। चाहे निर्मले संत काव्य की रचना ब्रजभाषा में करते थे परंतु महिमाशाही संतों ने गूढ़ पंजाबी भाषा में लिखा है जो गुरूवाणी की शैली के नज़दीक है।

जैसे समकालीन सूफी पंजाबी कवि सीहरफी, पैंतीस अक्षरी, पटी, सतवारें, बारांमाहे, काफी, दवैया, बैंत आदि रूप (छंद) प्रयोग करते थे। महिमाशाही संतों ने भी सभी छन्दों, रूपों का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त काफ़ी रचना अनेक रागों में भी की है। महिमाशाही संतों का यह आध्यात्मिक संग्रह एक पावन अप्रकाशित ग्रंथ में सुरक्षित है जिसमें नीचे लिखे 8 महापुरुषों की रचना शामिल है, जिसको महिमाशाही अपना धार्मिक (इष्ट) ग्रंथ मानते हैं:-

1. श्री संत मोहर सिंह जी महिमाशाह
2. श्री संत बीर सिंह जी 'रंगरेज'
3. संत खूब दयाल सिंह जी
4. श्री संत मनमस्तान सिंह जी
5. संत भूपाल सिंह जी
6. संत मान सिंह जी
7. संत खुशहाल सिंह जी
8. संत बेपरवाह जी

यह ग्रंथ महिमाशाहियों के किसी डेरे में नहीं है। इसकी एक प्रति प्रो. प्रीतम सिंह जी लोअर मॉल, पटियाला वालों के पास सुरक्षित है।

संत विहार वृंदावन सिंह जी

संत विहार वृंदावन सिंह जी ने 'ग्रंथ विहार वृंदावन' पाँच सौ से अधिक पृष्ठों में लिखा है जिसको आपने स्वयं 'शांत वेद' कहा है। इसकी वाणी गुरूवाणी से ओत-प्रोत, सात्विक गुण युक्त है, सुरीली और मधुर है। वास्तव में शाँति की खान है। इस ग्रंथ के सातवें संस्करण के पृष्ठ 454 तक संत विहार वृंदावन सिंह जी की वाणी समाप्त होती है।

आगे ऐतिहासिक स्थिति (तथ्य) 'विहार वृंदावन नानकशाही अखाड़े' के श्री महंत संत अटल सिंह जी का लेख अंकित है। संत अटल सिंह जी ने 'अवध अखबार' (मार्च 1870 ई०) लखनऊ की खबर वाला विज्ञापन भी प्रकाशित किया जिसमें अखाड़े का प्रयाग कुंभ में

जाना लिखा है। यह ग्रंथ कविता में है। कहीं-कहीं वार्तिक भी है। भाषा पर उर्दू का प्रभाव है। शैली और आरंभ इस प्रकार है-

एक ओंकार सतिनामु गुरुप्रसादि वाहिगुरु। आगे मंगल है।

करो वंदना दंडवत, नानक शाह महिबूब।।
दसों दिसों मैं रमि रहे, वियापक जल थल दूब।।
वृंदावन जहि प्रगटे, सतिगुर नानक शाह।।
सहजे उनकी बन गई, शब्द रहे लिवलाह।। (पृष्ठ 1)

इस ग्रंथ के पाँच भाग हैं और हर भाग का आरंभ 'एक ओंकार सतिगुर प्रसादि' से होता है। आगे दोहा हैः

वाहिगुरु जो चित्त धरै, सो नर बड़े कुलीन।
या जग मैं निर्भय रहैं, पावैं मुक्ति प्रबीन। (पृष्ठ 7)

पृष्ठ 7 से 13 तक 'वाहिगुरु नामा' आरंभ होता है जिसमें 18 छंद हैं। समध्या पूर्ति (समाप्ति) इन पंक्तियों से होती हैः

'सब काम त्याग जप नाम विश्वंभर, वाहिगुरु कहु वृन्दावन।
बस मुक्ति मिलै सुख चैन बड़े, अरु पाक रहै सार तन मन।'

गज़ल जिसके आरंभिक शब्द हैं:

'गुरु तेग बहादुर ने बनाए हैं सबी काम।
काटें जगत फंद लगाइआ है गुरु नाम।'

वार्तिक का नमूना

'गुरु नानक शाह की वाणी का वृतांत कहों सो सुनो-गुरु नानक शाह फकीर, हिंदू के गुरु और मुसलमान के पीर। धन्य! धन्य!! धन्य!!! क्या वाणी है। शरबत का घूँट है। पढ़ते ही शाँति प्राप्त होती है। तीनों तापों का नाश करने वाली है और वाणी में किसी की निंदा नहीं केवल मालिक की ओर अनुराग सुरत शब्द का मूल और ज्ञान है। पहले सुखमनी साहिब का पाठ करो, क्या अनमोल पदार्थ है। महाराज सत्य है। ऐसी ही प्रशंसा सारे सुनी है और मैंने देखा है कि और पंथों के साधु, ब्राह्मण, उपासक ज्ञानी सब गुरु की वाणी का पाठ करते हैं।' (पृष्ठ 260-261)

सुधर्म मार्ग ग्रंथ

इस ग्रंथ में गुरूमत, गुरूवाणी, गुरुसिक्खी आचार-व्यवहार, मर्यादा के विषय में विस्तारपूर्वक व्याख्यान किया गया है। वास्तव में यह एक रहतनामा (आचार संहिता) है।

इस ग्रंथ को पढ़ने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह किसी विद्वान निर्मले संत ने लिखा है। प्रसिद्ध इतिहास खोजी स० रणधीर सिंह जी ने इस ग्रंथ का लेखक संत रूप सिंह जी निर्मले को माना है। इसमें निर्मले संतों का भोजन खाने का ढंग विशेष रूप से वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ सन् 1858 ई० में लिखा गया है। इस ग्रंथ की भाषा पंजाबी है जिसपर ब्रजभाषा का प्रभाव है। शैली का नमूना इस प्रकार है-

“सिक्खी पाँच प्रकार की है, एक धंधे की जो लोग निगुरा न कहै, दूसरी देखा-देखी जो पदार्थ बहुत होने के लिए, तीसरी हिरसी बहुत जो करै सो करना,----- , पाँचवी सिदक की भाव गुरु पूर्ण के प्रति, पूर्ण जपना, आस, वाणी-भजन करना, हृदय शुद्ध रखना।” प्रसाद बाँटकर खाए, सुरमा दिन में न डाले, नंगा रात्रि में न सोए, गुरुसिक्खों का भोजन खाए, जूठा नहीं खाना, जैसी सोच रखो वैसी अच्छी है।

पंडित शेर सिंह जी नौरंगाबाद वालों ने ‘श्री बीरमृगेष गुर बिलास देवतरु’ बड़े आकार का ग्रंथ लिखा है। बाबा साहिब सिंह जी ऊने वाले, बाबा बीर सिंह जी नौरंगाबाद वाले और बाबा खुदा सिंह जी आदि महापुरुषों का जीवन, उपकार लिखे हैं जो वार्तिक एवं कविता का उत्तम नमूना है।

यह ग्रंथ क्राऊन डबल पेज साइज़ के श्री रामपुरी कागज़ पर गुरुमुखी लिपि में 18 प्वाइंट के आकार में चार बड़ी जिल्दों (भागों) में 2188 पृष्ठों में छप चुका है।

संत टहल सिंह जी- आप पंडित शेर सिंह जी नौरंगाबाद वालों के शिष्य थे और प्रसिद्ध विद्वान, लेखक, कवि थे। आप जी ने तीन ग्रंथों की रचना की हैः-

1. अलंकार सागरसुधा 2. बारां माह 3. कवित सवैये।

महंत दयाल सिंह जी लाहौर वालेः- आप जी ने संपूर्ण निर्मल भेष का इतिहास लिखकर महान उपकार किया है। इस ग्रंथ के चार भाग हैं। प्रथम भाग 511 पृष्ठों का संवत् 2009 बि. में, दूसरा भाग 512 पृष्ठों का संवत् 2020 बि. में, तीसरा भाग 555 पृष्ठों का, चतुर्थ भाग 588 पृष्ठों का रिपब्लिक प्रिंटिंग प्रैस, अमृतसर से सन् 1965 ई० में प्रकाशित किया। निर्मल भेष के विषय में एक और खोजपूर्ण ग्रंथ ‘गुरु नानक का निर्मल पंथ’ कृपा राम प्रैस, लाहौर से सन् 1935 ई० में छपा है। ‘ऋषिकेश भूषण’ प्रसिद्ध विरक्त श्री मान स्वामी हीरा लाल जी का जीवन पंजाबी भाषा में सन् 1924 ई० में प्रकाशित किया था। महंत दयाल सिंह जी की भेष संबंधी साहित्य सेवा वर्णनीय है।

संत निहाल सिंह जी ‘कवींद्र’ः- पंडित निहाल सिंह जी नाम के कई विद्वान संत हुए हैं। हमने प्रकरण अनुसार सभी का वर्णन किया है। संत निहाल सिंह जी कवींद्र का निवास सोहलां वाले बुंगे अमृतसर में था। आप जी इतिहास, मिथिहास, वेदांत, गुरूवाणी, छंद शास्त्र, हिंदी, पंजाबी, ब्रजभाषा और संस्कृत के पंडित थे। आप जी ने 12 रचनाएँ ‘कवींद्र प्रकाश’ ग्रंथ में संग्रहित की हैं जिनका विवरण इस प्रकार हैः-

1. कर्पीद्र प्रकाश 2. श्री वेदांती बारांशाह 3. खोडस तिथां वेदांती, 4. श्री महावाक प्रकाश ग्रंथ 5. श्री भवसागर सेतु 6. श्री दोहरा भेदावली 7. सतवार वेदांती 8. सुधासरी शतक पचीसा 9. श्री मुहरानी की दोहावली 10. श्री वरणी सवैये भेदावली 11. श्री कवींद्र कवितावली 12. नृपवाक आदि प्रसिद्ध हैं।

पंडित देवा सिंह जी देवपुराः- धुरंधर विद्वान पंडित देवा सिंह जी देवपुरा आश्रम हरिद्वार वालों ने 1. अध्यात्म अनुभव विवेक 2. जपु प्रदीप 3. सिद्ध गोसट 4. सुपन विचार 5. फनाह दा मकान 6. मृत्यु चिह्न प्रदीपका 7. पैंतीस अखरी 8. गुरूबाणी के कठिन पदों के पर्याय आदि 8 ग्रंथ लिखे हैं।

कविराज हरिभजन सिंह जीः- आप संस्कृत, ब्रजभाषा, संत भाषा, हिंदी, पंजाबी के महान विद्वान और अद्वितीय कवि थे। ब्रजभाषा में उच्च्व दर्जे की कविताएँ लिखते थे। आप जी ने 6 ग्रंथों की रचना की है। 1. अष्टांग योग 2. तत्व प्रबोध 3. अद्वैतामृत ग्रंथ भाषा (अप्रकाशित) 4. जपुजी का सरल बोध टीका 5. श्री गुरु चरित्र चंद्रिका (अप्रकाशित) 6. श्री गुरु प्रताप सूरज के समस्त मंगल सटीक। यह ग्रंथ गुरुमत प्रैस, अमृतसर में जुलाई 1927 को प्रकाशित हुआ।

संत गुरदित सिंह जी आलो मुहाल वालेः- प्रसिद्ध लेखक, अनुवादक और वैद्य थे। निर्मल भेष में ‘निर्मल पत्र’ अखबार निकालने वाले पहले पत्रकार थे। आप जी ने कुरान का पंजाबी अनुवाद भी किया, जो गुरुमत प्रैस, अमृतसर से सन् 1911 ई० में प्रकाशित हुआ। दो ग्रंथ आयुर्वेद के चिकित्सा कोश (चार भाग) और लंलमभाव चंद्रोदय की टीका (दोनों भाग सन् 1888 ई० में प्रकाशित किए)।

पंडित आत्मा सिंह जी शाह वाले :- आप ने अभेद मंडन, हरिभजनावली, स्वामी दयानन्द का मत और अद्वैतसिद्धि तीन रचनाएँ लिखीं।

संत निरंकार सिंह (उर्फ किशन सिंह) ने 1. बावन अखरी (टीका कल्याण मार्ग) 2. जपुजी साहिब सटीक (सन् 1952 ई०) 3. टीका जैतसरी दी वार 4. टीका राइ बलवण्ड ते सत्ते डूम दी वार 5 पद अर्थ विचार सागर लिखे।

संत मंगल सिंह जी पटियाला वाले :- आप ने ज्योतिष का बड़े आकार का ग्रंथ 'मुहूर्त चंद्रिका' 765 पृष्ठों का लिखा।

नाम मुहूर्त चंद्रिका, सुगम वार्तिक ग्रंथ।

भाषा मंगल सिंह कृत, साध निर्मले पंथ।

महंत बिशन सिंह जी 'क्रीट' महान कवि और कलम के धनी थे। आप की प्रतिभा बुद्धि कमाल की थी। आप ने वार्तिक और कविता में 9 पुस्तकें लिखीं हैं-

1. देश जगावां 2. जीवन फुहार (सन् 1949 ई०) 3. नूरी झलकां (सन् 1932 ई०)

4. जिंदगी दे मोड़ (सन् 1980 ई०) 5. बिखरे मोती (सन् 1980 ई०)

6. मिठ्ठा नानक (सन् 1982 ई०) 7. लंघदे जांदे काफले

8. नूरी जीवन (जीवनी) 9. अमृत वचन ते संत दर्शन

बाबा जवंद सिंह जी खवासपुर, जिला अमृतसर वालों ने 1. ब्रह्म निकटावली 2. नामावली 3. प्रियाय वैरागशतक 4. नाम मंजरी चार ग्रंथ लिखे हैं।

ज्ञानी तेजा सिंह जी वैद्य शास्त्री शिष्य संत हरनाम सिंह जी लाइलपुर वालों ने 1. चाणक्य राजनीति 2. जीवन धनंत्री 3. दशमेश उद्देश्य 4. स्त्री जीवन 5. रुपदीप पिंगल सटीक पाँच ग्रंथ लिखे हैं। ज्ञानी जी का निवास अमृतसर में था।

संत निहाल सिंह जी वैद्य काशी वाले (श्री महंत पंडित ऊधव सिंह जी के शिष्य) वैद्य एवं आयुर्वैदिक ग्रंथों के लेखक थे। आप जी ने निम्नलिखित ग्रंथ लिखे हैं-

1. चार नार की चौंकड़ी 2. चार बाल की चौंकड़ी 3. चार मरद की चौंकड़ी 4. चार फकीर की चौंकड़ी 5. निहाल सिंह संहिता (अप्रकाशित) ग्रंथ भी आप जी ने लिखा है।

संत ज्ञानी करतार सिंह जी वैद्यराज गाँव चबेवाल, जिला होशियारपुर ने 'गुरुमत सार संग्रह' (जिसमें अलग-अलग लेख हैं) प्रकाशित किया है।

पंडित नानू सिंह जी ने गुरु ग्रंथ सटीक, अध्यात्म रामायण, एकादशी महात्मय, ज्ञान नाटक पर काम किया है।

श्री संत बख्शीश सिंह जी चौंक बाबा साहिब, अमृतसर ने 'प्रयाय श्री दशम ग्रंथ' लिखा है।

पंडित हरदेव सिंह जी ऋषिकेश वालों ने 'नारायण हरि उपदेश' बड़े आकार का ग्रंथ लिखा है। इस ग्रंथ में आप जी ने अपने पूज्य महापुरुष श्रीमान् पंडित नारायण सिंह जी का जीवन चरित्र व उपदेश लिखे हैं। यह ग्रंथ शुभ उपदेशों का खजाना और पद पदार्थों का भंडार है। हिंदी और पंजाबी में प्रकाशित हुआ है।

संत करम सिंह जी ने 'सद सुख प्रकाश', 'श्री गुरु बंस चंद्रोदय', 'हरि अदृष्ट' तीन ग्रंथ लिखे हैं, जो अप्रकाशित हैं।

स्वामी मेहर सिंह जी ने 'पिंगल प्रस्तार' छन्द शास्त्र का बहुत ही सुंदर ग्रंथ लिखा है।

श्री संत लाल सिंह जी 'नरोत्तम' ने श्री गुरु भगतमाला, पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, महिमा प्रकाश, बारांमाह, श्लोक सहसकृती टीका, गिणती शब्दों की, परलोक झाती, संत महात्म, बचन प्रकाश, बारांमाह तुखारी सटीक (गुरबख्श प्रैस, लाहौर से सन् 1908 ई० में 10 ग्रंथ प्रकाशित किए)।

संत दल सिंह जी ने 'हजारे दे शब्द' (टीका) सन् 1900 ई०, 'गउड़ी राग सटीक' सन् 1902 ई०, 'टीका सुखमनी साहिब' सन् 1919 ई०, 'टीका पैंतीस अखरी' सन् 1899 ई०, 'बावन अखरी भावार्थ प्रदर्शनी' आदि गुरूबाणी के टीके किए हैं।

संत हरी सिंह जी होतीमरदान ने 'खालसा स्तोत्र गुरमंत्र महात्म' (सन् 1948 ई०) में लिखा।

संत गुरुमुख सिंह जी होतीमरदान ने 'श्री गुरु ग्रंथ कोश' सहित 'वाणी बिओरा' और 'श्री गुरु ग्रंथ बालबोधनी' गुरूबाणी की व्याख्या के ग्रंथ लिखे।

संत झंडा सिंह जी ने 'पाहुल की मर्यादा का ग्रंथ' लिखकर अमृत तैयार करना और छकाने की विधि की व्याख्या की है।

संत संगत सिंह जी गाँव तोलेवाल (जिला संगरुर) वालों ने छंद शास्त्र का अपूर्व ग्रंथ 'पिंगल प्रस्तार' लिखा, जिसमें छन्द प्रस्तार बनाने की विस्तारपूर्वक व्याख्या की है। पंजाबी में यह ग्रंथ शास्त्र का महान ग्रंथ है। संत संगत सिंह जी का दूसरा ग्रंथ 'ग्रंथ मत संग्रह'

वजीर हिंद प्रैस, अमृतसर से प्रकाशित हुआ।

पंडित श्याम सिंह जी डेरा मंगवाल (जिला जेहलम, अब पाकिस्तान) वालों ने 'पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के' लिखे जो 'ऐंग्लो उर्दू एण्ड गुरुमुखी प्रैस, अमृतसर' से 1906 में प्रकाशित हुए थे।

संत तारा सिंह जी लाहौर वालों ने 'निर्मल प्रभाकर' और 'मलेछ मत खण्डन' दो ग्रंथ लिखे। ज्ञानी बुद्ध सिंह जी ने 'जपुजी साहिब सटीक' सन् 1905 ई० में अमृतसर से छापा था। संत बुद्ध सिंह जी लाहौर वालों ने 'शृंगारशतक' का अनुवाद किया जो 'कारोनेशन प्रिटिंग वर्क्स प्रैस, अमृतसर से सन् 1921 ई० में छपा।

महंत प्रताप सिंह जी भिखी खटड़ा वालों ने 'गंगयती निदान' का टीका 'त्रिकाल दर्पण', 'योगनिधि' (गुरूमत प्रैस, अमृतसर सन् 1928 ई०), 'कुशता प्रबोध', 'रस मंजरी' (वजीर हिंद प्रैस, अमृतसर सन् 1927 ई०) पाँच ग्रंथ लिखे।

संत टहल सिंह जी लंमेजगीर वालों ने 'गुरुगिरा रागमाला मण्डल प्रबोध' ग्रंथ लिखकर गुरबख्श प्रैस, लाहौर से सन् 1903 ई० में प्रकाशित किया, जिसमें रागमाला को प्रमाणों द्वारा गुरूबाणी सिद्ध किया।

संत निहाल सिंह जी गोविन्द मंदिर लाहौर वालों ने तीन ग्रंथ 'अकाल नाटक', 'सिखी प्रभाकर', निर्मल प्रभाकर' लिखे हैं। आप महान विद्वान थे। बड़े उच्च स्तर की कविता बनाते थे। छंद शास्त्र का आपको पूर्ण ज्ञान था। पुरातन सिक्ख संगतों में आपकी कविता का अत्यंत सत्कार था।

श्रीमान् पंडित गोविन्द सिंह जी आप प्रकाण्ड विद्वान थे। गुरुमत, वेदांत, इतिहास, मिथिहास और संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। आप जी ने कई ग्रंथ लिखे, जिनका वर्णन नीचे लिखा हैः-

1. **न्याय मुक्तावली**

आप जी ने इस ग्रंथ का हिंदी टीका लिखकर कम संस्कृत पढ़े अथवा केवल हिंदी पढ़े व्यक्तियों पर महान उपकार किया है। आप लिखते समय बहुत ही विवेक एवं विचार -पूर्वक लिखते थे। आप रुढ़िवादी नहीं थे अपितु एक पक्षपात रहित लेखक थे।

2. **वेदांत परिभाषा**

वेदांत परिभाषा के टीके का यही उद्देश्य था कि आरंभिक वेदांत विद्या के विद्यार्थी

वेदांत की परिभाषा को समझकर अच्छी तरह सरलता से अध्ययन कर सकें। ऊपर वर्णन किया गया है आप जी ने गुरुमत को स्थापित किया। इसी प्रकार वेदांत परिभाषा में छह शास्त्रों के रचयिता ऋषियों और भास्कर आचार्यों का निर्भय होकर बादलील (तर्कपूर्ण) खंडन किया है। आप जी ने लिखा है कि जब 'सत्य' एक है, फिर उसके भिन्न-भिन्न मार्ग बताना ठीक नहीं है।

आगे लिखा है कि एक वे दर्शनकार हैं, जो 'शब्द प्रमाण' को 'ध्रुव' नहीं मानते, जैसे 'चार्वाक्', बोध, जैन विचारों वाले हैं। दूसरे 'शब्द प्रमाण' को आधार मानने वाले -न्याय के लेखक गौतम ऋषि, वैशेषिक शास्त्र के कर्ता ऋषि कणाद, सांख्य शास्त्र के कर्ता ऋषि कपिल, योग शास्त्र के कर्ता पतंजलि, पूर्व मीमांसा के लेखक जैमिनि और उत्तर मीमांसा के लेखक बदरायण ऋषि हैं। शब्द प्रमाणों को मानने वाले ऋषियों में भी विचारों की एकजुटता (सांझेदारी) नहीं है।

आगे भास्कर आचार्य भी विचारों में भिन्नता रखते हैं। जैसे बदरायण ऋषि ने 'ब्रह्म सूत्र' के बारे शंकराचार्य का 'अद्वैतवाद', रामानुजाचार्य का 'विशिष्टतावाद', मध्वाचार्य का 'द्वैतवाद', निंबकाचार्य का 'द्वैताद्वैतवाद', बल्लभाचार्य का 'शुद्ध द्वैतवाद' प्रसिद्ध है। पंडित गोबिंद सिंह जी के कथन अनुसार ये सारे ऋषि और आचार्य एकमत कहते हैं कि भ्रांति खत्म करने के लिए ये शास्त्र रचाए गए हैं। वास्तव में सारे ऋषि और आचार्य भ्रांति उत्पन्न कर रहे हैं। किस ऋषि या आचार्य के शास्त्र को शब्द प्रमाण माना जाए?

पंडित गोबिंद सिंह जी ने एक प्रमाण दिया कि एक बालक जंगल में रास्ता भूल गया, वहाँ दस व्यक्ति आकर उसको दस अलग-अलग दिशाओं की तरफ से घर का रास्ता बताएँ तो वह बालक सोचेगा कि ये व्यक्ति या तो बुद्धिहीन हैं या ठग हैं, क्योंकि घर का रास्ता तो एक ही दिशा की तरफ हो सकता है, दस दिशाओं की तरफ नहीं हो सकता। यही स्थिति शास्त्रकार ऋषियों और शास्त्रों के भास्कर आचार्यों की है।

आप जी ने कटाक्ष करते हुए फुरमाया है, "शत सुबोध की एक मति और मूर्ख आपो अपनी।" अर्थात सैंकड़ों बुद्धिमानों का एक ही विचार होता है। मूर्ख का एक ही विषय पर भिन्न-भिन्न निर्णय होता है। "सो विचारशील पुरुष विचार करें कि हमारे सम्प्रदाय प्रवर्तक आचार्य लोगों की किस कोटि में गणना होनी चाहिए।"

इस तरह आप जी ने 'वेदांत परिभाषा' की टीका में निर्भय 'सिंधु नाद' आवाज़ में

अपने विचारों को प्रकट किया है। फिर भी आप जी ने प्रस्तावना के अंत में स्वामी शंकराचार्य जी की बहुत प्रशंसा की है। अन्य आचार्यों के मुकाबले में शंकर और उसकी शिष्य मंडली को महान बताया है।

वेदांत परिभाषा का टीका संवत् 1976 बि. में 'लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रैस कल्याण बंबई' से प्रकाशित हुआ है।

इतिहास गुरु खालसा

यह ग्रंथ बहुत ही सूक्ष्म खोज तथा प्रयास से लिखा है। इस ग्रंथ का अध्ययन करने पर पता चलता है कि आप ने भारत के इतिहास, मिथिहास का कितनी सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है। मिथिहास को इतिहास से अलग करने की महान बुद्धि रखते थे। 'इतिहास गुरु खालसा' से यह भी पता चलता है कि आप जी ने प्राचीन मुस्लिम इतिहासकारों की फारसी तथा उर्दू तारीखों का बारीकी से अध्ययन किया था। गुरु घर के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी। इस बात का परिचय 'न्याय मुक्तावली' सटीक एवं 'वेदांत परिभाषा' सटीक से मिलता है।

दोनों टीकाओं में आप हर प्रकरण के आरंभ में संस्कृत श्लोकों में केवल श्री गुरु नानक देव जी का ही मंगल करते हैं।

वैराग्य शतक पर भी आप ने टिप्पणी की है।

उद्योग तथा प्रारब्ध ग्रंथ भी लिखा है।

श्रीमान् पंडित सदा सिंह जी चेतनमठ काशी वालों ने सन् 1767 ई० में 'अद्वैतसिद्धि' की 'सुगमसार चंद्रिका' टीका लिखी है, जो वेदांत का उच्चकोटि का अपूर्व ग्रंथ है।

श्रीमान् पंडित निहाल सिंह जी ने सन् 1795 ई० में जपुजी का 'जपु गूढ़ार्थ दीपका' संस्कृत टीका लिखा, जिसमें गुरूवाणी के सिद्धांतों को स्पष्ट करना और वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों के प्रमाण एवं दृष्टांत द्वारा गुरूवाणी को श्रेष्ठ, मोक्षदायक सिद्ध किया है। विद्या दिवाकर श्री महंत पंडित उधव सिंह जी 'न्यायिक' ने दो ग्रंथ लिखे हैं- 'आश्रम धर्म रहस्य' तथा 'अभाव रहस्य'। अभाव रहस्य में विचार सागर के लेखक स्वामी निश्चलदास जी के भ्रमों का खंडन किया है।

पंडित मंगल सिंह जी काशी वालों ने भी न्याय पर 'अभाव रहस्य' नामक ग्रंथ लिखा है।

पंडित कौर सिंह जी ने पंजाब से बाहर गुरूमत की विशेषता बताने के लिए 'गुरु

कौमुदी' नामक ग्रंथ संस्कृत में लिखा।

पंडित बाबा प्रेम सिंह जी ऋषिकेश वालों ने 'श्री वाहिगुरु मंत्र स्तोत्रम्' और 'गुरु स्तोत्र त्रयम्' संस्कृत में दो लघु ग्रंथ लिखे।

पंडित तारा सिंह जी तरनतारन वालों ने संस्कृत में 'मुमक्षु बोधन प्रकाश' वेदांत का अद्‌भुत ग्रंथ लिखा है।

श्री पंडित हरि सिंह जी 'विरक्त' पंजाब सिंध वालों ने हिन्दी में 'अद्वैतानुभव प्रकाश' लिखा है।

श्री पंडित ज्ञान सिंह जी ने 'ऋषि निर्मल ज्ञान' और 'गुरु नानक निर्मल पद्धति' दो ग्रंथ लिखे हैं।

संत मखन सिंह जी शाहपुर ने 'नानक प्रकाश' का हिंदी अनुवाद लिखकर प्रकाशित किया।

श्रीमान् पंडित बुद्ध सिंह जी ने 'न्याय दर्शन' के ग्रंथ 'तर्क संग्रह' का संस्कृत में 'पदकृत्य' नामक टीका लिखा है। यह टीका संस्कृत विद्वानों में सर्वप्रिय है जोकि पंडित चंद्रज सिंह के टीके के नाम से विख्यात है। दूसरा ग्रंथ 'प्रस्तार प्रभाकर' लिखा है।

पंडित अर्जुन सिंह जी 'मुनि' शास्त्री, व्याकरणाचार्य (प्रेम सदन निर्मल छावनी, हरिद्वार) ने हिंदी भाषा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का टीका आरंभ किया था, उसके दो भाग प्रकाशित होकर पाठकों के कर कमलों में पहुँच चुके हैं। मुनि जी के युवावस्था में वैकुण्ठ गमन कर जाने के कारण यह टीका संपूर्ण न हो सका अन्यथा यह टीका ज्ञान में बढ़ोतरी करने वाला था। इस टीका में गुरूबाणी की व्याख्या करते नए-नए रहस्य प्रकट किए गए थे। यह शंका आम चलती रहती है कि पाठ 'इक ओंकार' अथवा 'इक ओ३म्' है। मुनि जी ने यह निर्णय वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों, व्याकरण, गुरूबाणी और भाई गुरदास जी आदि गुरुघर के ग्रंथों, सिद्धांतों द्वारा, 'इक ओंकार' पाठ सिद्ध करके शंका निवृत्त कर दी है।

पंडित गुरदित्त सिंह जी ने संस्कृत, हिंदी और पंजाबी में यह ग्रंथ लिखे हैं।

1. जपुजी सटीक (हिंदी) 2. गुरुगिरा रुपांतर (काव्य में मूल सहित श्री गुरु तेगबहादुर जी के श्लोकों का संस्कृत टीका) सन् 1935 ई० में लाहौर से छपा 3. गुरूमत सिद्धांत सार (हिंदी, पंजाबी) 4. वेदांत सिद्धांत मुक्तावली (हिंदी भाषा टीका) 5. नैष्कर्मयसिद्धि (वेदांतिक ग्रंथ का हिंदी टीका) 6. गुरु नानक अष्टक (संस्कृत श्लोकों में स्तुति) 7. श्रीमद् गुरु गोबिन्द सिंह अष्टकम् 8. रामाशतक (राम स्तोत्र संस्कृत) 9. जीवन चरित्र पंडित हरि

सिंह जी (प्रवचनों एव प्रमाणों सहित)

पंडित ईश्वर सिंह जी ने निम्नलिखित ग्रंथों की रचना की है।

1. गुरुमत दिग् विजय 2. बुद्धि वारिधि 3. वाहिगुरु मंत्रार्थ (गुरुमुखी में) 4. गुरु मंत्रार्थ प्रकाश (संस्कृत में) 5. स्वै-सुपन नाटक।

आपजी गुरु मंत्रार्थ प्रकाश (संस्कृत) की भूमिका में ग्रंथ लिखने का कारण बताते हुए लिखते हैं कि हिंदू धर्म, ब्राह्मणों, संन्यासियों, बैरागियों आदि विद्वान पंडितों में यह प्रश्न उठता रहता था कि 'वाहिगुरु' मन्त्र मोक्षदाता नहीं है। मोक्ष प्राप्ति कृष्णादि मंत्रों द्वारा ही हो सकती है। इस विषय पर आप जी के साथ काशी, नासिक, अयोध्या, प्रयागराज आदि तीर्थों तथा कुम्भ पर्वों पर विपक्षियों के शास्त्रार्थ हुए। शास्त्रार्थ के समय आपजी ने वाहिगुरु मंत्र को सर्व शिरोमणि तारक (मोक्षदाता) सिद्ध करके विपक्षियों के किंतु-परंतु को खत्म कर दिया। आप जी ने एक युक्ति वाक्य कहा है कि राम नवमी को श्री रामचंद्र जी का जन्म हुआ था। भाद्रपद की अष्टमी को श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ था, किंतु जिसका जन्म नहीं, वंश नहीं, जिसकी मृत्यु नहीं, जो सदैव है, वह 'वाहिगुरु' है इस मंत्र का यह अर्थ है।

अब हम पंडित जी के कथन किए गए समस्त अनुवाद में से कुछ विचार पाठकों के सम्मुख रखते हैं, जिससे पाठकों को पंडित जी की संतभाषा एवं शैली का पता चलेगा -

"वाहिगुरु मंत्र के सिद्धांत एवं विचार का निरुपण करते हैं। इसलिए न्याय, व्याकरण, वेदांत इन तीनों के विचार को लेकर किया। इस कारण इस मंत्र का अर्थ बहुत कठिन है। इस मंत्र के चारों अक्षरों में धातु, प्रत्यय, पद, अर्थ, ज्ञान यह पाँचों पाँच सौ में हैं इसलिए हमने अपने बनाए हुए उस संस्कृत ग्रंथ की रचना निबंध की है सो इसलिए इस ग्रंथ में बुद्धिबल की बहुत ज़रूरत है। सो यहाँ गुरुमुखी विद्या में बहुत सरल अर्थ करके लिखा है। तब भी फलतः अर्थ बहुत कठिन है। क्योंकि वाहिगुरु मंत्र का अर्थ विद्या का खजाना है। आगे आप लिखते हैंः-

"वाहिगुरु इस मंत्र में एक-एक अक्षर के अलग-अलग अनेक पद हैं। उन अनेक पदों के अनंत ही अर्थ हैं और अनंत ही अर्थों में ज्ञान है और बेअंत ही धातुएँ हैं, बेअंत ही प्रत्यय हैं और धातु प्रत्ययों के अर्थ भी बहुत प्रकार के हैं, इसलिए वाहिगुरु मंत्र में विचार वृत्ति निरोध करके ही करना यथार्थ है।"

❐

7 गुरूमत दिग्विजय

गुरूमत दिग्विजय में गुरुमत सिद्धांतों की विशेषता रोचक शैली में वर्णन की गई है जो सन् 1903 ई० में लिखा गया था। गुरु मंत्रार्थ प्रकाश (संस्कृत) सन् 1906 ई० में लिखा गया। वाहिगुरु मंत्रार्थ (गुरुमुखी) सन् 1909 ई० में लिखा। स्वै-सुपन नाटक में आप की आत्मकथा संक्षिप्त रूप में लिखी गई।

यह सारे ग्रंथ 'बांबे मशीन प्रैस, लाहौर' से सन् 1910 ई० में प्रकाशित किए गए।

श्रीमान् 108 श्री महंत पंडित बलबीर सिंह जी शास्त्री वेदांताचार्य ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अमृतसर से प्रकाशित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के शब्दार्थ का हिंदी टीका किया है, जो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने हिंदी पाठकों के लिए आप जी से विशेष तौर पर तैयार करवाया है। शब्दार्थ का प्रथम संचय (पहली जिल्द) सन् 1966 ई० में गुरुद्वारा प्रिंटिंग प्रेस, अमृतसर से प्रकाशित हुई थी। इस ग्रंथ में छह पृष्ठों की भूमिका पढ़ने योग्य है।

पंडित हकीकत सिंह जी अरविंद ने 'आत्म सरिता' में श्रीमान् महंत आत्मा सिंह जी निर्मल आश्रम, ऋषिकेश वालों की जीवनी हिंदी भाषा में लिखी है। अरविंद जी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित, गुरुमत तथा गुरूवाणी के महान ज्ञानी थे। आत्म सरिता रोचक, विद्वता भरपूर पद-पदार्थों का संग्रह है।

पंडित आत्मदेव सिंह जी लाहौर वालों ने 'अभेदा खण्ड चंद्रमा' संस्कृत में 'मित्र विलास प्रैस लाहौर' से सन् 1884 ई० में लिखकर छपवाया।

पंडित हरि सिंह जी 'नरोत्तम' काशी वालों ने 'श्री गुरु सिद्धांत पारिजात' गुरुमत एवं गुरूवाणी की व्याख्या के लिए संस्कृत में लिखा। इस संस्कृत ग्रंथ का हिंदी अनुवाद आप जी के पौत्र शिष्य श्री संत ठाकुर सिंह जी 'पथिक' ब्रह्मकुटी काशी वालों ने किया था, जो छप नहीं सका।

पंडित साधु सिंह जी पीलीभीत वाले संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। आप जी ने जपुजी का हिंदी टीका उन्नीसवीं (19 वीं) सदी के अंत में किया था। इस टीका में पुष्टि के लिए

वेदों, उपनिषदों, श्रुतियों, स्मृतियों के अनेक प्रमाण दिए गए हैं। इसके अलावा 'गुरु ग्रंथ प्रदीप' ग्रंथ भी लिखा। इसके आरंभ में भी जपुजी साहिब की विस्तारपूर्वक व्याख्या है। यह ग्रंथ सन् 1906 ई० में प्रकाशित हुआ था।

वेदांत केसरी स्वामी लाल सिंह जी (प्रसिद्ध निर्मल स्वामी) अमृतसर वालों ने भी जपुजी का हिंदी में मनोहर टीका किया है, जिस में अनेक प्रमाण तथा दृष्टांत देकर गुरूवाणी के गौरव को प्रकट किया है। वेदांत के छोटे-छोटे 15-20 ग्रंथ लिखे हैं।

स्वामी ज्ञानी चंदा सिंह जी षट्-शास्त्री निर्मल आश्रम, ऋषिकेश वालों ने हिंदी भाषा में 'कथा व्याख्यान भंडार' लिखा है जो वास्तव में ज्ञान का भंडार है। कथावाचकों, भाषा दाताओं के लिए अद्वितीय संग्रह है। इस ग्रंथ में 58 विषयों पर विद्वत्ता युक्त भिन्न-भिन्न लेख हैं।

महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी निर्मल आश्रम ऋषिकेश वालों के प्रवचनों पर आधारित 'निर्मल उपदेश' बहुत ही सुंदर ग्रंथ है।

श्रीमान् संत बाबा निक्का सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के मुख वाकों की कथा बहुत ही विद्वता पूर्ण तरीके से की है जो कि 'सहज कथा' के पाँच भागों के रूप में पंजाबी और हिंदी में छप चुकी है।

श्रीमान् संत श्रवण सिंह जी डुमेली वालों ने 'स्वर सिमरन संगीत' सात भागों में बहुत ही सुंदर रागों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया।

श्रीमान् संत साधु सिंह जी शास्त्री जी ने 'सहज सुअखरी' बहुत ही सुंदर ग्रंथ लिखा।

❑

8 पत्रकारिता में योगदान

जिस प्रकार निर्मले महापुरुषों ने साहित्य सेवा करने में अकथनीय मेहनत की है उसी प्रकार पत्रकारिता में भी अग्रणी रहे हैं। बीसवीं सदी में जब अखबार प्रचार का मुख्य साधन बन गए तब निर्मले संतों ने ग्रंथ रचना के साथ-साथ सम्प्रदाय एवं धर्म प्रचार के लिए अखबार भी जारी किए जिसमें भेष संबंधी खबरें प्रकाशित होती थीं। विद्वानों के धार्मिक और दार्शनिक लेख भी होते थे। निर्मल भेष के सभी अखबार साप्ताहिक अथवा मासिक निकलते हैं जो पंजाबी और हिंदी में छपते रहे हैं। अब तक निकले अखबार इस तरह हैः

1. निर्मल पत्रः- संपादक वैद्य संत गुरदित्त सिंह आलोमुहार अमृतसर, सन् 1909-1915 ई०।

2. हरिद्वार समाचारः- संपादक पंडित मान सिंह जी शास्त्री, गुरुद्वारा ज्ञान गोदड़ी, हरिद्वार सन् 1927 ई०।

3. निर्मल गजटः- संपादक स्वामी संत सिंह जी, श्री गुरु नानक आश्रम, हरिद्वार

4. निर्मल समाचारः- संपादक महंत किशन सिंह जी डेरा वरपाल, अमृतसर सन् 1932 ई०।

5. निर्मल पत्रः- मुख्य संपादक महंत दयाल सिंह जी, संपादक ज्ञानी बिशन सिंह 'क्रीट' अमृतसर सन् 1937-1948 ई०।

6. पंजाबी वैद्यः- संपादक महंत हरि सिंह, गली बाग वाली, चौंक बाबा साहिब, अमृतसर सन् 1950-53 ई०।

7. निर्मल उद्देशः- संपादक महंत हरि सिंह, गली बाग वाली, अमृतसर 3 नवंबर 1960 ई०।

8. गुरूमत समाचारः- संत विसाखा सिंह जी किशनपुरा कलां वाले, लुधियाना से प्रकाशित करते थे।

9. पंजाबी परवानाः- मुख्य संपादक संत दयाल सिंह जी परवाना, संपादक ज्ञानी

बलवंत सिंह जी, कोठागुरु। यह मासिक पत्र सन् 1952 ई० को कोटकपूरा से चालू किया गया।

10. निर्मल संदेशः- मुख्य संपादक महंत प्रताप सिंह, संपादक पंडित तेजिंदर सिंह जी शास्त्री, गाँव कांउकेकलां, जिला लुधियाना।

11. निर्मल प्रकाशः- मुख्य संपादक महंत प्रताप सिंह जी कांउकेकलां, जिला लुधियाना।

12. निर्मल चिंतामणिः- मुख्य संपादक ज्ञानी बलवंत सिंह जी कोठा गुरु, उप संपादक ज्ञानी कौर सिंह कोठा गुरु ने गाँव कोठा गुरु जिला बठिंडा से जारी किया (चलाया)।

❑

9 गुरुद्वारों की कार सेवा

सेवा-सिमरन, सत्संग को सिक्खी में सर्वोपरि माना जाता है। सिमरन के पश्चात् सेवा को उत्तम माना गया है। गुरुद्वारों की कार सेवा को तो और भी श्रेष्ठ माना गया है। महापुरुष गुरुद्वारों की सेवा सदियों से करते आ रहे हैं। संपूर्ण संसार के ऐतिहासिक गुरुद्वारों की निशान-देही करने वाले संत ही हैं। गुरुद्वारों की सुंदर से सुंदर इमारतों का निर्माण भी संतों ने ही करवाया है।

जिस समय सिंहों के सिरों के मूल्य पड़ते थे खालसा पंथ जंगलों-पहाड़ों में रहता था, उस समय गुरुद्वारों में धूप-दीप-ज्योत आदि संत ही करते थे। सेवा-संभाल का कार्य संतों ने लिया था।

महापुरुष गुरुद्वारों की अकथनीय सेवा करते रहे हैं। बीसवीं सदी में श्रीमान् पूज्य संत अतर सिंह जी महाराज मस्तूआणे वालों ने गुरुकाशी दमदमा साहिब के गुरुसर सरोवर की कार-सेवा करके एक प्रकार से सेवा का आरंभ किया। उसके पश्चात् अनेक महापुरुष साहिब वाले तेग के धनी हुए हैं। जहाँ भी धर्म, सिक्खी, आन-शान का विरोध हुआ, वहीं इन महापुरुषों की तेग ने गुरु के निंदकों को सीधा चलना सिखा दिया।

महाराजा रणजीत सिंह जी के बाद डोगरों ने जो धांधली (धोखेबाज़ी, ज़बरदस्ती) मचाई थी, उसको केवल बाबा वीर सिंह जी ही समझते थे। आप सिक्ख राज्य के शुभचिंतक थे। सिक्ख राज्य के हितैषियों को समय-समय पर सूचित करते थे। इसलिए डोगरों ने बाबा वीर सिंह जी को शहीद करवा दिया। डोगरों की गद्दारी के कारण सिक्ख राज्य का पतन हो गया। पुनः स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए बाबा वीर सिंह जी के उत्तराधिकारी बाबा महाराज सिंह जी मैदान में आए। अंग्रेजों के विरुद्ध संगठन करना आरंभ कर दिया। शस्त्र धारण कर लिये, इंकलाबी नेता बन गए। सन् 1845-46 ई० और सन् 1848-49 ई० की लड़ाइयों में सतलुज किनारे और गुजरात में सिक्ख फौजों की अगुवाई करते रहे।

भारत में स्वतंत्रता संग्राम आरंभ करने वाले निर्मले संत बाबा महाराज सिंह जी हैं जिन्होंने सभी सुख-सुविधाओं का त्याग करके जंगलों में आसन लगा लिया। आजादी की

ज्योत जगाने वाला यह महान संग्रामी अंग्रेजों ने आदमपुर (जिला जालंधर) से गिरफ्तार कर लिया और सिंगापुर की जेल में बंद कर दिया जो 7 वर्षों तक असहनीय कष्ट सहते-सहते 5 जुलाई 1856 ई० में सचखण्ड सिधार गए।

उस समय बाबा जी के साथ निम्नलिखित महापुरुष (डेरा नौरंगाबाद में से) गिरफ्तार किए गए थे।

1. संत खड़क सिंह जी (जोकि बाबा जी के साथ सिंगापुर जेल में रहे)
2. बाबा खुदा सिंह जी
3. माता चंद कौर जी (धर्मपत्नी बाबा खुदा सिंह जी)
4. महंत प्रेम सिंह जी
5. संत राम सिंह जी विरक्त
6. संत सेवा सिंह जी
7. संत हजूरा सिंह जी
8. संत सरमुख सिंह जी।

महारानी जिंदा को नेपाल में पहुँचाने वाले भी निर्मले संत थे।

श्रीमान् बाबा महाराज सिंह जी सिक्ख राज्य को स्थिर करने के पक्षधर योद्धा, स्वतंत्रता संग्रामी, अंग्रेजों के कट्टर विरोधी एवं भारत की आजादी के पहले नायक थे। चाहे आप जी को गिरफ्तार करके सिंगापुर की जेल में भेज दिया गया, जहाँ आप अनेक प्रकार के कष्ट सहते हुए 7 साल जेल में रहकर 5 जुलाई, 1856 ई० में सचखण्ड (बैकुण्ठ) सिधार गए। आपजी की जगाई आजादी की ज्योति और भी उग्र होकर प्रचण्ड हुई। बाबा जी बड़े निपुण, व्यवहार कुशल और संगठन कर्ता थे। आप जी ने श्री संत राम सिंह जी विरक्त की प्रधानगी में आठ संतों का एक समूह इसलिए बनाया था कि महाराजा दिलीप सिंह जी को उठाकर अपने कब्जे में किया जाए और महाराजा दिलीप सिंह के नाम से अंग्रेजों को पंजाब से निकालने का संघर्ष तेज किया जाए। खास आदमियों के नाम पर पत्र लिखकर खर्च के लिए 1100 रुपये देकर लाहौर की तरफ भेजा गया जो लाहौर जाकर एक धर्मशाला में ठहरे। शक होने पर इस धर्मशाला की तलाशी हुई और आठों संत बंदी बना लिए गए। इसी प्रकार बाबा महाराजा सिंह जी की योजना-अनुसार दूसरा समूह तैयार

किया गया ताकि महारानी जिंदां को अंग्रेजों के कब्जे से स्वतंत्र करवाया जाए। महारानी जिंदां को अग्रेजों ने पहले शेखपुरे के किले में, बाद में 'चुनार' के किले (उत्तर प्रदेश) में नज़रबंद किया था। महारानी चुनार के किले से भागकर नेपाल चली गई।

महारानी नेपाल कैसे पहुँची? इस सारे कार्य के पीछे निर्मले संतों का वह समूह काम कर रहा था जिसकी जिम्मेदारी बाबा महाराज सिंह जी ने लगाई थी। वह बहुत रोचक कहानी है जो अभी तक प्रकाश में नहीं आई है।

महारानी को चुनार के किले से निकालने वाले पाँच निर्मले संत थे-

संत रणजोध सिंह, संत रणवीर सिंह, संत रणधीर सिंह, संत रणविजय सिंह, संत रणविक्रम सिंह। इस कार्य को वास्तविक रूप देने के लिए कई महीने विचार-विमर्श होता रहा था। सारी योजना तैयार की गई। महारानी और दासी को पूरी ट्रेनिंग दी गई। रास्ते का, नदियों का, किश्तियों का निर्णय किया गया। दौड़ने के तुरंत बाद महारानी को संभालने का प्रबंध किया गया। महारानी का भेष बदला गया। सफर में दो संत 5-6 मील आगे-आगे चलते थे और सभी खतरों का एवं रास्ते का निर्णय करते थे। दो संत महारानी के साथ थे। एक संत 5-6 मील पीछे रहकर हालात पर नज़र रख रहा था। यह प्रयत्न सफल हुआ। महारानी हिंदुस्तान की सीमा पार करके नेपाल में चली गई और काठमाण्डू पहुँच गई। नेपाल नरेश से मिलकर राजसी शरण माँगी गई जो नेपाल नरेश ने स्वीकार करके महारानी को राजसी शरण देकर थापाथली के राणाओं के महल में रहने की आज्ञा दे दी।

महारानी को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर महारानी के साथ आए सभी संत पश्चिमी नेपाल के 'मुक्ति नाथ' और 'पवित्र गण्डकी' के उद्गम स्थान की तरफ चले गए।

❑

10 गौ-रक्षा एवं देश-रक्षा

जहाँ भी आन-शान, मान-सम्मान एवं धर्म पर हमला हुआ, निर्मले महापुरुष वहीं गुरुद्वारों की इमारतों, सरोवरों, हंसलियों की सेवा करने लग पड़े।

श्रीमान् संत हरी सिंह जी कहारपुर वालों ने तख्त केशगढ़ साहिब (श्री आनंदपुर) की शानदार इमारत बनवाई और अन्य गुरुस्थानों का नव-निर्माण भी किया।

श्रीमान् संत जैमल सिंह जी भूरी वाले (तपोबन अमृतसर) वालों ने अनेक गुरुद्वारों की सेवा की है। दर्शनीय इमारतें और सरोवर बनवाए। आप श्री हरिमंदिर साहिब श्री अमृतसर की परिक्रमा में हर समय झाड़ू की अथक सेवा करते थे। जब परिक्रमा चौड़ी करने का विचार बना तब यह सेवा दो महापुरुषों के द्वारा करवाई गई। संत गुरुमुख सिंह जी जिन्होंने घंटाघर की परिक्रमा तैयार करवाई है। दूसरे संत जैमल सिंह जी जिन्होंने बाबा दीपसिंह जी के शहीद गंज वाला भाग तैयार करवाया है। श्री गुरु रामदास जी के पावन धाम की दर्शनीय परिक्रमा बनाकर आप जी भी अमर हो गए।

आप जी के उत्तराधिकारी श्रीमान् महंत गुरदयाल सिंह जी ने आप जी द्वारा आरंभ की हुई सेवा को उसी प्रकार जारी रखा। अनेक स्थानों की सेवा की। सप्तसरोवर हरिद्वार में 'नानकपुरा' आश्रम बनाया। गुरुद्वारा तीसरी पातशाही डेरा बाबा दरगाहा सिंह कनखल के साथ गंगा जी पर फर्श लगाकर सीढ़ियाँ बनवाई जिससे गुरुद्वारा साहिब और गंगा जी की प्राकृतिक सुंदरता में चार चाँद लग गए। गुरुद्वारा साहिब की इमारत भी गंगा जी की बाढ़ से सुरक्षित हो गई। आप जी की इस सेवा को आप के शिष्य संत कश्मीर सिंह जी, संत निर्मल सिंह जी, संत बचन सिंह जी उसी प्रकार चला रहे हैं।

श्रीमान् संत करतार सिंह जी ठठ्ठे टिब्बे वालों ने श्री हरिमंदिर साहिब अमृतसर की छत पर सोना लगाने की सेवा करवाई। पटना साहिब और गोइंदवाल आदि अनेक स्थानों की सेवा करवाई।

श्री महंत पंडित बलबीर सिंह जी शास्त्री ने गुरुद्वारा बाललीला बड़ी संगत की भव्य-इमारत बनवाई जो पटना साहिब में खालसा पंथ के गौरव को प्रकट कर रही है।

श्रीमान् महंत दीदार सिंह जी ने इलाहाबाद में गुरुद्वारा नौवीं पातशाही की दर्शनीय बिल्डिंग का निर्माण किया है। श्रीमान् महंत देवा सिंह जी निर्मल बाग हरिद्वार वालों ने अमृतसर श्री हरिमंदिर साहिब जी में ऊपर वाली छत के पायों (जंगले जिनमें बैठकर प्रेमी संगतें कीर्तन का आनंद प्राप्त करती हैं) में सोना लगवाने की उल्लेखनीय सेवा की है। आप जी ने श्री अकाल तख्त की पहली इमारत में (जो सन् 1984 ई० के आक्रमण के समय नष्ट हो गई) कोठा साहिब और आगे बरामदे में भी सोने की मनोहर चित्रकारी की थी। महंत निरंजन सिंह जी ज्ञानी निर्मल अखाड़ा महंत मूल सिंह, संत एवीन्यू जी. टी. रोड, अमृतसर वालों ने इलाहबाद पीली कोठी, त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) और उज्जैन में सुंदर गुरु स्थान बनवाए हैं।

इस प्रकार निर्मल भेष के महापुरुष गुरुघर की कार-सेवा करके गुरु की खुशियाँ प्राप्त कर रहे हैं।

❑

11 तेग की धनी

शास्त्र विद्या में तो निर्मले महापुरुष पूर्ण हैं ही परंतु शस्त्र विद्या में भी कम नहीं हैं। आवश्यकतानुसार शास्त्र और शस्त्र का प्रयोग करते रहे हैं। इस प्रकार धर्म और देश की सेवा करने में तत्पर रहे हैं। शब्द भेदी बाण मारने वाले केवल यही महापुरुष हुए हैं। इस विद्या में बाबा दीप सिंह जी शहीद और बाबा दरगाहा सिंह जी का नाम सब से ऊपर है। बाबा दरगाहा सिंह जी कलगीधर पिता के हजूरी सिक्ख थे। सद्गुरु जी के दरबार में आप जी ने शास्त्र और शस्त्र विद्या प्राप्त की थी। श्री हजूर साहिब (नांदेड़) तक सद्गुरु जी के हमसफर रहे। यहाँ पर ही सद्गुरु जी ने आज्ञा दी कि आप हरिद्वार जाकर श्री गुरु अमरदास जी का गुरुद्वारा प्रकट करो। आज्ञानुसार सन् 1710 ई० में दशम सद्गुरु जी से दो वर्ष बाद कनखल आ रहे थे।

आपजी के साथ काफी विरक्त संत थे जिनके लिए छप्पर बनवाए गए और बाबा जी गंगा जी के किनारे पीपल के वृक्ष के नीचे रहते थे। एक बार नजीमाबाद के रुहेलों ने ज्वालापुर के नवाब राय अहमद (राजपूत) पर गंगा जी की दूसरी तरफ से हमला कर दिया। आक्रमण सुनकर नवाब घबरा गया और बाबा दरगाहा सिंह के चरणों में सहायता के लिए विनती की। बाबा जी विनती मानकर दृढ़ता से मोर्चे पर डट गए। शब्द भेदी बाण चलाने में आप प्रवीण थे। गंगा पार से आगे बढ़ते हुए रुहेले बाबा जी ने अपने तीरों से पीछे लौटा दिए। बाबा जी की बहादुरी का पंचपुरी में सिक्का जम गया। नवाब राय अहमद बाबा जी का भक्त बन गया। अनेक प्रकार के पदार्थ तथा उपहार लेकर बाबा जी के चरणों में नतमस्तक हुआ। श्री गुरु अमरदास जी के गुरुद्वारे के लिए चारों ओर की जमीन का पट्टा लिखकर बाबा जी को भेंट किया जो कि बाद में 'बाड़ा बाबा दरगाहा सिंह' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रकार संत अघड़ सिंह जी कुबेरीए, ठाकुर रोचा सिंह जी, श्री संत मेला सिंह जी, संत बहादुर सिंह जी, संत हकीकत सिंह जी नंगाली साहिब (पुंछ), संत बुल्ला सिंह खडूर

मैदान में डट गए। धर्म एवं देश की आजादी के लिए अपना आप कुर्बान कर दिया। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ प्रसिद्ध हैं।

एक बार काशी (वाराणसी) में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जुलूस निकाला गया जिसकी अध्यक्षता निर्मल भेष के संतों ने की। उस समय भेष के संत नरेंद्र सिंह जी (शिष्य श्रीमान् महंत गणेशा सिंह जी डेरा अंतर्यामियां, अमृतसर) चौक गदौलीयां काशी में सरदार के विरुद्ध व्याख्यान देते हुए पुलिस की गोली से शहीद हो गए।

ब्रह्मकुटी (काशी) के महंत पंडित बसंत सिंह जी महान देशभक्त थे। ब्रह्मकुटी देश भक्तों की गतिविधियों का विशेष केंद्र थी।

श्री जै प्रकाश नारायण ने ब्रह्मकुटी में काफी समय अज्ञातवास बिताया था। अंग्रेज सरकार के विरुद्ध जो काशी के इलाके में साहित्य प्रकाशित होता था, वह ब्रह्मकुटी में ही छपता था।

महंत साधु सिंह जी कनखल वाले कांग्रेस आंदोलन में 9 महीने जेल में रहे थे। सम्वत् 1975 विक्रमी में हरिद्वार के नजदीक गाँव कटारपुर में मुसलमानों ने गौ वध करने का ऐलान किया। गुरुद्वारा तीसरी पातशाही, डेरा बाबा दरगाहा सिंह जी के महंत हरनाम सिंह जी ने अपना धर्म जानकर गौ-रक्षा के लिए दृढ़ निश्चय कर लिया। नियत समय पर दोनों तरफ से जनसमूह एकत्रित हो गया। मुसलमान गौ वध के लिए दृढ़ थे। महंत हरनाम सिंह जी ने बहुत समझाया परंतु मुसलमान अपनी बात पर अड़े रहे अन्ततः लड़ाई हुई। गौएँ छुड़ा ली गई। महंत जी कत्ल केस में गिरफ्तार कर लिए गए। 4-5 साल मुकदमा चला। 8 अगस्त 1919 ई० को महंत जी को फाँसी की सजा सुनाई गई जो अपील करने पर उम्र कैद में बदली गई। 4 वर्ष लखनऊ एवं इलाहबाद की जेलों में सजा काटने पर 28 दिसंबर 1926 ई० में रिहा हुए।

इस प्रकार धर्म, सत्य, गौ एवं गरीब की रक्षा हेतु ये महापुरुष अपने प्राण तक भी कुर्बान करते आए हैं।

हम ऊपर विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं कि निर्मले संतों ने प्रत्येक लहर, प्रत्येक आंदोलन में योगदान दिया है।

पंथ के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहे हैं। अकाली लहर, गुरुद्वारा सुधार लहर में गिरफ्तारियाँ दीं, जायदादें जब्त करवाईं, जेलों की सजाएँ काटीं आदि अनेक प्रकार के

असहनीय कष्ट भी सहते रहे। निर्मले महापुरुषों के तप-त्याग, विद्वता, धर्म-प्रचार, पंथ प्रेम से प्रभावित होकर ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने निर्मल भेष के महापुरुष गुरुमत के महान विद्वान, कुर्बानी के पुंज, महंत मूल सिंह जी को आनरेरी हैड ग्रंथी की पदवी पर विभूषित किया, जो जीवन भर श्री हरिमंदिर साहिब में निःशुल्क सेवा करते रहे। महंत हाकम सिंह जी डेरा बाबा मिशरा सिंह जी अमृतसर वाले धर्म-प्रचार कमेटी के मैंबर रहे। अनेक संत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के मैंबर चुने जाते रहे। कालांतर में भी निर्मल भेष के महापुरुष गुरुमत, धर्म, नाम-बाणी और सिक्खी प्रचार की गुरु कलगीधर स्वामी द्वारा बख्शी हुई सेवा देश के कोने-कोने में प्रचार करके गुरु नानक देव जी के घर की खुशी ले रहे हैं। सद्गुरु जी की कृपा दृष्टि, सद्गुणों के कारण निर्मल पंथ का भविष्य उज्ज्वल है।

❑

12 निर्मल आश्रम ऋषिकेश का परोपकारी इतिहास

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा सजाए गए 'पाँच प्यारों' में से भाई धर्म सिंह जी से चली **निर्मल संत परंपरा** में एक महान तपस्वी सिद्ध पुरुष श्रीमान् संत ठाकुर दयाल सिंह जी (अमृतसर) हुए। इनके नाम से ही निर्मल पंथ में 'सम्प्रदाय ठाकुरां' प्रसिद्ध हुई। श्री ठाकुर जी के सेवकों में से एक महापुरुष संत धर्म सिंह जी 'समाधि वाले' थे जिनके परम शिष्य पूज्य संत बुड्ढा सिंह जी थे।

संत (महंत) बुड्ढा सिंह जीः निर्मल आश्रम ऋषिकेश के संस्थापक सन् 1901 ई०

जन्म स्थानः गाँव हल्लोवाल, जिला गुरदासपुर (पंजाब)

पिताः सरदार प्रताप सिंह जी

माताः श्रीमती शान्ति देवी जी

आप जी मधुरभाषी, अति कुशल प्रबंधक, शास्त्र ज्ञाता, उच्च कोटि के व्याख्याकार और प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी थे। गुरूवाणी, गुरू इतिहास, गुरूमत सिद्धांतों एवं अन्य सत्य-शास्त्रों का पठन-पाठन आरम्भ किया। **श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला, कनखल (हरिद्वार)** के **सेक्रेटरी** एवं अखाड़े की रमत प्रचार मण्डली के **प्रधान** रहे। ऋषिकेश में गंगा तट पर 'शीषम झाड़ी' तपस्वी एवं विरक्त साधु-संतों के लिए भोजन का प्रबंध किया। **श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी** पर श्रृद्धा रखने वाले सिंधी श्रृद्धालुओं का आना-जाना शुरु हो गया। सन् 1911 ई० में **'निर्मल बाग'** कनखल (हरिद्वार) स्थापित किया। यहाँ भी गुरूवाणी पाठ, कीर्तन, शास्त्र-अध्ययन, रिहायश और भोजन (लंगर) का प्रबंध किया। सन् 1923 ई० में **काशी (बनारस)** के नीची बाग में **'संगत ज्ञान गुफा'** नाम का एक धर्म स्थान स्थापित किया। सन् 1933 ई० में **निर्मल आश्रम एस्टेट** मसूरी की स्थापना की। ईश्वरीय हुक्म अनुसार आप जी आश्विन वदी 12 संवत् विक्रमी 1994 (सन् 1937 ई०) को **निर्मल बाग कनखल (हरिद्वार)** में वैकुण्ठ गमन कर गए। निर्मल संत समाज ने श्री संत आत्मा सिंह जी को 'महंत' पदवी पर सुशोभित किया। पूज्य श्रीमान् 108 महंत बुड्ढा सिंह जी महाराज के

अनेक शिष्य संत रूप में थे जिनमें महंत आत्मा सिंह जी, संत जैमल सिंह जी 'अवधूत', संत ज्ञानी बलवंत सिंह जी, संत देवा सिंह जी, संत अर्जुन सिंह जी 'भिक्षु' एवं श्रीमान् संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी का नाम विशेषकर वर्णनीय है।

महंत आत्मा सिंह जी

जन्म स्थानः गाँव-पत्तो हीरा सिंह, जिला मोगा (पंजाब)

बचपन में ही श्रीमान् महंत बुड्ढा सिंह जी की शरण में आए।

आप जी ने आश्रम की सभी प्रकार की सेवाओं को अति मेहनत से निभाया। आप जी एक प्रेम स्वरूप, उदार चित्त एवं दयालु स्वभाव के संत थे। एक बार 'निर्मल विरक्त कुटीया' कनखल में रहने वाले विरक्त संतों का जब लंगर-भण्डार का राशन खत्म हो गया तो आप जी ने 6 महीने का राशन भिजवा दिया था। अपने पूज्य गुरुदेव श्रीमान् महंत बुड्ढा सिंह जी महाराज की पवित्र याद में स्वर्ण-चाँदी पत्र से निर्मित एक सुन्दर पालकी **श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, कनखल** को श्रद्धा सहित भेंट की। आप जी ने आश्रम के समस्त कार्य अपने अंतिम समय तक बहुत ही कुशलतापूर्वक निभाए। आपके सेवाकाल (सन् 1937 से 1973 ई०) में आश्रम की अति प्रगति हुई। आप जी ने पूज्य संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी की आज्ञानुसार अपने प्रिय सेवक संत नारायण सिंह जी को हर प्रकार से योग्य जानकर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। अंततः श्रावण सुदी 11 संवत् विक्रमी 2030 (9 अगस्त, सन् 1973 ई०) में पंच भौतिक शरीर त्याग कर ब्रह्मलीन हो गए।

महंत नारायण सिंह जी :

जन्म स्थानः जिला होशियारपुर (पंजाब)

संत नारायण सिंह जी सन् 1922 ई० में निर्मल आश्रम में आए थे। आप जी गुरूमत विद्या अध्ययन, नाम सिमरन, सत्संग और गुरु-सेवा में रत रहते थे। आप जी परम पूज्य संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज को अपने गुरुदेव श्रीमान् महंत आत्मा सिंह जी के समान ही मानते थे और आश्रम के सभी कार्य उनकी आज्ञानुसार ही करते थे। आप जी के सेवाकाल (1974-1982 ई०) में आश्रम ने हर प्रकार से प्रगति की। आप जी कोमल हृदय, मधुरभाषी, सहनशील एवं शाँत स्वभाव के संत थे। गुरूबाणी एवं अन्य धर्मशास्त्रों के

ज्ञाता होने के साथ-साथ आयुर्वैदिक विद्या में भी कुशल थे। सिंधी प्रेमी आप जी की कथा शैली एवं नम्र स्वभाव से बहुत ही प्रभावित थे। आप जी पूज्य संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी को निवेदन करते रहते थे आगे आश्रम का संचालन करने हेतु अपने सेवकों से किसी भी योग्य शिष्य को आज्ञा कर दीजिए। कुछ समय पश्चात् 'विरक्त' महाराज जी ने अपने परम सेवक श्री राम सिंह जी को मई 1981 ई० में निर्मल आश्रम का उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। प्रभु हुक्म अनुसार आप जी ने दिनांक 25 अक्तूबर, 1982 ई० को अपना शरीर त्याग दिया। 10 नवम्बर, सन् 1982 ई० को सत्रहवीं के दिन समूह निर्मल संत समाज ने 'विरक्त' जी की सरप्रस्ती में निर्मल सम्प्रदाय की मर्यादा अनुसार श्रीमान् संत राम सिंह जी को महंती की पगड़ी की रस्म अदा की।

संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज :

जन्म स्थानः गाँव-सीहां दौद, जिला लुधियाना, पंजाब

पिताः सरदार मस्तान सिंह जी

माताः श्रीमती ईशर कौर जी

बचपन में गुरूबाणी की शिक्षा उदासीन संतों से प्राप्त की। युवावस्था में फौज की नौकरी की एवं सन् 1914 ई० के प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया। गुरू कृपा से आप जी महान त्यागी, उच्च कोटि के विद्वान, आत्म निष्ठावान, महान तपस्वी, सरल स्वभाव एवं सादगी पूर्ण जीवन वाले शिरोमणि संत थे। आप जी निर्मल पंथ की विशाल उपसम्प्रदाय 'सम्प्रदाय ठाकुरां' में एक विलक्षण व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध हुए। संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज एक ऐसे संत थे जो परम तत्व का अनुभव करके उस पारब्रह्म परमेश्वर में लिवलीन होकर जीवन मुक्त अवस्था में आनन्द मगन रहते थे। सदैव ही शास्त्र अध्ययन, पठन-पाठन, नाम सिमरन साधना, उपासना, गरीबों की निष्काम सेवा में आनंदित रहते थे। साध संगत को भी ऐसे ही शुभकर्मों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा करते थे। युद्ध विराम होते ही नौकरी से त्याग पत्र देकर कुछ साल गाँव में खेती-बाड़ी की। सन् 1927 ई० में संसार से उपराम होकर शुभ संस्कारों के फलस्वरूप हरिद्वार पहुँच गए। यहाँ निर्मल बाग, कनखल (हरिद्वार) के महंत परम पूज्य संत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज को तन-मन-धन अर्पित कर दिया। गुरू आज्ञानुसार संस्कृत और वेद-विद्या के पठन-पाठन हेतु काशी चले गए। वहाँ आप जी ने गुरूबाणी के साथ-साथ अन्य सनातन

शास्त्रों का अध्ययन और ब्रह्मविद्या प्राप्त की। फलस्वरूप आप जी को मनुष्य जीवन के वास्तविक मनोरथ 'परम पद' की प्राप्ति हुई। प्रकाण्ड विद्वान और ब्रह्मविद्या के ज्ञाता होकर वापिस 'हरिद्वार' पहुँच गए। कुछ वर्ष यहाँ रहकर आप जी ने कठिन तपस्या, साधना की। आपके जीवन का असली मनोरथ संसार के भूले-भटके अज्ञानी जीवों का मार्गदर्शन करना था। आप जी के दैवी गुणों से प्रेरित होकर अनेक प्राणियों के अज्ञानमयी जीवन में ज्ञान का प्रकाश हुआ। तत्पश्चात् भारतवर्ष के मुख्य तीर्थों का भ्रमण किया और संपर्क में आए अनेक जिज्ञासुओं को परमार्थ का ज्ञान प्रदान किया। विरक्तीय ठाठ (मस्ती) में भ्रमण करते हुए आप ने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, यू० पी० और बिहार आदि प्रदेशों के प्रेमी भक्तों को गुरूबाणी-कथा द्वारा गुरू घर के अनुयायी बनाया। परमेश्वर के हुक्म अनुसार (आषाढ़ शुक्ल 13 संवत् विक्रमी 2040) मुताबिक 22 जुलाई, 1983 ई० शुक्रवार को सायं 7 बजे के करीब निर्मल कुटिया, गोराया (पंजाब) में आप जी ने पांचभौतिक शरीर त्याग दिया।

महंत राम सिंह जी :

आप जी परम पूज्य ब्रह्मज्ञानी संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज की कृपा के विशेष पात्र हैं। पूज्य महंत नारायण सिंह जी महाराज के नादी वंशज उत्तराधिकारी, निर्मल आश्रम के वर्तमान गद्दी-नशीन पूज्य श्रीमान् 108 महंत बाबा राम सिंह जी महाराज का जन्म 17 अक्तूबर सन् 1950 ई० को श्री अरुढ़ चंद उप्पल एवं माता श्रीमती विमला देवी जी के गृह में हुआ। पूर्वले कर्मों एवं भक्ति के संस्कारों के फलस्वरूप बचपन से ही संत-सेवा में रुचि रखते थे। इस प्रकार पूर्ण संतों के दर्शन, सत्संग और सेवा के साथ-साथ संसारी विद्या संपूर्ण की।

इस तरह निष्काम सेवा व संतों का संग करते-करते आप जी का मन संसार से उपराम हो गया। ज्यादातर समय निर्मल कुटिया करनाल में लंगर-सेवा, सफाई व गुरू महाराज जी की आज्ञानुसार सत्संग, गुरूबाणी पाठ करने में ही मगन रहते थे। गुरु-हुक्मानुसार कुछ समय पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा बरनाला (पंजाब) में नौकरी की। अंततः मई 1981 में एक सौभाग्यशाली समय आया जब आप जी बैंक से अवकाश लेकर पूज्य गुरुदेव जी के दर्शनों के लिए निर्मल बाग, कनखल (हरिद्वार) में आए हुए थे, तब आप जी को संसार से उपराम रहते देखकर और निष्काम सेवा से प्रसन्न होकर 'विरक्त' महाराज जी ने आप जी को निर्मल भेष देकर संत सजा दिया और महंत नारायण सिंह जी

की आज्ञा में रहकर निर्मल आश्रम में हर प्रकार की सेवा संभाल करने की आज्ञा दी।

परम पूज्य श्रीमान् 108 महंत बाबा राम सिंह जी महाराज निःसंदेह निर्मल अंतःकरण के मालिक हैं। आप जी के चेहरे का नूर, कमल नयनों की चमक, आप जी की रुहानी शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप जी सदैव आत्मानन्द, गुरु महिमा और प्रभु की आज्ञा में लीन रहते हैं। आप जी के निर्मल हृदय में सत्य का ज्ञान प्रचण्ड है। आप जी गुरूबाणी के माध्यम से परोपकारी सेवाओं की प्रेरणा एवं सत्य के ज्ञान को दुनियाभर में फैलाने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।

संत बाबा जोध सिंह जी :

जन्म स्थानः गाँव-सीहां दौद, जिला लुधियाना, पंजाब

पिताः सरदार लक्ष्मण सिंह जी

माताः श्रीमती ज्ञान कौर जी

जन्म तिथिः 14 अगस्त, सन् 1948 ई०

सांसारिक रिश्ते से आप **संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज** के भतीजे हैं। आप जी एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी हैं। परमार्थिक लगन के संस्कार अधिकांशतः पूर्व जन्मों के फलस्वरूप ही हुआ करते हैं, परंतु आप जी को 'विरक्त' महाराज जी की पवित्र कुल में पैदा होने से यह संस्कार विरासत में भी मिले हैं। माता जी का जीवन धार्मिक विचारों वाला और संत-सेवी होने के कारण बचपन में ही आप जी के शुभ संस्कार रूपी बीज अंकुरित होने आरम्भ हो गए थे। नाम दान की बख्शीश श्रीमान् संत गोपाल सिंह जी 'विरक्त' से प्राप्त हुई। सांसारिक विद्या प्राप्त करने के साथ-साथ गुरु कृपा द्वारा परमार्थ और गुरूबाणी विद्या का गुहज ज्ञान प्राप्त किया। कुछ समय आप जी ने पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा गुजरांवाला टाऊन (दिल्ली) में नौकरी की। परंतु संसारी नौकरी करना तो आपके जीवन का लक्ष्य नहीं था। पूज्य संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज ने आपका संत सेवी स्वभाव, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रति अनन्य श्रद्धा और परमार्थिक लगन को देखकर 3 अप्रैल सन् 1983 ई० को संत पद प्रदान करके संसारी बंधनों से मुक्त कर दिया। अनेक आशीर्वाद देकर महंत बाबा राम सिंह महाराज जी के साथ सेवा करने हेतु निर्मल आश्रम ऋषिकेश जाने की आज्ञा दी।

पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज प्रायः मानव-कल्याण हेतु गुरूमत प्रचार-प्रसार करने के लिए देश-विदेश की संगतों में विचरण करते हैं। उनकी अगुवाई में समय के साथ-साथ बढ़ रही जिम्मेदारियों को आप जी गुरू कृपा द्वारा बड़ी सूझ-बूझ और दूर-दृष्टि से निभा रहे हैं। निर्मल आश्रम की सभी सेवा-संस्थाओं का हर समय, हर प्रकार से मार्गदर्शन, देख-रेख और प्रबन्ध करते हैं। इसके अलावा इमारतों का नवीनीकरण, आश्रम के समागमों तथा अन्य गतिविधियों का संचालन, विरासत की संभाल और निर्मल सम्प्रदाय के ऐतिहासिक साहित्य एवं निर्मल आश्रम के पुरातन ग्रंथों का पुनः प्रकाशन, नए साहित्य की रचना आदि साहित्यिक सेवाएँ बड़ी लगन और मेहनत से कर रहे हैं। यही कारण है कि आज निर्मल आश्रम केवल एक धार्मिक संस्था ही नहीं अपितु उत्तराखंड का एक विशाल सामाजिक, शैक्षिक और चिकित्सक सेवा संस्थान बन चुका है।

❑

13 निर्मल आश्रम की सेवाएँ एवं सामाजिक संस्थाएँ

निर्मल आश्रम ऋषिकेश मनुष्य जीवन में परम शांति के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक पवित्र स्थान है। उपरोक्त उद्देश्य को सन्मुख रखकर ही आश्रम में सभी कार्य-व्यवहार व नित्य कर्म चलते हैं। नित्यप्रति परोक्ष-अपरोक्ष रूप में तत्व ज्ञान के विचारों का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। अमृत वेला में गुरूबाणी का पाठ, शब्द कीर्तन तथा श्री दरबार साहिब के नित्य कर्म की संपूर्णता होती है। उपरांत अन्नक्षेत्र (भोजन) लेने आए भिक्षु संतों का पुष्प-वर्षा द्वारा सम्मान करके सभी ज़रुरतमंदों को अन्नक्षेत्र (लंगर) वितरित किया जाता है। आजकल कोविड-19 के कारण हुए लॉकडाउन में दोनों वक्त लगभग 1800 प्राणी प्रतिदिन भोजन प्राप्त करते हैं। अन्नक्षेत्र में भोजन तथा मिष्ठान के साथ-साथ वस्त्र, कम्बल, जूते, साबुन, तेल आदि दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ भी समय-समय पर वितरित की जाती हैं। आश्रम से दूर देश-विदेश में बैठे जिज्ञासु प्राणियों को ऑनलाइन माध्यम से गुरूमुखी शिक्षण, गुरूवाणी पाठ उच्चारण की शिक्षा दी जाती है।

पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी के दर्शनार्थ तथा आश्रम द्वारा की जा रही निष्काम सेवाओं में योगदान हेतु देश-विदेश से श्रद्धालु निरंतर आते रहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में श्रीमान् बाबा राम सिंह जी ज्यादातर ऋषिकेश में ही रहते हैं। आपकी पवित्र रसना से गुरूवाणी कथा का जो प्रवाह चलता है, वह झरने की ठंडी फुहार की तरह सुखदायी होता है। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के पूर्व जन्म का तप स्थान श्री हेमकुंट साहिब और चार धामों की यात्रा करने हेतु अनेक श्रद्धालुओं से आश्रम भरा रहता है। श्रद्धालु जहाँ पूज्य महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, वहीं ऋषियों-मुनियों की इस नगरी के आध्यात्मिक, प्राकृतिक और सात्विक वातावरण का आनंद भी लेते हैं। निर्मल आश्रम द्वारा समय-समय पर विशाल धार्मिक समागमों का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर मेडिकल कैम्प, रक्त-दान कैम्प का आयोजन किया जाता है एवं आश्रम के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित साहित्य निःशुल्क दिया जाता है।

सामाजिक संस्थाएँ

1. निर्मल आश्रम अस्पताल-ऋषिकेश (स्थापना वर्षः सन् 1986 ई०)

जिसमें चिकित्सा संबंधी आधुनिक सुविधाओं युक्त सभी विभाग हैं एवं सभी बीमारियों के विशेषज्ञ डॉक्टर सेवारत हैं। यह अस्पताल 125 बिस्तरों का है एवं कुल 225 कर्मचारी कार्यरत हैं। यहाँ पर साधु-महात्माओं, निर्धनों, भिखारियों, जरूरतमंदों को चिकित्सीय परामर्श एवं औषधियाँ आदि निःशुल्क दी जाती हैं।

2. निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल-श्यामपुर, ऋषिकेश (स्थापना वर्षः सन् 1995 ई०)

यह विद्यालय सीनियर सेकेण्डरी, सहशिक्षा, दैनिक तथा आवासीय, अंग्रेजी माध्यम एवं सी.बी.एस.ई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है। जिसमें आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित छात्रावास एवं छात्रावासियों को शुद्ध वैष्णव भोजन, अपनी गौशाला का दूध एवं निर्मल बेकरी में स्वनिर्मित शुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए जाते हैं। इस विद्यालय में लगभग 2500 विद्यार्थी आधुनिक तकनीक द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। लगभग 100 योग्य शिक्षक एवं 150 सह-कर्मचारी कार्यरत हैं।

3. निर्मल आश्रम ज्ञान दान एकेडमी, खैरी-कलां, ऋषिकेश (स्थापना वर्षः सन् 2003 ई०)

यह विद्यालय सीनीयर सेकेंडरी, सहशिक्षा, दैनिक एवं सी.बी.एस.ई. दिल्ली से मान्यता प्राप्त है। इस विद्यालय में गरीबों, बेरोजगारों, बेसहारा एवं जरुरतमंद परिवारों के चयनित बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ खेल-कूद, संगीत, कला-कृति, योगा, पोशाक, पुस्तकें, लेखन सामग्री, स्कूल बैग, मध्यावकाश के समय दूध एवं अल्पाहार, स्कूल बसों द्वारा आवागमन आदि सभी प्रकार की सुविधाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

4. निर्मल आश्रम आई इंस्टीट्यूट, खैरी-कलां, ऋषिकेश (स्थापना वर्षः सन् 2005 ई०)

'निर्मल मिशन फॉर विज़न सोसाईटी' द्वारा संचालित आँखों के रोगों का यह अस्पताल (एन.ए.बी.एच. द्वारा प्रमाणित) हर प्रकार के रोगों की जाँच, इलाज, आप्रेशन, योग्य चिकित्सकों द्वारा आधुनिक तकनीकों से दृष्टिहीनों को दृष्टि प्रदान करने की सेवा कर रहा है। सुदूर ग्रामीण, मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में विभिन्न स्थानों पर आँखों की जाँच करने हेतु निःशुल्क कैम्प लगाए जाते हैं। आप्रेशन योग्य मरीजों को कैम्प स्थान से लाने, ठहराने, भोजन देने एवं सफल आप्रेशन उपरांत दवाइयाँ एवं चश्मा इत्यादि प्रदान करके वापस कैम्प

स्थान पर छोड़ने की सेवा भी संस्थान के वाहनों द्वारा निःशुल्क की जाती है। अस्पताल में नेत्रदान एवं नेत्र प्रत्यारोपण की सुविधा भी उपलब्ध है। यहाँ पर लगभग 185 कर्मचारी कार्यरत हैं।

5. हरि कृपा सिलाई केन्द्र, मायाकुण्ड, ऋषिकेश (स्थापना वर्षः सन् 2005 ई०)

निर्मल आश्रम, शिक्षा एवं चिकित्सा के साथ-साथ विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण हेतु भी प्रयासरत है। बेसहारा, गरीब, विधवा एवं जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई शिक्षा देने हेतु 'हरि कृपा सिलाई केन्द्र' की स्थापना की गई है। प्रत्येक वर्ष लगभग 30 महिलाओं को निःशुल्क प्रशिक्षित करके आश्रम द्वारा सभी महिलाओं को सर्टिफिकेट, सिलाई से संबंधित सामग्री एवं सिलाई मशीन प्रदान की जाती है।

6. गुरू नानक निर्मल संगीत एकेडमी तथा गुरवाणी शिक्षा केन्द्र, खैरी-कलां, ऋषिकेश

(स्थापना वर्षः सन् 2020 ई०)

दशम पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के द्वारा साजे निर्मले संतों को गुरूमुखी, गुरू इतिहास तथा गुरूवाणी प्रचार-प्रसार की सेवा गुरू साहिब जी के द्वारा ही सौंपी गई है। इसी उद्देश्य अनुसार निर्मल आश्रम ज्ञान दान एकेडमी में रिहायशी स्टाफ, बच्चे तथा इच्छुक जिज्ञासुओं को गुरूमुखी, गुरूवाणी तथा शब्द कीर्तन, भजन, तन्ती साजों द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत सिखाकर मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करने के पथ पर अग्रसर किया जा रहा है। इस अकादमी में लगभग 8 कर्मचारी कार्यरत हैं एवं 30 शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

7. निर्मल आश्रम गुरूवाणी शिक्षा केन्द्र, ऋषिकेश (आरंभिक वर्षः सन् 2020 ई०)

निर्मल आश्रम के आध्यात्मिक मुखी श्रीमान् पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज की आज्ञानुसार संगत के लगभग 14 निष्काम सेवादार ऑनलाइन पद्धति के माध्यम से गुरूमुखी तथा गुरूवाणी पाठ शिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इस शिक्षा केन्द्र के द्वारा देश-विदेश में बैठे लगभग 195 प्रेमीजन गुरूवाणी तथा गुरूमत सिद्धांतों की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

निर्मल कुटिया करनाल (हरियाणा)

'श्रीमान् 108 संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज की तपस्थली'

इस स्थान पर श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के पाठ, नाम-सिमरन, जप-तप, सेवा-सत्संग,

कथा-कीर्तन, गुरूबाणी की संथ्या एवं अन्य सत्य शास्त्रों का पठन-पाठन, अर्थबोध एवं गुरू के लंगर की सेवा विशाल स्तर पर हो रही है। कुष्ठ रोगियों, अपाहिजों, विधवाओं, गरीबों आदि सब प्रकार के जरुरतमंदों को अन्न क्षेत्र और वस्त्र आदि प्रदान करने की सेवा भी निरंतर चलती है।

गौशाला में विदेशी नस्ल की गायों का सारा दूध लंगर-प्रसाद में लगा दिया जाता है। करनाल शहर एवं अनेक गाँवों से श्रद्धालु संगत का सभी प्रकार की सेवाओं में भाग लेने के लिए दिन-रातभर आना-जाना लगा रहता है। प्रेमी संगत द्वारा नित्यप्रति हजारों प्राणियों के लिए लंगर बनाना, श्री अखंड पाठ करने, गुरूबाणी शब्द कीर्तन-नितनेम, साफ-सफाई, जूठे बर्तन माँजने, जोड़ा घर की सेवा आदि सभी प्रकार की सेवाएँ निष्काम भाव से प्रेमपूर्वक हो रही है।

इस आश्रम में बैसाखी के दिन नानक दरबार का स्थापना दिवस, जुलाई के महीने में (आषाढ़ शुक्ल 14) को श्रीमान् 108 संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज की बरसी, बंदीछोड़ दिवस (दीपावली) और श्री गुरू नानक देव जी का प्रकाश पर्व एवं श्रीमान् संत भगत सिंह जी की बरसी कार्तिक पूर्णमासी को विशेष रूप में मनाए जाते हैं। सन् 1993 ई० में दीपावली के समय श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के 251 अखण्ड पाठ साहिब एक ही पंडाल में एक साथ किए गए थे। यह आलौकिक दृश्य भी एक यादगार और उल्लेखनीय है।

निर्मल कुटिया में जिस स्थान पर पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज के पवित्र शरीर का अंतिम संस्कार हुआ था, वहाँ पर एक अत्यंत सुंदर हॉल बनाया गया है। इस हॉल में श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के अखंड पाठ निरंतर चलते रहते हैं। इस पवित्र स्थान की सेवा श्रीमान् संत निरभिंदर सिंह जी (सरपंच जी) श्रीमान् 108 महंत बाबा राम सिंह जी की आज्ञा से निभा रहे हैं। संत जी ने निर्मल आश्रम, ऋषिकेश के सभी संतों के जीवन का वर्णन एवं संपूर्ण इतिहास को **'असचरज वस्तु'** नामक ग्रंथ पंजाबी में अति मेहनत और लगन से लिखा एवं निर्मल आश्रम की ओर से प्रकाशित किया गया। कुछ समय बाद इस ग्रंथ का हिंदी अनुवाद करवा कर प्रकाशित कर दिया गया जोकि हिंदी पढ़ने वाले सभी सत्संगी सज्जनों के लिए उपलब्ध है।

अन्य विशेष परोपकारी सेवाएँ:

1. निर्मल धाम, मॉडल टाउन-करनाल :

निर्मल धाम की विशाल इमारत के एक भाग में संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल है जो केवल लडकियों के लिए, सीनियर सैकेण्ड्री, हिंदी माध्यम 'हरियाणा बोर्ड-भिवानी' से मान्यता प्राप्त है। इस विद्यालय में लगभग 1000 गरीब घरों की लड़कियाँ निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

इस भवन के दूसरे भाग में **भगत लभ्भामल वृद्ध आश्रम** है जिसमें लगभग 150 वृद्ध स्त्रियों-पुरूषों को आश्रय मिला हुआ है। सभी सत्कारित वृद्धों को भोजन, रिहायश, बिस्तर, वस्त्र, दवाइयाँ, समाचार-पत्र, सुबह-शाम भजन-कीर्तन आदि सभी सुख सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।

2. माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन, निर्मल धाम-करनाल :

इस संस्था में लगभग 45 अनाथ बच्चियों को सुरक्षित छात्रावास, शिक्षा, लेखन सामग्री, पोशाक, शुद्ध भोजन, दूध, वस्त्र, चिकित्सीय सुविधा, दवाइयाँ, गुरूबाणी पाठ, शब्द-कीर्तन एवं खेल-कूद आदि सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

आश्रम द्वारा कुछ अपंग, बेसहारा लोगों को मासिक राशि सहायता भी दी जाती है।

3. संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, जरीफा फार्म-करनाल :

यह विद्यालय सी.बी.एस.ई. बोर्ड, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है जिसमें गरीब परिवारों के 950 बच्चों को 12वीं कक्षा तक की शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है। इस स्कूल की इमारत अति सुंदर है एवं खेल-कूद के लिए विशाल खेल मैदान है। बच्चों को घर से स्कूल तक आने-जाने के लिए स्कूल बसों का प्रबंध भी निःशुल्क किया गया है।

4. संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, सदर बाजार-करनाल :

यह विद्यालय हरियाणा बोर्ड-भिवानी से मान्यता प्राप्त है। जिसमें निर्धन परिवारों के लगभग 750 छात्र- छात्राओं को 8वीं कक्षा तक की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

5. संत निक्का सिंह प्राइवेट आई. टी. आई.-करनाल :

इस सैंटर में केवल गरीब लड़कियों को ही प्रवेश दिया जाता है। चयनित बच्चियों के लिए पोशाक, सिलाई-कढ़ाई एवं कम्प्यूटर आदि का प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जाता है।

सैमीनारों का आयोजन

परम पूज्य श्रीमान् 108 महंत बाबा राम सिंह जी की सरपरस्ती में निर्मल आश्रम ऋषिकेश ने अपनी सेवाओं द्वारा चारों ओर सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त की है।

संत जोध सिंह जी ने बताया कि जो भी विद्याप्रेमी, जिज्ञासु, प्रचारक, बुद्धिजीवी विद्वान निर्मल आश्रम आते थे, वह सभी निर्मल सम्प्रदाय के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए बार-बार उन्हें पूछते थे। यह जानकर संत जी को आश्चर्य होता था कि गुरू घर की इतनी प्राचीन और विख्यात निर्मल संप्रदाय का भी लोगों को ज्ञान नहीं ! संत जी एक अमूल्य ग्रंथ 'निर्मल संप्रदाय' (पंजाबी) का अध्ययन पहले ही कर चुके थे। तत्पश्चात गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के 'गुरू नानक देव अध्ययन विभाग' के मुखी प्रो. प्रीतम सिंह जी द्वारा प्रकाशित किये गये उस ग्रंथ की कुछ प्रतियाँ विश्वविद्यालय से मँगवा लीं। यह ग्रंथ 28, 29, 30 मार्च सन् 1976 ई० में आयोजित तीन दिवसीय सैमीनार के लेखों पर आधारित है। इस ग्रंथ में निर्मले संतों के तप-त्याग, वैराग, तपस्या, अमृत-प्रचार, गुरूमत-प्रचार, धर्म-दर्शन एवं गुरूमत-साहित्य को देन, गुरूधामों की सेवाओं को देखते हुए विद्दवानों ने जो लेख पढ़े, उन सभी लेखों को इस ग्रंथ में प्रकाशित किया गया था। कुछ समय बाद संत बाबा जोध सिंह जी ने विश्वविद्यालय में उपलब्ध सभी ग्रंथों को खरीदकर विद्वानों, प्रचारकों, कथाकारों, खोजार्थियों, डॉक्टरों, प्रोफेसरों एवं निर्मले संतों को बाँट दिया ताकि सभी को निर्मल संप्रदाय की सिख पंथ प्रति सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाए।

इन्हीं विचारों को मध्य नजर रखते हुए श्रीमान् संत बाबा जोध सिंह जी महाराज ने गहराई से विचार-विमर्श करके निर्मल सम्प्रदाय पर एक सैमीनार कराने का निश्चय किया। फलस्वरूप पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में पहला सैमीनार आयोजित किया गया, जिसमें सभी बुद्धिजीवी विद्वानों और निर्मल संप्रदाय के महापुरुषों ने भाग लिया। शामिल हुए सभी विद्वानों में खुलकर चर्चा हुई और निर्मल संप्रदाय के बारे जो भी भ्रांतियाँ थी, वह सब खत्म हुई। तत्पश्चात संत जोध सिंह जी के सहयोग और आगुवाई में इस प्रकार के सैमीनारों का आयोजन जगह-जगह होने लगे।

*** नानक नाम चड़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला ***

❑

ज्ञानी बलवंत सिंह कोठा-गुरू द्वारा लिखे ग्रंथों की सूची

1. अदुत्ती सेवक (जीवनी-जत्थेदार दयाल सिंह 'परवाना')
2. तख्त दमदमा साहिब
3. रूप दीप (पिंगल) सटीक
4. अगम अगाध पुरख (जीवन कथा-संत अतर सिंह जी 'मसतूआणा वाले')
5. एक पुरख अपार (संत अतर सिंह जी 'मसतूआणा' दा सिद्धांत, उपदेश, उपकार)
6. दमदमा गुरू की काशी (श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो दा पूर्ण इतिहास)
7. संत बाबा बलवंत सिंह जी 'धलेर वाले' (जीवनी)
8. पूज्य संत अतर सिंह जी 'मसतूआणा वाले' (हिंदी)
9. निर्मल पंथ बोध (निर्मल भेख दा इतिहास)
10. परम रूप पुनीत मूरत (जीवनी-महंत मनजीत सिंह जी-अमृतसर)
11. गुरू वंस खालसा पंथ (हिंदी)
12. विद्यासर दा विद्या सागर (जीवनी-भाई साहिब फुम्मन सिंह जी, अमरगढ़ वाले)
13. सुधासर के रतन (हिंदी)
14. श्री दमदमा गुरू काशी
15. कोठा गुरू दी गौरव गाथा
16. माता देसां दा बुर्ज (इतिहास)
17. डेरा बाबा दल सिंह
18. निर्मल पंथ दी गौरव गाथा
19. निर्मल भेख भास्कर
20. गुरू ग्रंथ साहिब तृतीय शताब्दी पूर्णता दिवस
21. सूरबीर बचन के बली
22. कृपान पाणी निरभै जोधा महाबीर बंदा सिंह

गुरूद्वारों का इतिहास : गुरूद्वारा दीना कांगड़, गुरूद्वारा तख्तूपुरा, गुरूद्वारा कौलसर, कोठा-गुरू, श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो, गुरूद्वारा गुरूसर नथाणा।

संपादित ग्रंथ : हसदा बादशाह (कविता), शान्त संगीत (कविता), वहिंदे नीर (कविता), पैंतीस अखरी (कविता), आत्मबोध (कविता अते वार्तक), अध्यात्म अनुभव विवेक (वेदांत), पंडित ईशर सिंह ग्रंथावली,

अप्रकाशित ग्रंथ : जपुजी सटीक, गुरद्रोही (कुमारल भट्ट बारे इतिहासक नाटक), महांकवी कालीदास (ऐतिहासिक नाटक), राजकुमार कुनाल (इतिहासक नाटक), जीवन कथा गुरू तेग बहादर जी, गुरमति अते वेदांत विच भिन्नता, परम पुनीत पुरख, कलाधारी पुरख, पुरषोतम भाषकार (श्री संत चतर सिंह चरित्रम संस्कृत), मानवंश (मान गोत दा इतिहास), संप्रदाय मसतुआणा

पत्रकारी : संपादक - 'पंजाबी परवाना' कोटकपूरा (मासिक)
उप संपादक - 'खालसा पार्लियामेंट गजट' पंचखण्ड (मासिक)
संपादक - 'सिद्धु बैराड़' बठिंडा (मासिक)
संपादक - 'निर्मल चिंतामणि' कोठा-गुरू (सप्ताहिक)